चतुर्थ अध्याय

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी साहित्य में विकलांग चरित्र

४.० प्रास्ताविक

४.१ चरित्र

४.२ विकलांग चरित्र

४.३ विकलांग चरित्र के भेद

४.३.१ शारीरिक विकलांग चरित्र

४.३.१.१ जन्म जात विकलांग चरित्र

१.३.१.१.१ हकलाहट

१.३.१.१.२ अंधत्त्व जन्य

१.३.१.१.३ गूंगापन

४.३.१.२ रोगजन्य विकलांग चरित्र

४.३.१.२.१ पक्षाघात

४.३.१.२.२ कुष्ठरोग

४.३.१.२.३ खसरे की बिमारी

४.३.१.२.४ गूंगापन

४.३.१.३ दुर्घटनाजन्य विकलांग चरित्र

४.३.१.३.१ हाथ

४.३.१.३.२ पैर

४.३.१.३.३ चेहरा

४.३.१.३.४ ऐंठन

४.३.१.४ वृद्धत्वजन्य विकलांग चरित्र

४.३.२ मानसिक विकलांग चरित्र

४.३.२.१ हीनता ग्रंथी

४.३.२.२ कुण्ठा ग्रस्त

४.३.२.३ काम अतृप्त

४.४ निष्कर्ष

४.० प्रास्ताविक :

इन्सान की पहचान उसका स्वभाव, रूचियाँ एवं आदतों से होती है । परिवेश और सर्जन के माध्यम से इन्सान को पूर्णत: समझा और जाना जा सकता है । वास्तविकता यह है कि मनुष्य की पहचान उसके बाहरी रूप और दिखावे से नहीं होती । सही पहचान तो व्यक्ति के भितर बैठे हुए व्यक्ति से होती हैं । साहित्य जगत में भी चरित्रों का व्यक्तित्त्व अथवा चरित्र जानने और समझने के लिए चरित्र के भीतर बैठे हुए व्यक्ति की पहचान कराना आवश्यक होता है । तब मनुष्य का चरित्र सब गुण-दोषों सहित पता चलता है । मनुष्य जाति का इतिहास जितना प्राचीन है, उतना ही प्राचीन साहित्य में आया हुआ चरित्र कहा जा सकता है । साहित्य की किसी भी विधा का बिना चरित्र के सर्जन करना असंभव है । साहित्य में अनेक चरित्रों का सर्जन साहित्यकार करते हैं । प्रमुख चरित्र, गौण चरित्र, सहायक चरित्र, स्त्री चरित्र, पुरूष चरित्र आदि । लेकिन इस अध्याय में युक्त चरित्रों से हटकर विकलांग चरित्रों का अध्ययन किया है । साहित्यकार ऐसे चरित्रों को केंद्र में रखकर कहानी, उपन्यास, कविताएँ, नाटक आदि विभिन्न विधाओं में अपनी लेखनी चलाता है । ऐसे चरित्रों का निर्माण कर पाठकों को संवेदना के नये क्षितिज तक पहुँचाता है । इस सामाजिक कर्तव्य से न केवल साहित्य को नया आयाम मिलता है, बल्कि एक प्रकार से सामाजिक जागरण की दिशा में सार्थक कदम उठाया जा सकता है । ऐसे चरित्रों की सृष्टि स्वातंत्र्योत्तर हिंदी साहित्य में साहित्यकारों ने की हैं ।

४.१ चरित्र :

पात्र से तात्पर्य है चरित्र । वैसे देखा जाए तो पात्र और चरित्र को एक ही माना जाता है। कथा साहित्य के तात्विक विवेचन के अंतर्गत पात्र को ही चरित्र मानकर विवेचन किया जाता है । इस तत्व को चरित्र अथवा पात्र की संज्ञा दी जाती हैं । परन्तु वस्तुस्थिति यह नहीं है । क्योंकि पात्र और चरित्र समान होते हुए भी अलग है । समाज में विचलन करनेवाले प्रत्येक प्राणी की अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं । उसका कोई विशिष्ट चरित्र या व्यक्तित्व होता हैं । जो एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को भिन्नता प्रदान करता हैं । कथा साहित्य मानवी जीवन की अभिव्यक्ति है और उसके पात्र जीवधारी प्रतिरुप हैं । अर्थात कथा साहित्य

में विभिन्न पात्रों में पृथकता इसी चरित्र के द्वारा जानी जाती है । चरित्र में गुण दोषों का लेखा जोखा होता है और उसका जीवन परिचय होता हैं । स्थिर तथा विकसनशील पात्रों को क्रमश: सरल या सपाट और गूढ़ भी कहा जा सकता हैं ।

कथा साहित्य में पात्र के गुण दोषों, उसके आचार विचार, व्यवहार का वर्णन, चरित्र का वर्णन, कथाकार शब्दों के माध्यम से करता हैं । कथाकार के द्वारा चरित्र को रुप देने की प्रणाली चरित्र चित्रण कहलाती हैं । इस तरह चरित्र और चरित्र चित्रण आपस में सम्बन्धित है। पात्र विहिन कथा साहित्य की कल्पना भी निरर्थक हैं । जब पात्र होंगे तो ही चरित्र चित्रण भी अवश्यमेव होगा । इतना आवश्य है कि अनेक उपन्यासों और कहानियों में चरित्र चित्रण सायास किया जाता हैं, किन्हीं में अनायास हो जाता हैं, किन्ही में प्रधान होता है और उपन्यासकार की प्रतिभा पर निर्भर करता है। सर्वमान्य है, कि चरित्र मानव से सम्बन्धित हैं, और यह मानव स्वयं ही जटिल पहेली है, दूसरे वह अपने को पूर्णत: नहीं समझ पाता, फिर चरित्र का जटिल होना स्वाभाविक ही हैं । दोनों की इस जटिलता को सुलझाने में दार्शनिक और आलोचक स्वयं उलझ कर रह गए हैं । इसलिए वेब्स्टर इन दोनों की जटिलता को सुलझाने के चक्कर में न पड़ कर चरित्र के सम्बन्ध में कहते है, ''मनुष्य जो कुछ है वही उसका चरित्र है ।''[१] कथा साहित्य में दो तरह के चरित्र दृष्टिगोचर होते है । एक वे चरित्र जिन पर आस-पास के वातावरण का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, आरम्भ से अन्त तक उनके चरित्र में कोई परिवर्तन नजर नहीं आता । वे आरम्भ से ही अपने आप में पूर्ण नजर आते हैं । ऐसे पात्र स्वयं नहीं बदलते केवल बदलता है उनके सम्बन्ध में पाठकों का ज्ञान । इस तरह के चरित्र स्थिर चरित्र कहलाते हैं । स्थिर चरित्रों के रुप में प्राय: कोई भाव या गुण ही मुख्य रुप से मुर्तिमान होता हैं । उसके चरित्र के रुप में उस भाव या गुण की ही धीरे-धीरे व्याख्या तथा खण्डन एवं मंडन होता है । दूसरे प्रकार के चरित्र विकसनशील कहलाते है । ये अपने परिपार्श्व तथा आसपास के वातावरण से प्रभावित होते हुए कथानक के साथ-साथ विकसित होते हैं । रणवीर रांग्राजी ने एक स्थान पर कहा है, ''चरित्र की अभिव्यक्ति करनेवाला मानव व्यवहार इसी अन्त:करण जन्य है। अन्त:करण को ही मूल चरित्र कहना असंगत न होगा । मानव में जो विकसनशीलता हैं वह भी अन्त:करण की विकसनशीलता का परिणाम हैं । यह

स्वयं भी विकसनशील हैं और विकास को विभिन्न दिशाएँ ग्रहण कर मनुष्य को व्यक्ति बनाता है, उसे व्यक्तित्व प्रदान करता हैं, उस में भिन्नत्व लाता है ।''[२]

हिंदी कथा साहित्य में दोनों प्रकार के चरित्र मिलते हैं । पर मानव मात्र की अनुभूतियों, भावनाओं, मानसिक परिवर्तनों तथा उसकी अन्त:प्रेरणाओं आदि के चित्रण के लिए संभावनाएँ विकसनशील चरित्र में अधिक रहती है। इस तरह के चरित्र जीवन के अधिक निकट और प्रभावोत्पादक होते है । चरित्र की जटिलता और उसकी व्याख्या संबंधी असमर्थता स्पष्ट ही है । सांख्यदर्शन, आचारशास्त्र आदि के समान मनोविज्ञान भी चरित्र के सम्बन्ध में कोई अन्तिम निर्णय नहीं कर पाया है और न ही कोई पूर्ण सर्व स्वीकृत परिभाषा ही दे पाया है । फिर भी विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने चरित्र की परिभाषा देने के प्रयास किये ही हैं । चरित्र की चर्चा करते हुए, स्वतन्त्र रुप से चरित्र पर भी कुछ ग्रन्थ लिखे गए हैं । इन सभी ग्रन्थों में चरित्र को प्राय: व्यक्तित्व की विशिष्टता प्रदान करनेवाले गुणावगुणों का समुह माना गया हैं। कुछ ग्रन्थों में व्यक्ति के समाज सम्मत तथा नैतिक आचरण को चरित्र कहा गया हैं । कुछ ग्रन्थों में बुध्दि भाव और क्रिया के संगठित रुप को चरित्र कहा गया हैं । डॉ.रोबक का कहना है कि, ''चरित्र जन्मजात मूल प्रवृत्यात्मक उत्तेजनाओं के निग्रह वाला एक सतत जागृत मनोविज्ञान, एक सुझाव हैं जो एक व्यवस्थापक सिध्दान्त के अनुसार चलता है ।''[३]

अत: कहा जा सकता हैं कि चरित्र तो वह तत्व है जो मानव का मानव से भिन्नत्व बताता हैं । शरीर के विभिन्न अवयव सभी मनुष्य में होते हैं, पर इनका संगठन और विकास का वैभिन्य ही चरित्र बनाता है । चरित्र का निर्माण और विकास परिवेश तथा वातावरण का परिणाम हैं । अर्थात चरित्र कई तत्वों के मिश्रण का परिणाम है ।

४.२ विकलांग चरित्र :

चरित्र एवं विकलांगता दोनों शब्द अत्यन्त भिन्न एवं जटिल और अपरिभाषेय हैं। यह उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है । अत: विकलांग चरित्र को विभिन्न प्रकार से स्पष्ट किया जा सकता है । 'विकलांग चरित्र' का तात्पर्य हिंदी कथा साहित्य के उन चरित्रों से है जिनके शरीर का कोई एक भाग कमजोर या अक्षम हो । अथवा जिनका व्यवहार, विचार किसी

मानसिक कुण्ठा या रोग, किसी तरह की शारीरिक अस्वस्थता अथवा विकलांगता, भूत प्रेत के प्रभाव आदि के कारण असंतुलित प्रतीत होता हैं । और उस असंतुलन के कारण वे उपन्यास में वर्णित परिस्थितियों और वातावरण के साथ सामंजस्य स्थापित करने में असफल रहते हैं।

जहाँ तक मैं समझती हूँ कि किसी चरित्र की पूर्णता अपूर्णता का निर्णय किसी बाहरी आग्रह से नहीं किया जाना चाहिए उसके भीतर की इच्छा शक्ति, निष्ठा, आत्मविश्वास और भीतरी परिपूर्णता से किया जाना चाहिए । शारीरिक या मानसिक कमजोरी के कारण कोई भी चरित्र अधूरा या विकलांग नहीं होता । क्योंकि गरीबी, अपमान, भूखमरी और बेबसी में भी विकलांग चरित्र नहीं हारते, पर नफरत की आग और शंकापूर्ण भय का धुआँ वे बर्दाश्त नहीं कर पाते । विकलांगों के संदर्भ में डॉ.स्नेह आनन्दजी ने कहा है, ''कोई शारीरिक दोष अथवा विकृति से ग्रसित होता है तो कोई मानसिक अथवा बौद्धिक मन्दता से बाधित होता है, कोई इन्द्रियजनित विकलांगता तो कोई संवेगात्मक रुप से अस्थिर चित्त होता है, कोई असंतुलित व्यक्तित्व का और कोई प्रतिभा सम्पन्न शारीरिक सौष्ठव युक्त होता हैं ।''[४]

वास्तविक रुप से देखा जाए तो विकलांगता प्रकृति एवं परिस्थिति प्रदत्त ऐसा अभिशाप है । विकलांगों की जिजीविषा एवं पुरुषार्थ को जागकर उसके अन्तर्निहित कौशल तथा अभिरुचियों का उद्‌घाटन करके और उन्हें सकारात्मक गति देकर समर्थ एवं उपलब्धिमूलक बनाया जा सकता है । परन्तु कई ऐसे उदाहरण है जहाँ विकलांगता वरदान भी बन जाती हैं ।

४.३ विकलांग चरित्र के भेद :

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों का अध्ययन करने के बाद कहा जा सकता हैं कि अनेक साहित्यकारों ने विकलांग चरित्रों को लक्ष्य कर अनेक कहानियाँ लिखी हैं । उन्होंने विभिन्न प्रकार की विकलांगता को व्यक्त किया है । इन कहानियों में प्रमुख रुप से शारीरिक और मानसिक विकलांग चरित्र पाये जाते हैं । परन्तु उनकी विकलांगता विभिन्न प्रकार की है । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों का सूक्ष्मता से अध्ययन करने के बाद जो विकलांग चरित्र पाने

को मिले है उनकी विकलांगता भी अनेक प्रकार से सामने आयी है । उस पर विस्तार से यहां स्पष्टीकरण दिया है । विकलांग चरित्र के भेद निम्न प्रकार से बताए जा सकते हैं ।

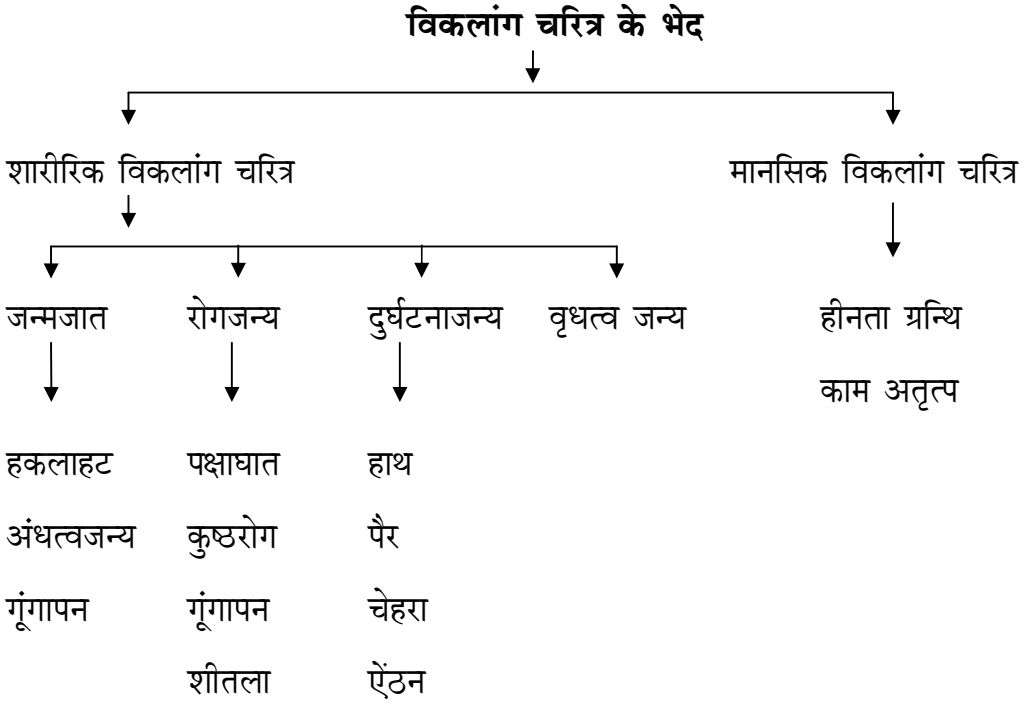

उपरोक्त वर्गीकरण से विकलांग चरित्रों की विभिन्न प्रकार की विकलांगता सामने आती हैं । इन भेदों के आधार पर विकलांग चरित्रों का अध्ययन आसान हो जाता हैं । अध्ययन-अध्यापन की सुलभता के लिए विकलांग चरित्रों के इन भेदों को आधार बनाया जा सकता हैं और अध्ययन सुलभ किया जा सकता हैं । इन चरित्रों को विस्तार से आगे स्पष्ट किया हैं ।

४.३.१ शारीरिक विकलांग चरित्र :

शरीर का कोई एक भाग कमजोर होना अर्थात शारीरिक विकलांगता कहीं जाती हैं । जैसे - अंधे, लूले, गूंगे अथवा हाथ, पैर, कान आदि का न होना अर्थात् शारीरिक विकलांगता । यह विकलांगता कभी-कभी स्थायी तो कभी-कभी अस्थायी होती है । अंधत्त्व, हाथ, पैर की कमजोरी, पोलियो आदि चरित्र स्थायी रूप से विकलांग होते हैं । किसी विशेष रोगग्रस्तता के कारण भी कभी-कभी अस्थायी स्वरूप की विकलांगता भुगतनी पड़ती हैं । हर

एक विकलांग चरित्र किसी न किसी तरह अपना सामाजिक एवं पारिवारिक सामंजस्य स्थापित कर लेता हैं । इस तरह के विकलांग चरित्रों द्वारा उनकी शारीरिक असामान्यता तो अवश्य प्रकट होती है । इस असामान्यता के कारण उनके मानस में एक अलग परिणाम होता है । कभी-कभी मानसिक उथल-पुथल या अन्तर्द्वंद्व भी उत्पन्न हो जाता है । कुछ चरित्रों के आचरण के माध्यम से उनकी मानसिक स्थिति का अनुमान अवश्य लगाया जा सकता हैं । पर उनमें मानसिक द्वन्द्व का अभाव रहता है। मनोवैज्ञानिकों की धारणा है कि, ''शारीरिक विकलांगता हर विकलांग व्यक्ति में असंतुलन और अभियोजन वैषम्य का कारण नहीं बनती।''[५] इस प्रकार अधिकांश विकलांग व्यक्ति अपनी विकलांगता जन्य हीन भावना की प्रतिपूर्ति किसी वांछित या अवांछित क्षेत्र में कर अपनी दृष्टि से संतुलित और अभियोजित हो जाता है । यहीं तथ्य हमें स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य के अंगिक अथवा शारीरिक विकलांग चरित्रों के माध्यम से अभिव्यक्त होता हुआ प्रतीत हुआ है । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य में शारीरिक और मानसिक दोनों स्तर पर विकलांग व्यक्ति की मानसिकता और उनकी हीन भावना भी पाने को मिलती है ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में जो विकलांग चरित्र प्रस्तुत हुए, उनमें से अधिकांश चरित्रों की विकलांगता जन्मजात, रोगजन्य, दुर्घटनाजन्य और वृध्दत्वजन्य हैं। जिसका विवेचन यहाँ किया है ।

४.३.१.१ जन्मजात विकलांगता चरित्र :

जन्मजात विकलांगता जन्मत: होती है । गर्भावस्था में इस विकलांगता का संक्रमण होने के कारण यह विकलांगता गले लग जाती हैं । गर्भावस्था में पेट पर लेटने से या माता में अल्पक्रियता की स्थिति होने से भी शिशु जन्मत: विकलांग हो सकता हैं। माता में संक्रमण विशेषत: गर्भावस्था के पहले तीन महिनों के दौरान होने पर, भ्रूण के मस्तिष्क पर अथवा भ्रूण के शरीर के किसी भाग को क्षति पहुँचने के कारण जन्मजात विकलांगता उत्पन्न होती है । यह विकलांगता कभी मानसिक तो कभी शारीरिक भी हो सकती हैं । माता को मधुमेह और उच्च रक्तचाप, गुर्दे की चिरकालिक समस्याएँ, कुपोषण, बढ़ते हुए भ्रूण को क्षती पहुँचा सकते हैं । माता में अल्पक्रियता की स्थिति होने से बच्चा जन्मत: बौना पैदा हो

सकता है। अत: कहा जा सकता है कि बच्चों की जन्मजात विकलांगता माता के स्वास्थ्य पर निर्भर हैं ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में अनेक ऐसे विकलांग चरित्र है, जो जन्मत: विकलांग है। 'टूटे हूए' कहानी की तन्त्री का पुत्र, 'अनिमंत्रित' का मनु, 'समापन' का बबलू आदि विकलांग चरित्रों की विकलांगता जन्मजात हैं ।

'टूटे हुए' - उषा प्रियंवदा :

हिंदी साहित्य जगत की जानी-मानी लेखिका उषा प्रियंवदा की कहानी 'टूटे हुए' में जन्मजात विकलांग बालक की त्रासदी को व्यक्त किया हैं । संतति की विकलांगता से पति पत्नी की अस्वस्थता को लेखिका ने इस कहानी में व्यक्त किया हैं । विकलांग पुत्र की माता सब सुखों के बावजूद भी अपने में टूटती रहती हैं । वह अपने पति से भी टूटती हैं । उसके जीवन में पुन: पुत्र पाने का क्षण भी नहीं आता । इस कहानी के सन्दर्भ में डॉ.वि.वारद जी ने कहा है, ''संतति की शारीरिक विकलांगता अथवा बौध्दिक कमी से पति पत्नी के बीच जो तनाव उत्पन्न होता है उससे इस कहानी का कथ्य जुड़ा हुआ है ।''[६] पारिवारिक त्रासदी के कारण कहानी की नायिका पति से दूर होकर किसी और से जुड़ जाती हैं । वह पारिवारिक जीवन में असन्तुष्ट और निराश हो जाती है । अत: यह कहानी टूटी हुई मानसिकता को प्रस्तुत करती है । इस कहानी में दोनों पति पत्नी टूटते हुए नजर आते हैं ।

'टूटे हुए' की तन्त्री का पुत्र :

प्रस्तुत कहानी की नायिका तन्त्री का पुत्र जन्मजात विकलांग चरित्र हैं । वह शारीरिक, मानसिक और बौध्दिक दृष्टि से विकलांग हैं । वह हमेशा-हमेशा के लिए अस्पताल में रहता है । तन्त्री अपने विकलांग पुत्र के सन्दर्भ में भास्कर से कहती है, ''भास्कर... इस अस्पताल में हमारा पुत्र है। वह नार्मल नहीं हैं । वह कभी भी नार्मल जीवन नहीं बिता सकेगा ।''[७] इस प्रकार विकलांगता के लिए या विकलांग स्थिति के लिए न पुरुष कारणीभूत होता हैं न स्त्री कारणीभूत होती हैं न प्रकृति या न अनुवंशिकता तन्त्री विकलांग पुत्र के कारण टूट जाती है।

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी का अनाम बालक जन्मजात विकलांग है । वह मानसिक, और शारीरिक रुप से विकलांग होने के कारण कभी भी नॉर्मल जीवन नहीं जी पाता । वह जन्मत: अविकसित बालक हैं ।

'अनिमंत्रित' - सिम्मी हर्षिता :

सिम्मी हर्षिता जी द्वारा लिखित कहानी 'अनिमंत्रित' मानसिक और शारीरिक दृष्टि से कमजोर और अक्षम बालक की कथा हैं । वह जन्मत: एक चिड़िया के बच्चे के जैसा दिखाई देता हैं । लेखिका ने एक स्थान पर कहा है, ''एक अनजान और निर्वेर नन्हा, पक्षी जो अण्डे की दिवार से बाहर निकलते ही भूल से अपने घोंसले से निकलकर जमीन पर आ गिरा हो और आँखें मुँदें फर्श पर घायल पड़ा हो सब कुछ गुलाबी-गुलाबी बन्द पखंडी-सा और ताँतिया गर्दन पर हुलमुल करता सिर ।''[८] प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने विकलांग बालक की जीवनगाथा को अभिव्यक्त किया हैं ।

'अनिमंत्रित' का मनु :

प्रस्तुत कहानी का मनु जन्मत: विकलांग बालक हैं । उसे अनेक अस्पतालों में दिखाया जाता है । परन्तु उसकी विकलांगता दुरुस्त नहीं हो पाती । उसकी बन्द मुट्ठी की टेढ़ी अँगुलियाँ भी सीधी नहीं हो पाती । उसके स्तनाग्रहण भी अक्षम है । वह जब भूख से कुनमुनाता हैं तब उसको चमच से डिब्बे का दूध गले के नीचे उतारने के लिए दिन-रात कोशिश करनी पड़ती है । लेखिका ने एक स्थान पर कहा है, ''सम्भवत: लड़का होने के कारण ही मनु अपने पंगु जीवन में भी घर के स्नेह और सेवा का अधिकारी बन गया था । पर मनु अपने जिस एक अंग विशेष के कारण लड़का था वहीं धीरे-धीरे जैसे उसका शत्रु भी बन गया ।''[९] उसकी बढ़ती हुई उम्र के साथ शारीरिक यौवन भी उलझन में डाल देनेवाला बन जाता है ।यह विकलांग मनु पूर्णत: दूसरों पर निर्भर रहता है ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी का मनु शारीरिक और मानसिक दृष्टि से विकलांग चरित्र हैं । वह विकलांगता के कारण अक्षम और दूसरों पर निर्भर है । विकलांगता के कारण घर में बंन्दिस्त हैं ।

'समापन' - नरेन्द्र नागदेव :

नरेन्द्र जी ने प्रस्तुत कहानी में जन्मत: विकलांग संतति की असहय वेदना से परेशान माँ-बाप की व्यथा को चित्रित किया है । काफी इलाज करने के बावजूद भी उसके स्वास्थ्य में कुछ फर्क नहीं पड़ता । इसलिए मनुष्य की ऊब का चित्रण इस कहानी में किया हैं । विकलांग बच्चे का पिता अपने बच्चे को तकलीफ भरी जिंदगी से मुक्ति दिलाना चाहता हैं । इसलिए डॉक्टर को बुलाने के लिए भी सहज होकर कहता हैं कि, ''कुछ नहीं सर वैसे ही आ गया । रविवार था । मैनें सोचा, यह रात आपके साथ बितायेंगे ?''[१०] इस प्रकार प्रस्तुत कहानी में विकलांग बालक की शारीरिक अवस्था तथा उसकी विकलांगता की वजह से परिवार की घुटन और पीड़ा को व्यक्त किया हैं।

'समापन' का बबलू

'समापन' कहानी का बबलू जन्मत: विकलांग है । वह पूर्णत: दूसरों पर निर्भर हैं। उम्र के साथ उसका शरीर भी बढ़ता जाता है, किन्तु दिमाग और शरीर की हलचल में किसी प्रकार का फर्क नहीं पड़ता । उसकी आँखों की पुतलियाँ वैसे ही अलग-अलग दिशाओं में देखती रहती है । गले में सांस लेते समय घरघराहट होती है । बैठने की कोशिश करने पर उसका सिर झुल-सा जाता हैं । जैसा लिटा दो, वैसे ही लेटा रहता है। वह स्वयं करवट तक नहीं बदल पाता । किसी चीज को देखकर कोई प्रतिक्रिया नहीं होती । किसी प्रकार की दवाँ उस पर असर नहीं करती । एक दिन तेज बुखार में बबलू का देहान्त होता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

'समापन' कहानी का विकलांग बबलू की विकलांगता जन्मजात हैं । वह शारीरिक और मानिसक दृष्टि से विकलांग चरित्र हैं । वह असामान्य चरित्र हैं । अत: पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर हैं ।

'हिंदुस्तानी इवान दानिसोविच की जिंदगी का एक दिन' - उदय प्रकाश :

प्रस्तुत कहानी में उदय प्रकाश जी ने निम्म मध्यवर्गीय परिवार का यथार्थ चित्रण किया हैं । आर्थिक समस्या के साथ ही विकलांगता की समस्या का सामना करनेवाली मानव जीवन की यह एक कथा हैं । विभिन्न समस्याओं में से गुजरता हुआ यह परिवार पाठकों को आश्चर्यान्वित किये बगैर नहीं रहता । अनेक पीड़ाओं को सहते-सहते आम व्यक्ति खुद का अस्तित्व खो जाता है, परिवार के लिए जी तोड़ मेहनत करनेवाले आम व्यक्ति की यह कहानी हैं । इस परिवार के सन्दर्भ में खुद लेखक ने कहा हैं, ''उसका परिवार यों था एक बीमार, बहुत बूढ़ी और चिड़चिड़ी गाय जैसी औरत । तीन लड़के, जिनमें से मँझला गूँगा था। उसके बायें हिस्से को लकवा मार गया था । सबसे छोटा हमेशा बीमार रहता था और उसको कोनिक डिसेंट्री थी । एक लड़की जो दो साल पहले जाड़े के दिनों में इसी कमरे में पैदा हुई थी... हमेशा चित लेटी रहती थी ।''[११] इस प्रकार अनेक समस्याओं का सामना करता हुआ यह परिवार कभी हार नहीं मानता ।

'हिंदुस्तानी इवान दानिसोविच की जिंदगी का एक दिन' का मँझला :

प्रस्तुत कहानी में तीन बच्चों का चरित्र प्रस्तुत किया हैं । उनमें से मँझला गूँगा है और उसके बायें हिस्से को लकवा मार गया हैं । वह इवान दानिसोविच का कंधा पकड़कर रेंगता है । एक विकलांग प्रशिक्षण गृह में उसका इलाज किया जाता हैं । उसे अपनी बात समझाने का प्रशिक्षण दिया जाता हैं । लकड़ी और बिजली का कुछ काम सिखाया जाता हैं । विकलांगता के बावजूद भी वह कुछ सिखने का प्रयास करता है और जिम्मेदारी भी निभाता हैं । संसार के बारें में सबकुछ जानता हैं । अगर कोई कुछ नई जानकारी देता हैं तो वह मन ही मन व्यंग्य से हँसता है । उसका पूरा शरीर पत्ते की तरह काँपता है । भूख लगने पर वह 'गिल-गिल' करता है । दिवार को पकड़कर खड़ा होने की कोशिश में धप्प से गिरता हैं । फिर भी विलक्षण हँसी हँसता हैं । उसका दाहिना हाथ और टाँग बुरी तरह से बेकार है ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी का मँझला जन्मजात गूँगा है। विकलांगता के बावजूद भी जिने की आकांक्षा है । वह परिवार में सबसे अधिक गंभीर और समझदार हैं । स्वयं की विकलांगता के बावजूद भी परिवार का खयाल रखनेवाला है ।

'हिंदुस्तानी इवान दानिसोविच की जिंदगी का एक दिन' की अनाम लड़की :

प्रस्तुत कहानी में दो साल की विकलांग लड़की का चित्रण है । वह जन्म से ही विकलांग है । जहाँ जन्मी थी उसी कमरे में हमेशा के लिए चित पड़ी रहती हैं । न तो उसके दाँत निकलते है और न ही घुटनों के बल रेंग पाती है । उसके हाथ पैर अत्यंत कमजोर और पतले हैं । वह अपना सिर और पेट भी उठा नहीं पाती । भूख लगने पर जोर-जोर से चिल्लाती हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी की अनाम लड़की जन्म से ही विकलांग हैं । वह शारीरिक और मानसिक दृष्टि से अविकसित हैं । काफी कमजोरी के बाद भी उठने का भरसक प्रयास करती हैं ।

१.३.१.१.१ वाचाघात / हकलाहट

वाचाघात प्रकार की विकलांगता शरीर की एक विशिष्ट स्थिति है । इस विकलांगता के कारण व्यक्ति सुव्यवस्थित ढंग से न बोल सकता हैं और न पढ़ सकता हैं । अर्थात वह तुतलाकर बोलता हैं । वाचाघात को ही हकलाहट भी कहते हैं । हकलाहाट के कारण जुबान की लय बिगड़ जाती है । जैसे अटक जाना, दोहराना, या ध्वनियों, अक्षरों अथवा शब्दों को सामान्य से ज्यादा लम्बा कर देना आदि बातें हकलाहट की स्थिति को इंगित करती हैं । कभी-कभी हकलाहट के साथ अनेक किस्म की चेष्टाएं भी देखने को मिलती हैं । वाचाघात से विकलांग ग्रस्त व्यक्ति बोलने में असमर्थता महसूस करता हैं । वाचाघात के सन्दर्भ में गीता अग्रवाल जी ने कहा है, ''वैज्ञानिक रुप में बोलने की शक्ति मस्तिष्क के किसी विशेष भाग पर आश्रित है जो कि किसी चोट वगैरह से चली जाती है । इसी स्थिति को वाचाघात (Aphasia) कहते है।''[१२] वाचाघात से पीड़ित व्यक्ति मन-ही-मन अनेक बातों की सोच

विचार कर किसी सीमा तक संकेतों द्वारा तथा मुद्राओं द्वारा भी व्यक्त करता हैं । वाचाघात से त्रस्त व्यक्ति अपने चेहरे के भाव भंगिमाओं के द्वारा बहुत कुछ कहना चाहता हैं ।

'ठेस' - फणीश्वरनाथ रेणु :

आंचलिक कहानीकार के रुप में पहचाने जाने वाले लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार फणीश्वरनाथ रेणु जी द्वारा लिखित 'ठेस' कहानी में ग्रामीण कारीगर का चित्रण किया हैं । उसकी पारिवारिक और आर्थिक स्थिति को व्यक्त किया हैं । मुँहजोर व्यक्ति की समस्या को शब्दबध्द किया हैं । ग्रामीण मानव के जीवन की उपेक्षित स्थिति और मन की संत्रास को लेखक ने इस कहानी के द्वारा स्पष्ट किया हैं ।

'ठेस' का सिरचन :

प्रस्तुत कहानी का सिरचन जिह्वा की कमजोरी से विकलांग चरित्र हैं । वह जाति का कारीगर है । उसका काम करने का ढंग अद्‌भुत है । वह एक एक मोथी और पटेर को हाथ में लेकर बड़े जमाने से उसकी कुच्ची बनाता हैं । कुच्चियों को रंगने से लेकर सुतली सुलझाने तक का काम वह अत्यंत सूक्ष्मता से करता हैं । वह हमेशा अपने काम में व्यस्त रहता हैं । वह जब काम में मगन रहता हैं तो उसकी जीभ जरा बाहर निकल आती हैं । होंठ पर अपने काम में मगन सिरचन को खाने-पीने की भी सुध नहीं रहती । उसे पान खाते देख सभी लोग अवाक से रहते हैं । सिरचन जब मानू को छोड़ने स्टेशन पर जाता हैं, हकलाते हुए कहता हैं, ''यह मेरी ओर से हैं । सब चीज हैं । शीतल पाटी, चिक और एक जोड़ी आसवी कुश की ।''[१३] इस विकलांग चरित्र के सन्दर्भ में डॉ.श्रवण कुमार मीना ने कहा है, ''सिरचन एक ग्रामीण कारीगर है, जो मुँहजोर, कमजोर नहीं, सिरचन मन का एकदम साफ हैं। वह तुतलाकर बोलता है, जिह्वा की कमी उसे विकलांगता की श्रेणी में खड़ा करती है।''[१४]

चारित्रिक विशेषताएँ :

सिरचन जन्मत: विकलांग है । लगन से मेहनत करनेवाला कारीगर है । वह दूसरों के प्रति स्नेह और आत्मियता रखता हैं । वह ग्रामीण कारीगर के रुप में प्रख्यात हैं ।

१.३.१.१.२ अंधत्वजन्य :

भारत में अंधत्वजन्य विकलांगता अत्याधिक रूप में है । 'आँखें है तो जहान हैं' इस प्रचलित कहावत के अनुसार आँखों के बगैर मानव का जीवन गहरे अन्धकार के समान हैं । आँखें शरीर का बहुत ही जरुरी हिस्सा हैं । आँखों की विकलांगता भी विभिन्न प्रकार से पाई जाती हैं । कुछ लोग पूरी तरह से अन्धें है तो कुछ लोगों की आँखों की विकलांगता आंशिक रुप की हैं । अन्धों की विभिन्नता को इसलिए अधिक महसूस किया जाता है कि वे देखें बगैर विभिन्न कार्य कैसे करेंगे । इतना ही नहीं तो नजर का थोड़ा सा धोका भी बड़ी से बड़ी दुर्घटना का कारण बन सकता है । इसलिए अंधत्व की विकलांगता लोगों को बहुत कमजोर बनाती हैं । परन्तु कुछ लोग ऐसे अंधत्व पर मात कर अपनी मंजिल को हासिल कर चुके हैं। दुर्भाग्य की बात यह है कि आज चिकित्सा पध्दति इतनी विकसित होने के बाद भी जन्मजात नेत्रहीनता के कारण अनेक लोग विकलांग हो जाते हैं । इस समस्या को सुलझाने के लिए ''भारत सरकारने हर जिले में जिला नेत्रहीनता नियंत्रण सोसाईटी बनाने का निर्देश दिया हैं । जिसका अध्यक्ष जिले का कलैक्टर होगा और जिले का नेत्र सर्जन सदस्य सचिव होगा । इसमें विभिन्न विभागों के प्रतिनिधी और स्वयंसेवी संस्थाओं के भी प्रतिनिधी होंगे । इस प्रकार सौ से अधिक सोसाईटियाँ, सोसाइटी कानून के तहत पंजीकृत हो चुकी है ।''[१५] इस प्रकार आँखों के बगैर कोई व्यक्ति अपना कार्य सफलतापूर्वक नहीं कर पाता । चोट लगने से या पोषक आहार के अभाव से भी नेत्रहीनता की स्थिति आती हैं । विनोद कुमार मिश्रजी का यह कथन बहुत ही फायदेमन्द है, ''पूरे देश में सौ से अधिक नेत्रबैंक हैं और इनका लाभ उठाकर आँखों की दृष्टि दुबारा प्राप्त की जा सकती हैं ।''[१६]

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में नेत्रविहीन चरित्र बहुत पाये जाते हैं । उनकी नेत्रहीनता जन्मजात और कहीं पर घटनाजन्य भी हैं । परन्तु अपनी विकलांगता पर मात कर वे सामान्य लोगों से भी अधिक सक्षम रुप से अपना जीवन-यापन करते हैं । इतना ही नहीं तो उनकी कर्तव्य दक्षता तारीफ-ए-काबील हैं । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में अंधत्व से विकलांग चरित्रों को यहा प्रस्तुत किया जा रहा हैं ।

'उससे हार नहीं मानी' का अखिलेश, 'गुमान का दंश' की अम्मा, 'अब और नही' का अनाम वृध्द, 'मामला घर का' का शिब्बु, 'राजू' का राजू, 'सूरदास' का सूरदास, 'शपथ' की शुभ्रा के पिता, 'मधुयामिनी' की दासी, 'कालू' का कालू, 'ललिता' की ललिता, 'दंगाई' का मौलवी जलालुद्दीन, 'अंधेरे का सैलाब' का सौरभ, 'फरिश्ते' का मटरुवा आदि ।

'कालू' - शिवानी :

प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने जन्मत: अन्धत्व के अभिशाप के बावजूद भी लोगों के दिल पर राज करनेवाले विकलांग व्यक्ति के चरित्र को प्रस्तुत किया हैं । उसकी विकलांगता उसे बाधा नहीं पहुँचाती । जो अपनी मीठी और मधुर आवाज से लोगों को मंत्रमुग्ध कर जीने की प्रेरणा प्रदान करता है । उसे विकलांग कैसे कहा जा सकता है । विधाता जब किसी व्यक्ति से कुछ छीन लेता हैं, तो उसे आवश्य ही कुछ अधिक या कुछ विशेष देना भी नहीं भूलता । समाज की दृष्टि से उपेक्षित लोगों को विधाता कभी कम नहीं समझता । इस कहानी में विकलांग मानव के अन्तर्मन के भावों और पावित्र्य को अभिव्यक्त किया हैं ।

'कालू' का कालू :

प्रस्तुत कहानी का प्रमुख नायक कालू जन्मत: विकलांग है । वह नेत्रहीन होते हुए भी भजन, किर्तन, बाउल, रामप्रसादी, झूमर और माँ के गीत इस प्रकार गाता है कि सुननेवाले लोग मंत्रमुग्ध हो जाते हैं । दुबला-पतला हँसमुख कालू अपने सुरीली कंठ से आश्रमवासियों को आत्मविभोर कर देता है -

''हमार हियार माँझे
लु किया छिले
देखते आमी पायनी तो माय
देखते आमी पायनी ।''[१७]

वह लयबध्द संगीत की मुख व्याख्या भी करता हैं । उसकी अलग अलग कथाएँ थी। वह अपने कंठस्वर का व्यक्तित्व एकदम अछूता रखता था । कभी-कभी तो छात्रों के पुरुष तार स्वरों के बीच किसी दक्ष कथाकार की सी 'ट्रिक एन्डिग' का आनन्द देता। वह अपने मीठे कंठ से लोगों को खुश करता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी का कालू जन्मजात विकलांग चरित्र हैं । उसके सम्पूर्ण जीवन में अलोक की एक किरण तक नहीं हैं । नाम के जैसा काला परन्तु हँसमुख हैं । अपने मधुर आवाज से लोगों को मंत्रमुग्ध करता हैं, परन्तु अकेलेपन के अहसास से दु:खी रहता हैं।

'राजू' - ममता कालिया :

प्रस्तुत कहानी में ममता कालिया ने विकलांग चरित्र के द्वारा समाज को संघर्ष करने की प्रेरणा दी है । एक विकलांग व्यक्ति जीवन के लिए काफी कुछ समस्याओं का सामना कर, अपनी विकलांगता पर मात कर जीवन का नया रास्ता ढूंढता रहता है और सफल हो जाता है । अत: विकलांगों की विभिन्न संवेदनाओं को इस कहानी में व्यक्त किया हैं । किसी शुभ कार्य के लिए विकलांगों को 'अपशकुनिया' कहा जाता हैं, तब उसकी तार तार हुई मानसिक अवस्था का चित्रण इस कहानी में देखने को मिलता है । डॉ.सानप श्याम ने कहा है, ''राजू नामक बालविज्ञान को प्रस्तुत करनेवाली इस कहानी में अंधश्रध्दा और अर्थाभाव के कारण बीमार राजू के प्रति माता की भाव विप्लव दशा को व्यक्त किया है ।''[१८]

'राजू' का राजू :

प्रस्तुत कहानी का राजू एक आँख से काना है । उसकी यह विकलांगता जन्मजात है। वह विकलांगता की वजह से अपनो से ही टूट जाता है । भारतीय रुढ़ी वादिता समाज में ऐसे काने व्यक्ति को अंधविश्वास के बलपर शुभ कार्यो में उपस्थिती दर्ज कराने के लिए मना किया जाता है । इस संदर्भ में एक बूढ़ी कहती हैं कि भग्गी, ये कजहा (काना) कपुत घर में छोड़ आती तो एक दिन में तेरा दूध न सूख जाता, विवाह के घर लाकर खड़ा कर दिया सामने । इतना ही नहीं तो राजू को एक कोठरी में कैद कर विवाह के सारे रस्मों-रिवाजों को निभाया जाता हैं । अपनी माँ के मुँह से 'अपशकुनिया' शब्द सुनकर उसका हृदय तार-तार हो जाता हैं । विकलांगों के प्रति समाजद्वारा और परिवारद्वारा किये गये दुर्व्यवहार को इस कहानी में अभिव्यक्त किया हैं । डॉ.जितेंद्र कुमार सिंह जी ने कहा है, ''विकलांगता के संदर्भ में कुछ लोगों की धारणा बहुत गलत और अंधविश्वासपूर्ण है ।''[१९]

चारित्रिक विशेषताएँ :

राजू जन्मत: एक कान से विकलांग चरित्र हैं । वह परिवार और समाज से उपेक्षित हैं। अपने ही सगे संबंधियों से टूटा हुआ हैं । माता-पिता के स्नेह से वंचित हैं।

'सूरदास' - भगवानदास तिवारी :

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखकने जाति भेद, सामाजिक समस्या और मानव जीवन के शाश्वत सत्य को उजागर किया हैं । विकलांग व्यक्ति की यह कहानी एक जीवन गाथा के रुप में चित्रित हैं । विकलांग मानव जीवन के कटु सत्य को अत्यंत मार्मिक रुप से लेखक ने इस कहानी में व्यक्त किया हैं । जीवन के प्रति मनुष्य की जीवटता के दर्शन इस कहानी के द्वारा होते हैं ।

'सूरदास' का सूरदास :

इस कहानी का सूरदास जन्मत: अंध है ।वह दोनों आँखो से अंध हैं । वह प्राय: प्रभु भजन में मगन रहता हैं । जैसे -

''प्रभु मोरे अवगुण चित्त न धरो ।
रामदरसी हैं नाम तिहारो, अपने पनहिं करो ।''[२०]

सुरदास जन्मत: विकलांग है परन्तु उसके पदों को सुनकर बच्चें, स्त्रियाँ भावविभोर हो जाते हैं, जैसे कोई दिव्य संगीत छेड़ रहा हो । भक्ति की अनन्यता, विकलता, प्रेम और आत्मक्रंदन से ओत-प्रोत उसकी मधुर वाणी को हर कोई सुनने को तरसता हैं । वह अपने पथ पर अभ्यासी और अविरत गतिशील रहनेवाला हैं परन्तु अंधत्व के कारण डगमगाता हैं । छोटे-छोटे बच्चे भी अत्यंत तल्लीनता से उसकी अंधी आँखों की ओर देखते हैं । सूरदास कृष्ण भक्त होने के कारण कृष्ण का माखन चुराना, मटकी फोड़ना, आदि को अत्यंत सुंदर शब्दों में व्यक्त किया हैं । यह काम खुली आँखोंवालों के लिए भी नामुमकिन हैं । इस विकलांग चरित्र के सन्दर्भ में लेखक ने एक स्थान पर कहा है, ''स्वर्णिन ऊषा का सौन्दर्य सन्ध्या की लालिमा, सूरज की सतरंगी किरणें, फेनोज्ज्वल चन्द्रिका, आकाश के तारों का प्रकाश और धरती के दीपों की जलन उसने कभी नहीं जानी । यश, वैभव और सभ्यता की चमक दमक तथा रुप का बाहय आकर्षण उसने कभी नहीं देखा । उसके जीवन में चारों ओर

घोर अंधकार छाया हुआ था, किन्तु उसके हृदय में भक्ति का अमरदीप जल रहा था, जिसके प्रकाश में उसे अपने अन्तर में समाविष्ट मानवता के पुनीत विचार चमकाते हुए दिखाई देते थे । ये वे विचार थे, जिनकी क्रान्ति के समक्ष मोतियों का पानी फिका पड़ जाता है ।''[२१] इस प्रकार विकलांग होते हुए भी सूरदास स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर हैं।

चारित्रिक विशेषताएँ :

सूरदास जन्मजात विकलांग चरित्र हैं । वह आत्मनिर्भर और स्वाभिमानी हैं । अंधत्व के बावजूद भी सतत गतिशील हैं । अनाथ बच्चे को संभालने की जिम्मेदारी विकलांग होते हुए भी स्वयं पर लेता है ।

१.३.१.१.३ गूंगापन :

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में अनेक चरित्र गूँगेपन के कारण विकलांगता का सामना कर रहे है । गूंगेपन को बोलने की विकृती कहना उचित नहीं होगा ताकि गूँगे से तात्पर्य है जो बोल न सके । गूंगापन अर्थात् बोलने की अक्षमता । परन्तु कुछ चरित्र ऐसे भी पाये जाते हैं कि छोटे बच्चों जैसे तुतलाकर बोलते हैं । इस प्रवृत्ती को बोलने की विकृती कहना गलत नहीं होगा । स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में कुछ साहित्यकारों ने ऐसे चरित्रों का सृजन किया है जो तुतलाकर बोलते है ।

मनुष्य के जीवन में किसी अंग का न होना या अपना कार्य करने के लिए अक्षम होना व्यक्ति के सामने अनेक समस्याओं को पैदा कर देता है- ''जीन लोगों की सुनने की शक्ति चली गई है या कम हो गई है उनके सामने भी विभिन्न समस्याएँ होती है।''[२२] इस प्रकार के अनेक चरित्रों को स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य के साहित्यकारों ने अत्यंत बखूबी से व्यक्त किया हैं । 'ठेस' का सिरचन, 'हिन्दुस्तानी इवान दानीसोविच की जिंदगी का एक दिन' का मँझला, 'गूँगी' की महुआ आदि चरित्र गूंगेपन के कारण विकलांग हैं ।

गूँगी - संतोष श्रीवास्तव :

प्रस्तुत कहानी में मध्यमवर्गीय परिवार की आर्थिक और पारिवारिक स्थिति को व्यक्त किया हैं । एक विकलांग स्त्री का चित्रण भी हैं । विकलांगता के बावजूद भी सेवा परायण विकलांग स्त्री चरित्र के अध्ययन के बाद ऐसा लगता हैं कि, भगवान इतने अच्छे व्यक्ति को

इतनी बड़ी सजा क्यों देता है । अपनी विकलांगता पर मात करके कठोर मेहनत से आत्मनिर्भर बनने का विकलांगों का प्रयास सकलांग व्यक्तियों के लिए काफी प्रेरक है । अन्याय, अत्याचार के प्रति विद्रोही भावना को भी लेखक ने इस कहानी में व्यक्त किया हैं ।

'गूँगी' की महुआ :

प्रस्तुत कहानी की नायिका महुआ की विकलांगता रोगजन्य हैं । वह गूँगी होने के कारण अपनी भाव, भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाती । कठोर मेहनत से उसकी हाथों की उंगलियाँ गठीली और हथेलिया भी खुरदरी हो जाती हैं । वह अपने निर्वाह के लिए हर दिन बच्चों को स्कूल छोड़ना और वापस उनके घर पहुँचाने का काम करती हैं । अनेकों के अत्याचार से बचकर स्वाभिमान पूर्ण जीवन जीना चाहती हैं । इतना ही नहीं तो विकलांग होते हुए भी कठोर मेहनत करनेवाली २५ वर्षीय महुआ अत्याचार करनेवालों का प्रतिशोध लेती हैं । अत: उसकी कार्यक्षमता, ताकद और साहस एक सशक्त स्त्री को ही नहीं बल्कि पुरुषों को भी लजानेवाला है । एक स्थान पर कहा गया है कि, ''छह साल की उम्र में टॉन्सिल के ऑपरेशन से आवाज चली गई पर पढ़ी-लिखी है सातवी पास की हैं ।''[२३] इस प्रकार विकलांगता पर मात कर महुआ आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर रहने की कोशिश करती है ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

शारीरिक दृष्टि से विकलांग चरित्र है । कठोर मेहनत से आत्मनिर्भर हैं । अन्याय-अत्याचार का प्रतिशोध लेनेवाला स्त्री चरित्र है । वह अनेक विकलांग ही नही तो सकलांग स्त्रियों के लिए प्रेरक चरित्र हैं । वह कार्यक्षम और साहसी चरित्र हैं ।

४.३.१.२ रोगजन्य विकलांग चरित्र :

किसी भी प्रकार की बीमारी मनुष्य के व्यवहार और आचरण को आवश्य प्रभावित करती हैं । रोग की अवधि कम हो चाहे अधिक रोग ग्रस्त व्यक्ति का आचरण और व्यवहार सामान्य नहीं रहता । ऐसे अनेक चरित्र हिंदी कथा साहित्य में पाये जाते हैं । ऐसे चरित्रों में किसी बीमारी के कारण विकलांगता दिखाई देती हैं उसे रोगजन्य विकलांगता कहा जाता है । रोग प्रमुख रूप से दो प्रकार के होते है एक शारीरिक रोग और दूसरा मानसिक रोग ।

शारीरिक रोगग्रस्त विकलांग चरित्र किसी-न-किसी शारीरिक बीमारी से पीड़ित होते हैं। जैसे ज्वर, सिरदर्द, फ्लू आदि । कुछ रोग साधारण तो कुछ रोग असाधारण भी होते हैं । जैसे - कैंसर, कोढ़, यक्ष्मा हृदयरोग आदि । रोगग्रस्त विकलांग चरित्र के सन्दर्भ में यह वक्तव्य दृष्टिगत होता हैं, ''शारीरिक रोग व्यक्ति के व्यवहार को असंतुलित बना देते हैं । रोग के कारण व्यक्ति की क्रियाशीलता अथवा कार्यक्षमता कम हो जाती हैं । इस तरह शारीरिक रोग चारित्रिक व्यवहारगत असामान्यता का कारण बनते हैं । तथा व्यक्ति की क्षमता प्रभावित करते हैं । शारीरिक रोगग्रस्त पात्रों के अन्तर्गत उन सभी पात्रों को लिया जाता हैं जो किसी न किसी शारीरिक रोग से पीड़ित हैं ।''[२४]

विभिन्न प्रकार के रोगों के कारण अनेक प्रकार की विकलांगता का सामना करनेवाले अनेक विकलांग चरित्रों को स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य में अनेक साहित्यकारों ने अलग-अलग प्रकार से प्रस्तुत किया हैं । जैसे - 'तलाश उन्मुक्त आकाश की' कौशल्या की सास, 'लुंज' के बाबूजी, 'अन्ना', 'कण्ठहार' की सुषमा, 'उत्तराधिकारी' का बालक, 'जगदम्बा बाबू गाँव आ रहे है' का ललौना, आदि चरित्रों की रोगग्रस्त विकलांगता का चित्रण किया हैं ।

४.३.१.२.१ पक्षाघात

विकलांगता का प्रमुख कारण हैं पक्षाघात । इस बीमारी के कारण अनेक लोग विकलांग हो जाते हैं । कुछ सालों में पोलियो के टीके पिलाने के नियमित और व्यापक अभियान चलाने से पोलियो से विकलांग होनेवाले लोगों की संख्या में काफी कमी आई हैं । एक स्थान पर विनोद कुमार मिश्र जी ने इस विकलांगता के सन्दर्भ में कहा है, ''विश्व स्वास्थ्य संगठन और रोटरी इंटरनेशनल जैसी संस्थाओं ने विश्वव्यापी अभियान छेड़ा हैं और अगली सदी में इस घातक बीमारी से निजात पाने का संकल्प किया हैं।''[२५] पक्षाघात से ग्रस्त विकलांग चरित्र हिंदी कथा साहित्य में अनेक रचनाओं पर पाये जाते है । अनेक साहित्यकारों ने ऐसे विकलांग चरित्रों की सृष्टि की है । अंगाघात के सन्दर्भ में गीता अग्रवालजी का यह कथन, ''अंगाघात की दशा में एक या अनेक पेशी समूहों पर आघात होता हैं । प्रभावित अंगों को हिलाने की क्षमता मरीज में नहीं रहती ।''[२६] 'पगलाया हुआ' की बड़ी अम्मा, 'मन के जीते जीत' का रोहन, 'पोलियो' की मणिका, 'अभिशप्ता', का अनाम चरित्र, 'उसका

आकाश' का आशिष, 'जोखीम' की माँ, 'माटी सुबरन बरसाय' के काका, 'अनेकांत' का दीपक के पापा, 'काशीवास' की वृंदा की सास आदि चरित्र अंगाघात की वजह से विकलांग है ।

'मन के जीत जीत' - चित्रेश

अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए पढ़ाई की उम्र में ही मेहनत कर कुछ कमाने की चाहत रखनेवाले विकलांग बालक की कथा को इस कहानी में व्यक्त किया हैं । अपने परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण बाल्यावस्था में ही कठिन मेहनत कर माता-पिता की चिंता दूर करनेवाला यह विकलांग बालक इस कहानी का प्रमुख नायक हैं । पाठकों के मन पर अमिट छाप छोड़ता हैं । अपनी विकलांगता के बावजूद भी परिवार को आर्थिक मदत कर माता-पिता का साहस बँधाने का कार्य इस कहानी के विकलांग बालक के द्वारा किया हैं ।

'मन के जीते जीत' का रोहन :

प्रस्तुत कहानी का रोहन शारीरिक दृष्टि से विकलांग हैं । सातवी कक्षा में पढ़नेवाला यह बालक पक्षाघात की बीमारी से विकलांग हो जाता है । उसका एक पैर पूरी तरह से कमजोर हो जाता हैं । उसके पिताजी बेटे के भविष्य के प्रति चिंतित रहते हैं । अपने पिताजी की चिंता दूर करने के लिए पढ़ाई के साथ-साथ एक 'कताई-बुनाई केन्द्र' में काम सिखता हैं। केन्द्र प्रमुख रवि ठाकुर उसका काम देखकर काफी प्रसन्न होता हैं । रोहन के शब्दों में, ''अगर मुझे भी ठाकुर साहब केन्द्र में रख ले तो क्या अच्छा हो ? छुट्टी के बाद रोज डेढ़-दो घंटे का काम हैं, आराम से सात आठ महिने में कारीगर बन जाऊगाँ । बस फिर माँ-बाप मेरे सामर्थ्य से परिचित हो जायेंगे और उनकी मेरे बारे में जो फिक्र हैं, वह चुटकी बजाते ही रफूचक्कर हो जायेगी ।''[२७] रोहन खेलने के बहाने घर से बाहर आकर बैसाखी के सहारे परिवारवालों से छुपकर काम करता रहता हैं । कताई बुनाई और डिजाइनिंग के उच्च प्रशिक्षण के लिए रोहन का चुनाव किया जाता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

रोहन शारीरिक रुप से विकलांग चरित्र है । वह विकलांग होते हुए भी बाल्यावस्था में आत्मनिर्भर बनता है । उसमें पढ़ाई और खेलकुद की उम्र में ही आत्मविश्वास के साथ मेहनत करने की चाहत हैं । बालक होते हुए भी पारिवारिक सदस्यों की चिंताओं को दूर करता हैं ।

'पोलियो' - कुलदीप बग्गा :

कुलदीप बग्गा जी द्वारा रचित कहानी 'पोलियो' में एक पोलियोग्रस्त स्त्री की वेदना और पीड़ा को व्यक्त किया हैं । उसकी शारीरिक, मानसिक और पारिवारिक स्थिति का चित्रण इस कहानी में लेखक ने किया हैं । शारीरिक कमियों के कारण परिस्थिति के साथ समझौता करनेवाली विकलांग स्त्री की यह कहानी हैं । संतान प्राप्ति के लिए पति के अलावा किसी दूसरे पुरुष से अवैध संबंध रखकर संतान प्राप्ति का सुख प्राप्त करनेवाली विकलांग स्त्री की करुण गाथा इस कहानी में देखने को मिलती हैं ।

'पोलियो' की मणिका :

प्रस्तुत कहानी की मणिका पक्षाघात के कारण विकलांग हुई हैं । वह अत्यंत सुंदर और आकर्षक युवती हैं । पोलियो से उसका एक पैर कमजोर हैं । वह मनीश नामक युवक से प्रेम करती हैं । मनीश अपनी माँ के साथ उसके घर जाकर उसका हाथ माँगता हैं । मणिका के शब्दों में, ''कल मनिश की माँ आई थी । मेरे लम्बे बालों की, मेरी आँखों की खूब तारीफ करती रहीं । मैं जानबुझकर उठकर दूसरे कमरे में चली गयी । वापस आकर देखा तो उसकी माँ का रंग ही बदला हुआ था ।''[२८] अत: वह रिश्ता टूट जाता हैं । मणिका भी मन से टूट जाती हैं । अंत में उसे एक विकलांग व्यक्ति के साथ ही विवाह करना पड़ता हैं । जिसके दोनों पैर रेल से कट गये थे । मनिष के साथ के प्रेम संबंध शरीर संबन्ध में बदले हुए थे, परन्तु प्रितम नामक युवक के साथ विवाह के बाद किसी प्रकार के शरीर बंबंध नहीं बन पाते। अपने पति के साथ बँधे रहने के लिए उसे जिन्दगी के साथ समझौता करना पड़ता हैं । वह एक सशक्त बच्चे को जन्म देती हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

मणिका पक्षाघात से विकलांग चरित्र हैं । वह परिस्थितियों से समझौता करनेवाली स्त्री हैं । वह अपनी विकलांगता को सहकर सच्चाई का साथ देनेवाली हैं । वह शरीर और मन से टूट चुकी है ।

'अभिशप्ता' - दीप्ति खण्डेलवाल :

दीप्ति खण्डेलवाल जी द्वारा लिखित कहानी 'अभिशप्त' में निम्न मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक, मानसिक और सामाजिक स्थिति का चित्रण हैं । पिताजी की विकलांगता के कारण एक युवा नारी ने उठाई हुई सभी पारिवारिक जिम्मेवारी का चित्रण इस कहानी में लेखिकाने अत्यंत मार्मिक रुप से किया हैं । एक स्त्री होते हुए भी अपनी भावनाओं को मारकर अपने परिवार की खुशियाँ द्विगुणीत करनेवाली स्त्री की आन्तरिक पीड़ा इस कहानी में व्यक्त हुई हैं ।

'अभिशप्ता' का अनाम चरित्र :

प्रस्तुत कहानी की मोना के पिताजी लकवे से विकलांग हैं । लेखिका ने उसको कुछ विशेष नाम से संबोधित नहीं किया । लकवे की विकलांगता के कारण वह किसी प्रकार का काम काज नहीं कर पाता । इसलिए परिवार की सबसे बड़ी बेटी मोना को परिवार की सभी जिम्मवारियाँ संभालनी पड़ती हैं । मानो के पिताजी अपनी छोटी बेटी की शादि होने के बाद इतने खुश हो जाते है कि उन्हें अपनी बड़ी बेटी अर्थात मानो सचमुच देवी का रुप लगती हैं। पिताजी कहते हैं, ''मानो बेटी तुम तो सचमुच देवी हैं।''[२९] विकलांग पिताजी को मानो की चिंता सताती हैं । वे उसे कहते है, ''मानो बेटी आज कब तक आओगी ? बहुत काम न किया करो, मुझे दु:ख होता है ।''[३०] विकलांग होने के कारण पिताजी को अपने परिवार के निर्वाह की चिंता सताने लगती है । वे मानो के लिए विशेष रुप से चिंतित रहते है ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी की नायिका मानो के पिताजी पक्षाघात से विकलांग है । विकलांगता के कारण परिवार की चिंता से ग्रस्त है । वे अपनी कमानेवाली बेटी के प्रति देवी जैसे भाव रखते हैं ।

'उन दोनों के बीच' - राजी सेठ :

हिंदी साहित्य की लब्ध प्रतिष्ठ लेखिका राजी सेठ द्वारा लिखित 'उन दोनों के बीच' कहानी में पारिवारिक समस्या का चित्रण हैं । अपने ही परिवार में रहनेवाला व्यक्ति कितना आत्मकेंद्रित, अकेला, हताश और जर्जर हो सकता हैं इसका उदाहरण यह कहानी हैं । मनुष्य अपने ही परिवार की चौखट में स्वयं को 'फिट' नहीं कर पाता। यह कहानी एक विकलांग व्यक्ति की पीड़ा और वेदना को व्यक्त करनेवाली कहानी हैं । कहानी के सन्दर्भ में डॉ.मिरगणे अनुराधा ने कहा है, '' 'उन दोनों के बीच' पती के विकलांग अवस्था से बेबस नारी की करुण कहानी है ।''[३१] अत: विकलांग व्यक्ति की मनस्थिति और उसके पत्नी की मनस्थिति को इस कहानी में व्यक्त किया है ।

'उन दोनों के बीच' का अनाम चरित्र :

प्रस्तुत कहानी में पक्षाघात से विकलांग अनाम चरित्र का चित्रण हैं । पक्षाघात के कारण उसका एक हाथ एवं पाँव निकम्मा हो जाता हैं । उसकी शारीरिक हालत अत्यंत कमजोर रहती हैं । उसके शरीर का दाया हिस्सा पूर्णत: निकम्मा हो गया है । फिर भी वह बायें पैर की एड़ी पर घूमने की कोशिश करता है परन्तु वह डगमगाता हैं । यह व्यक्ति लाचार-सा, आहत-सा नियति के अन्याय से नाराज रहता हैं । स्वयं विकलांग होते हुए भी दूसरों का सुख-दु:ख जाननेवाला यह व्यक्ति स्वाभिमानी और हंसोड वृत्ती का हैं । मन मे हमेशा उदार आत्मसंतुष्ट भाव रखनेवाला हैं । विकलांगता के कारण हमेशा के लिए बिस्तर पर पड़ा रहता हैं । उसका दोस्त जब उसे मिलने आता हैं तब उसी के शब्दों में, ''हमारे आने पर कुछ-कुछ वैसा ही था उनका उत्साह । जीवन की तड़फड़ाहट से भरा । अपनी साधारणता में लौटने को तत्पर । उनके अपंग भाग में बिजली सी दौड़ती रही थी ।''[३२] विकलांगता ग्रस्त इस चरित्र की समस्याएँ पाठकों के हृदय पटल पर गहरा प्रभाव डालती है।

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी का अनाम चरित्र पक्षाघात से विकलांग हैं । वह स्वाभिमानी और आत्म संतुष्ट हैं । विकलांग होते हुए भी लोगों के प्रति स्नेहभाव रखता हैं । विकलांग स्थिती में भी कार्य करने की इच्छा और जीने की जीवटता पाठकों को प्रेरित करती हैं ।

'जोखिम' - कमलेश्वर :

इस कहानी में लेखकने मानवीय संबंधों को व्यक्त किया हैं । मनुष्य की निष्क्रियता को प्रस्तुत करके मानव की संवेदनशून्यता की ओर संकेत किया है । यातना भरी जिंदगी से गुजरते हुए मनुष्य के साथ उसकी मानसिकता का चित्रण इस कहानी में हैं । इस कहानी को पढ़कर ऐसा लगता है कि, लेखक सामान्य आदमी से और उसकी संवेदनाओं से जुड़े हुए हैं। लेखक के शब्दों में, ''यातनाओं के जंगल से गुजरते मनुष्य की इस महायात्रा का जो सहयात्री हैं, वही आज का लेखक है । सह और समान्तर जीनेवाला सामान्य आदमी के साथ।''[३३]

'जोखिम' की माँ :

प्रस्तुत कहानी की माँ पक्षाघात से विकलांग चरित्र हैं । उसका दाया अंग पूरी तरह से पक्षाघात की वजह से सुन्न हो गया हैं । लेकिन उसकी आँखों में किसी प्रकार की हरकत नजर नहीं आती । उसकी आँखों की क्षमता भी नष्ट हुई है । उसका शरीर पूरी तरह से जर्जर हो चुका था । मगर उसकी वाणी बंद होने से पहले वह कुछ बताना चाहती थी । बढ़ते खर्चे के कारण वह हमेशा परेशान रहती हैं । कुछ ही दिनों में उसकी वाणी भी बंद हो जाती हैं । वह एक पत्थर की मूरत-सी लगती हैं। उसका पूरा शरीर सुन्न पड़ जाता हैं । उसके बाएँ हाथ की अँगुलियां भी जकड़ जाती हैं । मरने से पहले वह एक बार अपने बेटे को देखना चाहती हैं, परन्तु विकलांगता के कारण नहीं देख पाती । मरने के बाद भी उसके चेहरे पर शांति नजर आती हैं । वह दुनिया से बेतरह जुझती हुई अच्छा और बुरा सोचती है।

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी की माँ पक्षाघात से विकलांग चरित्र हैं । वह जिन्दगीभर ईमानदार रहती हैं । अंतिम क्षण में स्वयं के बेटे को देखने की चाहत रखती हैं । आर्थिक दृष्टि से अत्यंत निर्धन परिवार से है । वह दूसरों का मंगल और भलाई चाहनेवाली स्त्री हैं ।

'काशीवास' - विद्या विंदु सिंह

प्रस्तुत कहानी में लेखिका ने एक बहादुर स्त्री के व्यक्तित्व का चित्रण किया हैं । पुरुषों के कंधे-से-कंधा लगाकर अनेक समस्याओं के साथ लड़नेवाली स्त्री की अपने परिवार

के प्रति सहानुभूति, प्रेम और साहस का चित्रण इस कहानी के द्वारा समाज के सामने रखकर समाज की अनेक स्त्रियों को प्रेरित किया हैं । सास और ससूर के साथ सहानुभूति और स्नेह रखकर अपने पति का हौसला बढ़ाकर साहसी रहने की प्रेरक स्त्री इस कहानी में देखने को मिलती हैं । इस कहानी की स्त्री अबला नहीं बल्कि सबला और हिम्मतवाली हैं ।

'काशीवास' की वृंदा की सास :

इस कहानी की वृंदा की सास पक्षाघात से विकलांग स्त्री हैं । शारीरिक रुप से विकलांग होने के कारण वह बिस्तर पर लेटी रहती हैं । उसकी सास न बोल पाती है और न चल पाती हैं । वह अपनी आँखों की हलचल से या इशारे से ही वृंदा को सारी बातें समझाती हैं । वह अपनी बेबस जिंदगी से पूरी तरह से ऊब चुकी है । बहू द्वारा की गई सेवा देखकर वह काफी प्रसन्न रहती हैं । परन्तु वह सोचती हैं की वृंदा को बहुत कष्ट पड़ता हैं । इसलिए स्वयं की मुक्ति की प्रार्थना करती रहती हैं । एक दिन वह इशारे से पूरे परिवार को अपने पास बुलाती हैं और बहू का हाथ पकड़कर अपने हाथों में थामे कुछ कहने का प्रयास करना चाहती हैं, पर वह कह नहीं पाती । परन्तु वृंदा अपने सास के मन की बात समझती हैं, वह कहना चाहती थी कि, ''अब तुम्हीं सब की माँ हो, तुम्ही को संभालना है ।''[३४] अत: उसका इस बीमारी में देहान्त होता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी की वृंदा की सास पक्षाघात से विकलांग हैं । वह अपनी बहु के प्रति स्नेह और अपनत्व का भाव रखती है । मृत्यु के समय अर्थात् अंतिम पल में भी उसे अपने परिवार की चिंता रहती हैं । वह बहु के कष्ट का अहसास रखती हैं ।

इस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में पक्षाघात की वजह से विकलांगता भुगतने वाले अनेक चरित्रों का चित्रण आया हैं । फिर वह स्त्री चरित्र हो अथवा पुरुष चरित्र हो । अनेक स्थानों पर बालक भी इस विकलांगता का शिकार हो चुके हैं । अत्याधिक मात्रा में वृध्दावस्था में यह विकलांगता गले लग जाती है । एक बार अगर इस बीमारी ने जकड़ लिया तो पूरी जिंदगी भर विकलांगता भुगतनी पड़ती है । इतना ही नहीं तो कभी कभी यह

बीमारी मौत को गले लगाती हैं । इस प्रकार अनेक साहित्यकारों ने पक्षाघात से विकलांग चरित्रों का सृजन स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में किया हैं ।

४.३.१.२.२ कुष्ठरोग :

यह रोग भारत की प्रमुख समस्याओं में से एक हैं । सन् १९८१ में लगाए गए अनुमान के अनुसार भारत में लगभग ४० लाख कुष्ठ रोगी थे । असल में यह बीमारी माइको बैक्टीरिक्स लेपरी नामक वायरस से फैलती है । यह बैक्टीरिया टी.बी. के वायरस के परिवार का होता है । यह संक्रामक बीमारी है, परन्तु इतना संक्रामक भी नहीं कि जितना माना जाता है । इस बैक्टीरिया का पता १८७३ ई.मे नार्वे के डॉक्टर हानसेन ने लगाया था। विश्व के अत्यन्त पुराने रोगों में से एक माना जानेवाला कुष्ठ रोग हैं । इस बीमारी की वजह से नर्व्स क्षतिग्रस्त होने लगती है और मनुष्य के अंग गलने लगते हैं । इतना ही नही तो शरीर की चमड़ी भी प्रभावित होती है और मनुष्य का श्वसन तंत्र भी क्षतिग्रस्त होने लगता हैं। अनेक बार तो गुर्दे, जोड हड्डीयाँ, मांसपेशियाँ और आँखें भी प्रभावित होने लगती हैं । कुष्ठ रोग का आँखों पर काफी जल्दी असर पड़ता है । कुष्ठरोग दो प्रकार का होता हैं । एक संक्रामक तो दूसरा संक्रामक नहीं होता। यदि इस बीमारी का इलाज न हो जाए तो संक्रामक हो जाता है । दूसरी बात यह है कि यदि रोग संक्रामक है भी तो मात्र एक सप्ताह के अंदर ही अगर सही इलाज किया जाए तो संक्रामकता चली जाती है । शरीर की प्रतिरोध क्षमता इस रोग का कुछ दिनों तक मुकाबला करती रहती हैं ।

कुष्ठरोग के लक्षण :

१) मनुष्य के शरीर में चकते पड़ते हैं । आरंभ में यह चकते हल्के होते हैं ।

२) धीरे धीरे इन चकतों में सुन्नता आती हैं और इन चकते पर अगर सुई चुभाई जाए तो पता तक नहीं चलता ।

३) हाथ पैरों की नर्व्स कड़ी और मोटी होने लगती है ।

४) चमड़ी मोटी, चमकीली और लाल हो जाती है ।

५) चमड़ी पर सूजन आती है और बड़े-बड़े कोड़े होने लगते है ।

६) हाथों, पैरों, आँखों की पलकों में और उंगलियों में विकृति आने लगती है ।

७) फोड़ो और अल्सर होने लगते हैं, पर दर्द नहीं होता ।

''भारत सरकार द्वारा चलाए गए अभियान के पश्चात भी सन् १९९२ में लगभग १५ लाख कुष्ठ रोगी अभी भी देश के विभिन्न भागों में है और भयंकर कष्ट पा रहे हैं।''[३५] इस प्रकार यह रोग जितना भयानक उतना ही व्यापक भी है । इस बीमारी की विकरालता विश्व के सभी देशों में है । इसलिए स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य के अनेक साहित्यकारों ने ऐसे अनेक चरित्रों की सृष्टि की हैं । कुष्ठ की बीमारी से विकलांग चरित्र बहुत कम मात्रा में स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी साहित्य में चित्रित हुए हैं। कुष्ठरोग से विकलांग चरित्रों का निर्माण बहुत कम मात्रा में हुआ हैं ।

'करिए छिमा' - शिवानी :

इस कहानी में लेखिका ने एक कलाकार की कला को व्यक्त किया हैं । विदेशी लोग और भारतीय ग्रामीण जनता का चित्रण इस कहानी में किया हैं । साथ ही उनके आत्मीय सम्बन्धों को भी व्यक्त किया हैं । भयावह बीमारी का सामना करते हुए निस्वार्थ भाव से लोगों के लिए कुछ कर दिखाने की उम्मीद विकलांग चरित्रों में भी पायी जाती है और वह सकलांगों को भी प्रेरणादायी होती है । विकलांगों की अनूठी कला का सम्मान होना तथा उन्हें प्रेरित करने की आवश्यकता यहाँ लेखिकाने व्यक्त की हैं ।

'करिए छिमा' का विदेशी चित्रकार :

प्रस्तुत कहानी में एक विदेशी चित्रकार का चरित्र अंकित हैं । जब वह गुहा में आकर रहता हैं तब उसके रोग का कोई बाहय चिन्ह नहीं था । ग्रामवासी उसे 'पादडी साहब' कहकर पुकारते थे। किसी खंदक में छिपे कुटिल शत्रु की भाँति, उस पर कुष्ठ बीमारी आक्रमण करती हैं । पहले उसके हाथ की अंगुलिया झड़ जाती है, फिर पलकें झड़ जाती है। एक ही वर्ष में वह बूरी तरह से लंगडाने लगता है । कुछ ही दिनों में वह अपने ठूंठ से हाथों से गुहा भित्ति को अपनी अनूठी कला से भी सहज विभूषित करता हैं। परन्तु एक विवश तुलिका नीचे गिर पडती हैं । लेकिन वह विकलांग चित्रकार अपनी विकलांगता के बाद भी सहज पराजय स्विकार नहीं करता । उसके वे विकलांग परन्तु कलात्मक हाथ तुलिका को धन्य करते हैं । वह उन्हीं हाथों सें कुदाली थाम लेता हैं । जलना, रामगढ़ और

कुल्लू से सुनहरे सेब, नासपतियों के पौधे मंगाकर कोढ़ी साहब अपने हाथों से फल और पुष्पों के भावी नन्दनवन की सृष्टि करता हैं । एक बात गौर करने जैसी है कि वह स्वयं फल खाने के लिए जीवीत नही रह सकता था और न ही उसके कोई रिश्तेदार था । लेखिका का यह वक्तव्य यहाँ बहुत श्रेष्ठत्व के भाव उत्पन्न करता हैं । ''क्या मीठे कुएं का पानी पिकर लोग कुआ खोदनेवाले को स्मरण नहीं करेंगे?''[३६] उसने भूतकाल में कभी एक ग्वाले के पुत्र को पढ़ाया था । वह ग्वाले का पुत्र उसे हर दिन पाव भर दूध देता था । परन्तु अपनी विकलांगता की असहय वेदना से पीड़ित होकर चित्रकार एक दिन आत्महत्या करता हैं । मानसिक और शारीरिक पीड़ा से त्रस्त होकर खुदकुशी करने को विवश हो जाता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी का चित्रकार कुष्ठ की बीमारी से विकलांग हैं । वह मानसिक और शारीरिक पीड़ा को सहनेवाला चरित्र हैं । स्वयं विकलांग होते हुए भी दूसरों की भलाई सोचनेवाला हैं ।

इस प्रकार कुष्ठरोग से विकलांग चरित्रों का सृजन स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में हुआ हैं । परन्तु ऐसे चरित्रों का निर्माण बहुत कम मात्रा में हुआ हैं ।

४.३.१.२.३ खसरे की बीमारी/शीतला :

शीतला यह एक ऐसा रोग हैं कि सुंदर और आकर्षक व्यक्तित्व को कुरुप बनाता हैं। इस रोग की वजह से मनुष्य के सौंदर्य में अनेक खामियाँ निर्माण होती हैं । खसरे के दाग से सम्पूर्ण शरीर सौंदर्यहीन हो जाता है। इस रोग के कारण मनुष्य को मौत को गले लगाना पड़ता हैं । शीतला की बीमारी के कारण शरीर का कोई भी भाग सौंदर्यहीन हो जाता हैं । विभिन्न प्रकार के रोगों में से शीतला एक ऐसी बीमारी है, जो मनुष्य को विकलांग बनाती हैं। स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी साहित्य में अनेक साहित्यकारों ने इस बीमारी से विकलांग हुए चरित्रों का निर्माण किया हैं । इन चरित्रों में अधिकांश चरित्र काने हैं और इस कानेपन के कारण उनके सौन्दर्य में, कमी महसूस कर वे कुण्ठित हो जाते हैं। 'उससे हार नहीं मानी' का अखिलेश, 'मामला घर का' का शिब्बु, 'ललिता' की ललिता आदि कहानियों में शीतला के प्रकोप से विकलांग चरित्रों का सृजन किया हैं ।

'उससे हार नहीं मानी' - त्रिभुवन पाठक :

प्रस्तुत कहानी के द्वारा एक विकलांग निराश्रित व्यक्तित्व की कामयाबी को प्रस्तुत किया हैं । अनेक समस्याओं का सामना कर स्वयं निराश्रित होकर गरीबों को आश्रय देनेवाले व्यक्ति का चरित्र लेखक ने इस कहानी में अत्यंत मार्मिकता से प्रस्तुत किया है। विकलांग होते हुए भी जिंदगी से हार न माननेवाला दोनों आँखों से अंध व्यक्ति के द्वारा लेखक ने सकलांग व्यक्तियों की आँखें खोल दी हैं । जो बेगार रहते हैं। यह वक्तव्य यहाँ सही प्रतीत होता हैं । ''भगवान यदि कुछ ले लेता है, तो बदले में कुछ असाधारण योग्यताएँ देकर क्षतिपूर्ति करता है ।''[३७] आज भी लाखों विकलांग अपनी सभी जरुरतों को स्वयं पूरा करते हैं।

'उससे हार नहीं मानी' का अखिलेश :

त्रिभुवन पाठक जी द्वारा लिखित कहानी 'उससे हार नहीं मानी' में आंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त भजन गायक अखिलेश महाराज शारीरिक दृष्टि से विकलांग चरित्र हैं । गांव में आयी चेचक की बीमारी के प्रकोप से दोनों आँखों की दृष्टि क्षमता पूर्णत: समाप्त हो जाती हैं । इसी समय माता-पिता का देहांत उनके लिए एक मानसिक दृष्टि से बहुत अस्वस्थता की बात थी । बचपन से ही रात दिन काम करना पड़ता हैं । मार-पीटकर चाचा-चाची उसे १४ वर्ष की उम्र में घर से बाहर निकाल देते हैं । वह इधर-उधर मंदिरों मे घुमता रहता हैं । वह भजन और श्रीमद्भागवत के श्लोक याद करता है अपनी सुन्दर वाणी से वह कंठस्थ करता हैं और विश्वविख्यात अखिलेश महाराज होकर वृंदावन में 'मेरे तो गिरधर गोपाल दूसरों न कोई' को सच मानकर अपनी जिन्दगी बीताता हैं । ''अखिलेश महाराज का अपना आश्रम हैं। वहाँ नित्यप्रति श्रीमद्भागवत का पाठ होता है । आश्रम में गायकी का अभ्यास होता हैं । भजन किर्तन चलता हैं । महाराज को कही आने-जाने के लिए अपनी गड़ी हैं । अपना ड्राइवर हैं ।''[३८] इस प्रकार विकलांग व्यक्ति भी अपनी मंजिल हासिल कर पाता हैं । वह अनेक लोगों का प्रेरक बनता हैं, गरीबी का सामना कर, अनेकों को सहारा देता हैं।

चारित्रिक विशेषताएँ

प्रस्तुत कहानी का अखिलेश की विकलांगता रोगजन्य हैं । उसकी दोनों आँखें ज्योतिहीन हैं । वह जिद्दी और मेहनती चरित्र हैं । अपने मधुर कंठ से लोगों को प्रसन्न करता हैं । विकलांगता के बावजूद भी स्वयं निराश्रित होकर दूसरों को आश्रय देता हैं ।

'मामला घर' का - चंद्रकान्ता :

प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने एक उजड़े हुए परिवार का चित्रण किया हैं । एक ही परिवार के सगे भाई की नफरत को उजागर किया हैं । भाई द्वारा भाई पर किया गया अन्याय इस कहानी में अभिव्यक्त हुआ हैं । ''अपने से अट्ठाईस साल बड़े इस भाई के साथ तो कभी कोई रिश्ता न जुड़ा न बाप का न भाई का ।''[३९] आर्थिक सामाजिक और पारिवारिक समस्याओं के कारण व्यक्ति की टूटन को लेखक ने यहाँ उजागर किया हैं । व्यक्ति को हर एक समस्या के साथ समझौता करना पड़ता हैं । इसका उदाहरण यह कहानी है ।

'मामला घर का' का शिब्बु :

प्रस्तुत कहानी का नायक शिब्बु एक आँख से विकलांग चरित्र हैं । उसकी एक आँख खसरे की बीमारी से ज्योतीहीन हो गई हैं । एक बार सूरज उसे कानेशाह कहता है । तब शिब्बु उसकी बहुत पीटाई करता हैं । तोषा उसे भोंगा, बगुला, कामभगोड़ा कहती थी । इसलिए एक बार भरे बाजार में उसका दुपट्टा छीनकर भाग जाता हैं । बच्चे उसकों ककड़ी पर खरबूज चला आ रहा हैं' कहकर चिड़ातें हैं । इसलिए वह स्कूल जाना भी छोड़ देता हैं। वह भविष्य के बारें में चिंतित न होकर अकेलेपन के अहसास से दु:खी होता हैं । जब वह घर छोड़कर जाता हैं तब एक दफ्तर में काम करते समय एक साँवली सी लड़की के साथ उसका परिचय होता है । ''न उन्होंने प्रेम प्यार के गीत गाये, न पेडो के चक्कर काटे एकाध बार जरुर मद्रासी रेस्तरां में उन्होंने साथ-साथ 'स्पेशल दोसा' खाया । वे तो जरा सी पहचान के साथ ही एक दूसरे की जरुरत बन गये ।''[४०] पंद्रह साल की उम्र में जिस घर को छोड़कर गया था और कभी न लौटने की भीष्म प्रतिज्ञा की थी पत्नी के कहने पर उस घर में जाता हैं। अत: शिब्बु जिन्दगी भर समझौते में अपनी जिन्दगी बीताता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

शिब्बु की विकलांगता रोगजन्य हैं । वह आर्थिक, पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं का डटकर सामना करता हैं । किसी भी बात में तुरन्त समझौता करता हैं । अकेलेपन के अहसास से दु:खी होता हैं ।

'ललिता' - शिवानी :

प्रस्तुत कहानी में एक स्त्री की उजड़ी हुई जिन्दगी का चित्रण हैं । अनाथ और विकलांग स्त्री की जीवन यात्रा को इस कहानी में व्यक्त किया है । अपनी उदासी की शिकन भी वह लोगों को कभी नहीं दिखाना चाहती । परन्तु अपने पास के लोकगीतों को वह समाज तक पहुँचाना चाहती हैं । उसे कभी अपनी कमजोरी का आभास नहीं होता । एक संवेदनशील विकलांग स्त्री के रुप में वह इस कहानी में चित्रित हैं । उसे सामाजिक, पारिवारिक और आर्थिक समस्याओं से जूझना पडता हैं । इसका जूझना ही आज के स्त्रियों को कुछ नया रास्ता दिखाता हैं ।

'ललिता' की ललिता :

प्रस्तुत कहानी की ललिता की विकलांगता को अत्यंत संवेदनशील होकर लेखिकाने इस कहानी में व्यक्त किया हैं । उसकी एक आँख चेचक की बीमारी से माता भवानी की भेंट हो चुकी हैं । ललिता की एक आँख छीनकर विधाताने उसे ऐसा परिहास दिया कि वह भाग्य की हर चोट और थपेड़ को हँस-खेलकर झेल लेती है । वह एक अँगुली अपनी कानी आँख पर रखकर गाती हैं ।-

''जा आँखिया मोरी भई रे सौतनिया
जा आँखिया मोरी भई रे बैरनिया ।''[४१]

ललिता उदास होने पर भी चेहरे पर कभी शिकन नहीं आने देती । उसके पास एक विशेष बात थी, कि रोना सिखने के लिए उसके पास दूर-दूर के गाँवों से बहू-बेटियाँ आती थी । वह रोने में ही नहीं तो गाने में भी माहिर थी । टोना, लंद, फाग,बिरहा के अनूठे पदों का काव्यात्मक शृंगार प्राय: वह स्वयं ही करती थी । अनपढ़ ललिता की कल्पना बड़ी सजीव थी । वह लिखना पड़ना चाहती है । परन्तु उसमें असफलता पाकर, उबकर कहती

हैं, ''चुल्हे में डारों जा ससुर कागद इससे तो हम सिलाई सीखें''[४२] वह कभी अपने अपंगत्व का द्वेश नहीं करती । इतना ही नहीं तो वह अपनी अंतिम इच्छा भी व्यक्त करती हैं । अत: विकलांग चरित्र भी सामान्य व्यक्ति के जैसे संवेदनशील होते हैं । उनकी भी अपनी कुछ भावनाएँ होती हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

ललिता एक आँख से विकलांग हैं । स्वाभिमानी और आत्मनिर्भर बनने का प्रयास करती हैं । विकलांग परन्तु संवेदनशील नारी चरित्र हैं ।

४.३.१.३ दुर्घटनाजन्य विकलांगता :

दुर्घटनाएँ विकलांगता का बहुत बड़ा कारण है । दुर्घटनाओं के कारण अनेक लोग विकलांग हो जाते हैं । ये दुर्घटनाएँ यातायात के दौरान, औद्योगिक क्षेत्र में काम के दौरान, कृषि कार्य के दौरान, हिंसा, मारपीट जैसे अनेक कारणों से यह विकलांगता मानव को भुगतनी पड़ती है । इस विकलांगता के सन्दर्भ में विनोद कुमार मिश्रजी ने कहा है, ''नेशनल सोसाइटी फॉर इक्वल अपोर्चुनिटीज फॉर दि हैंडीकैप्ड, मुम्बई के शोध विभाग द्वारा किये गए सर्व्हे के अनुसार हर साल २५,००० औद्योगिक मजदूर काम करते समय घायल होकर स्थायी रुप से विकलांग हो जाते है ।''[४३] परन्तु वास्तविकता यह है कि इससे भी काफी ज्यादा संख्या में दुर्घटनाएँ होती रहती हैं । दुर्घटनाओं के कारण घायल और मरनेवालों की संख्या में काफी वृध्दि हुई होगी । एक स्थान पर यह भी कहा गया है कि, ''भारत सरकार के सड़क परिवहन विभागद्वारा किये गए सर्वे के अनुसार सन् १९९० से सड़क दुर्घटनाओं में ५४,१०० लोग मारे गए और २,४४,१०० लोग घायल हुए जिनमें काफी तादाद में लोग स्थायी रुप से विकलांग हो गए ।''[४४] वास्तविकता यह है कि संसार में अनेक दुर्घटनाएँ होती है और अनेक लोग विकलांग हो जाते हैं । दुर्घटनाओं के कारण विकलांग हुए अनेक चरित्रों की स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य में अनेक साहित्यकारों ने सृष्टि की है । इसलिए साहित्य में ऐसे अनेक चरित्रों का सृजन किया हैं ।

दुर्घटनाजन्य विकलांगता के कारण शरीर का महत्वपूर्ण भाग अपाहिज होने से मनुष्य मानसिक स्तर पर टूट जाता है । जैसे - किसी का अचानक हाथ या पैर अथवा आँख खराब

या नाकाम हो जाना । दुर्घटना के कारण जिन चरित्रों को अपना हाथ, पैर, आँख अथवा शरीर का महत्वपूर्ण भाग गंवाना पड़ा है ऐसे चरित्रों का यहाँ विवेचन किया हैं ।

४.३.१.३.१ हाथ :

मानव के महत्वपूर्ण कर्मेंद्रियों में से हाथ एक अत्यावश्यक कर्मेंद्रिय हैं । क्योंकि हाथ के बगैर मनुष्य कुछ भी कार्य नहीं कर सकता । सामान्य व्यक्ति के जैसा उसका कार्य कुशल नहीं हो सकता । बिना हाथ मनुष्य का जीवन अधूरा हैं । हाथ से विकलांग व्यक्ति न कुछ खा सकता है या न कुछ लेन-देन कर सकता हैं । इसलिए हाथ का होना बहुत जरुरी हैं । परन्तु स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी साहित्य में कई ऐसे विकलांग चरित्र हैं, कि वे बिना हाथ के भी आम व्यक्ति के जैसा कार्य कर दिखाते हैं ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी साहित्य में दुर्घटना के कारण जिन लोगों का हाथ अपाहिज हुआ है ऐसे चरित्रों के कार्य को लेखकने अभिव्यक्त किया है । जैसे 'जिजीविषा मरी हुई' का गोविन्दा, 'आधा हाथ : पुरा जीवन' की मीरिया, 'मरीज नम्बर सात' का मरीज नम्बर सात, 'पात्रता' का अनाम चरित्र, 'कटे हाथ में हथियार' का मंगल आदि अनेक चरित्र दुर्घटना में हाथ से विकलांग हो जाते है ।

'जिजीविषा मरी हुई' - सच्चिदानन्द धूमकेतु :

सच्चिदानंद धूमकेतु जी द्वारा लिखित कहानी 'जिजीविषा मरी हुई' में निम्नवर्गीय परिवार की संकटपूर्ण स्थिति का चित्रण किया हैं। विकलांगता के कारण भूखमरी, आर्थिक कमजोरी से जुझता हुआ व्यक्ति जिने की उम्मीद लेकर बैठा हुआ है । जिस व्यक्ति को दो-दो दिन खाना मयस्सर नहीं किन्तु उसकी जीने की लालसा को लेखक ने यहाँ व्यक्त किया हैं । केंकडे-घोंघे खाकर जीवन जीने वाले व्यक्ति की असहय वेदना का चित्रण लेखक ने इस कहानी में किया हैं । इस कहानी के संदर्भ में डॉ. जितेन्द्र कुमार सिंह जी ने कहा हैं - ''यह कहानी गोविन्दा और उसके पुत्र रमना पर केन्द्रित है । गोविन्दा बहुत ही गरीब है । यही गरीबी उसके विकलांगता का कारण बनती है ।''[४५] इस प्रकार असह्य वेदना झेलकर जीने की आकांक्षा और लालसा को इस कहानी का आधार बनाया हैं ।

'जिजीविषा मरी हुई' का गोविन्दा :

प्रस्तुत कहानी का गोविन्दा शारीरिक दृष्टि से विकलांग हैं । उसकी विकलांगता दुर्घटनाजन्य हैं । एक दिन तीन तल्ले पर लोहे का मस्तुल चढ़ाते समय अचानक बाँस की सीढ़ी टूटकर गिरने से वह अपाहिज हो जाता हैं । सीढ़ी से उतरकर नीचे बेहोश अवस्था में गिरता हैं । बेहोश अवस्था में ही उसे अस्पताल पहुँचाया जाता हैं । प्लास्टर के बाद भी उसकी हाथों की टूटी हुई हड्डिया जुड़ नहीं पाती । वह जिन्दगी भर के लिए अपाहिज बना रहता हैं। रोजी रोटी का कोई ठिकाना न होने की वजह से उसका पुत्र रमना मछलियाँ मारने का काम करता हैं । दो-दो दिन मछलिया भी नहीं मिलती । अत: भूखमरी और विकलांगता से बेहाल होकर असह्य वेदना को झेलता रहता हैं । फिर भी वह जीना चाहता हैं । विकलांगता के कारण अत्यंत बेकार अवस्था में एक ही जगह पर पड़े-पड़े सोचता है, ''कब तक वह इस अपंग लाश को कंधे पर ढोता रहा लूले हाथों से सहलाता रहेगा ।''[४६] विकलांगता में भी वह अपने बेटे पर बोझ नहीं बनना चाहता ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

इस कहानी का गोविन्दा अकस्मिक दुर्घटना के कारण विकलांग हुआ चरित्र हैं । भूखमरी से उसका देहान्त होता हैं । ऐसी अवस्था में भी बेटे की चिंता करनेवाला चरित्र हैं ।

आधा हाथ : पूरा जीवन - निश्तर खानकाही :

इस कहानी में अन्याय, अत्याचार के विरोध में लड़नेवाली सशक्त एवं सक्षम स्त्री की कथा का चित्रण हैं । जिसे समाज के कुछ दरिन्दे गुण्डों से लड़ते-लड़ते अपना एक हाथ खो देना पड़ता हैं । अपनी विकलांगता के बावजूद भी हौसला बुलंद रखनेवाली यह स्त्री आज के अविकलांग स्त्रियों के लिए भी प्रेरणादायी चरित्र के रुप में प्रस्तुत हुई है । वह अपनी ताकत और आत्मविश्वास के बल पर लड़ती रहती हैं । ''उसमें आत्मविश्वास और आगे बढ़ने की आदम्य इच्छा शक्ति हैं । उसे किसी की दया और सहानुभूति से घृणा हैं।''[४७]

'आधा हाथ : पूरा जीवन' की मीरिया :

मीरिया हाथ से विकलांग है । उसकी विकलांगता दुर्घटनाजन्य हैं । विकलांगता के पूर्व वह मजुमदार कामर्स एण्ड बिजनेस सेण्टर में स्टेनो टाइपिस्ट के पद पर काम करती थी। एक मेहनती और ईमानदार कर्मचारी के रुप में उसकी गिनती की जाती हैं। एक रात उस पर दो गुण्डे बलात्कार करने का प्रयास करते हैं । तब वह पूरी शक्ति से उनका विरोध कर गला दबाने का प्रयास करती हैं । किन्तु दो गुण्डो के आगे वह शक्ति हीन हो जाती हैं । उसका एक हाथ भी वह दरिन्दे तोड़ देते हैं । बाद में वह बेहोश पड़ी रहती हैं । कहानीकार के शब्दों में, ''उसके पास अब वह सुडौल पतली-पतली उँगलियाँ नहीं थी जो टाइप राइटर के की बोर्ड पर तेजी से नाचा करती थी और की गति के साथ कागज पर फिसला करती थी।''[४८] छब्बीस साल चार महिने और तीन दिन की तीखे नयन नक्श वाली यह सावली और सुन्दर युवती जिंदगी भर के लिए विकलांग हो जाती हैं । अपनी उँगलियों का ध्यान आते ही असह्य वेदना से अपने टूण्ड-मुण्ड हाथ की ओर देखती हैं । उँगलियों के बगैर उसे अपने ही हाथ का स्पर्श विचित्र लगता हैं । वह हमेशा विचारों में खोई-खोई सी रहती हैं । ''इस कहानी में दो तरफ की बाते हैं । एक तरफ वह लड़की जो अपंग होते हुए भी आगे बढ़ना चाहती हैं । दूसरी तरफ उसके पिता और भाई उसको साहस देने की जगह उस पर दया दिखाते हैं, उसको अपंग होने का एहसास कराते है, उसे संपत्ति देना चाहते है, परन्तु वह साफ इंकार कर देती है ।''[४९] अत: विकलांगता से न हारकर अपना हौसला बढ़ाये रखने का कार्य इस चरित्र के माध्यम से किया हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

मीरिया शारीरिक रुप से विकलांग चरित्र हैं । वह अत्याचार से पीड़ित हैं । वह मेहनती और स्वाभिमानी स्त्री हैं । दया के प्रति घृणा करनेवाली स्त्री हैं । अपने कार्य व्यवहार में प्रविण स्त्री है ।

'मरीज नम्बर सात' - धर्मवीर भारती :

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से मनुष्य की असहय पीड़ा और रोग का चित्रण इस कहानी में किया हैं । बीमारी से तड़पता हुआ और अपनी जिन्दगी अस्पताल में बीताने वाला

व्यक्ति समाज से सहानुभूति चाहता है । परन्तु सहानुभूती तो दूर की बात उसे परिवार से तक दया और स्नेह नहीं मील पाता । लेखक ने अमानवियता का चित्रण इस कहानी में किया हैं । बीमारी से विकलांग व्यक्ति की दर्द भरी 'दास्ताँ' इस कहानी में उजागर की हैं । अस्पताल में पड़ा हुआ और शारीरिक दर्द से पीड़ित व्यक्ति के प्रति अमानवीयता के व्यवहार को लेखकने इस कहानी में अभिव्यक्त किया हैं ।

'मरीज नम्बर सात' का मरीज नम्बर सात -

इस कहानी में शारीरिक दृष्टि से विकलांग व्यक्ति की विकलांगता दुर्घटनाजन्य हैं । उसके दोनों हाथों में फ्रैक्चर हैं । लकड़ी की पट्टियाँ बाँधी हुई है । इतना ही नहीं तो करवट बदलने से भी वह लाचार हैं । उसे काफी तेज बुखार रहता हैं । वह अत्यंत बेचैन सी अवस्था में अस्पताल के बिस्तर पर लेटा रहता हैं । शारीरिक पीड़ा से ग्रस्त इस मरीज को एक बेन्सन नामक नर्स का सहारा मिलता हैं । अत्यंत व्याकुल अवस्था में वह फूट-फूट कर रो पड़ता हैं । दिन-ब-दिन उसकी तकलीफ बढ़ती ही जाती हैं । वह एक रात को तो संज्ञा-हीन लगभग मूर्छित-सा पड़ा रहता हैं । अत: उसे विकलांगता के कारण जीवन और मौत एक-सा ही हैं । वह उस तकलीफ से छूटकारा पाना चाहता हैं । लेखक का यह वक्तव्य यहाँ बड़ा मार्मिक लगता हैं । ''जिन्दगी और गहरी परतों में उतर कर न एक है न अनेक । वह सबों में अलग एक तीसरी ही सत्ता हैं । जिसे हम जीते नहीं जो हमारे आधार से जीति है । हम उससे निरन्तर संघर्ष करते हैं, लड़ते हैं, हारते है और खामोश हो जाते हैं ।'' [५०] इस प्रकार दुर्घटनाजन्य विकलांगता के कारण मनुष्य जिंदगी में पूरी तरह से टूट जाता हैं । स्तब्ध-सा खामोश, निश्चेष्ट पड़ा रहता हैं । उसका एक हाथ नीचे झुलने लगता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

मरीज नम्बर सात बिमारी से विकलांग चरित्र हैं । वह असह्य वेदना से त्रस्त हैं। वह पारिवारिक स्नेह और सहानुभूति से दूर हैं । परन्तु नर्स से मिली सहानुभूति से खुश हैं ।

'पात्रता' - के.पी.सक्सेना 'दुसरे' :

सक्सेना 'दुसरे' जी द्वारा लिखित यह एक लघुकथा हैं । प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने विकलांगता प्रमाणपत्र देनेवाले जिला अस्पतालों का यथार्थ चित्रण किया हैं ।

विकलांगता के प्रमाण को लेखक ने इस कहानी में प्रस्तुत किया हैं । विकलांगता का प्रमाण कम होने के कारण एक युवक अपने हाथ का अंगुठा काटता हैं । क्योंकि विकलांगता का प्रमाण कम होने के कारण उसे विकलांग कोटी में नहीं रखा जाता । इसलिए वह विकलांगता का प्रमाण बढ़ाकर प्रमाणपत्र लेना उचित समझता हैं । अत: एक बेबस युवक के चरित्र को व्यक्त करनेवाली यह कहानी हैं ।

'पात्रता' का अनाम नौजवान :

इस कहानी का अनाम नवयुवक का दाहिना हाथ अपाहिज था । वह जिला अस्पताल में विकलांगता प्रमाणपत्र लेने को जाता हैं । चिकित्सक उसके विकलांग भाग को देखकर कहता हैं, सिर्फ पच्चीस प्रतिशत अपंगता का केस हैं, इसमें तुम्हें कोई सरकारी छूट नहीं मिलेगी । तब वह डॉक्टर से विनित भाव से कहता हैं, कुछ तो करिए साहब ताकि विकलांग कोटे में चपरासी की नौकरी मिल जायेगी । परन्तु डॉक्टर नहीं मानता । तब वह हताश होकर बाहर जाता हैं और ऑपरेशन थिएटर में घुसकर अपना अँगूठा काट लेता है । डॉ.व्यास त्रिपाठी जी ने एक स्थान पर कहा हैं, ''विकलांगता एक अनामंत्रित घटना हैं । यह जन्मजात हो सकती है और दुर्घटना के कारण भी ।''[५१] लेकिन यहाँ विकलांगता को आमंत्रित घटना कहना होगा । क्योंकि स्वयं व्यक्ति अपने शरीर का कोई भाग काटता हैं तो उसे मानसिक विकलांगता भी कहा जा सकता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

इस कहानी का अनाम नवयुवक शारीरिक रुप से विकलांग है । वह अविचारी चरित्र हैं । बेकारी से हताश हैं । उसकी विकलांगता उसके द्वारा आमंत्रित विकलांगता हैं।

'कटे हाथ में हथियार' - मृदुला सिन्हा :

मृदुला सिन्हा जी की यह कहानी विकलांगों को निडरता से आगे बढ़ने का हौसला प्रदान करनेवाली कहानी हैं । सकलांग व्यक्ति से बढ़कर यह कार्य एक विकलांग व्यक्ति कैसे करता हैं । इसका चित्रण इस कहानी में अत्यंत मार्मिक रुप से किया हैं । इस विकलांग व्यक्तित्व के द्वारा सम्पूर्ण विश्व को नयी दिशा प्रदान की हैं । एक विकलांग व्यक्ति की

मेहनत और जिजीविषा को लेखिकाने अत्यंत खूबी से व्यक्त किया हैं । ईश्वर भी क्या- क्या खेल खेलता हैं । दोनों हाथों की उंगलियाँ औश्र आधी हथेली भी नहीं दी ।''

'कटे हाथ में हथियार' का मंगल -

इस कहानी में मंगल शारीरिक रुप से विकलांग हैं । उसके दोनों हाथ कटे हुए हैं । वह डॉ.आलोक को भगवान मानता हैं । वह एक स्थान पर कहता हैं, ''भगवान को किसने देखा है, पर कहीं दिख जाए तो आपकी तरह होगा ।''[५२] अपाहिज भीख मांगकर अपना निर्वाह करता हैं । दोनों हाथों से विकलांग होने के कारण कोई कार्य नहीं कर सकता । वह डॉ.अलोक से बहुत अपनेपन से पेश आता हैं । वह नौवीं कक्षा तक पड़ा लिखा था । कलम बिठाते ही वह सर्वप्रथम 'ॐ' लिखता हैं । उसके बाद कविताएँ भी लिखता है । उसके काव्य सृजन के कारण पत्रकार, छायाचित्रकार, इलेक्ट्रॉनिक कैमरा तक उसके पास पहुँचता हैं। अत: विकलांगता के बावजूद भी उसकी जिन्दगी मिसाल बन जाती हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

इस कहानी का मंगल दोनों हाथों से विकलांग चरित्र हैं । वह डॉ. अलोक के प्रति श्रध्दावत और नम्र हैं । वह कुछ नया कर दिखानेवाला साहसी चरित्र हैं । मानव को ही भगवान मानता हैं । वह विकलांगता से उदास परन्तु मंजिल को हासिल करनेवाला चरित्र हैं ।

४.३.१.३.२ पैर :

मनुष्य के पाँच कर्मेंद्रियों में से पैर यह एक महत्वपूर्ण कर्मेंद्रिय हैं । पैर के बीना मनुष्य चल नहीं सकता, दौड़ नहीं सकता । अत्याचार के प्रति लड़ नहीं सकता । इसलिए पैर को मनुष्य के जीवन में बहुत महत्व का स्थान हैं । पैर के बीना कोई कार्य आम व्यक्ति के जैसा कुशल नहीं हो सकता । बीना पैरोंवाले लोगों की सुश्रूषा एक स्थान पर रहकर करनी पड़ती है । कष्टदायी काम वह नहीं कर पाता उसे पूर्णत: दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता हैं । परन्तु कुछ ऐसे विकलांग लोग हैं जो बिना पैर के भी अपनी मंजिल पाकर ही रहते हैं । अपना हौसला बुलंद रखते हैं । इनकी यह शारीरिक कमजोरी दुर्घटनाजन्य अथवा जन्मजात भी हो सकती हैं । परन्तु यहां हम दुर्घटनाजन्य विकलांग चरित्रों की जानकारी लें रहें हैं ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में पैर से विकलांग चरित्रों की सृष्टि अधिक मात्रा में हुई हैं । लेखकों ने ऐसे चरित्रों का निर्माण कर हिंदी कथा साहित्य को एक नया आयाम प्रदान किया हैं। बिना पैर के जीवन अधूरा हैं । 'परकटा परिन्दा' का विभु, 'लढ़ाई' का अनाम चरित्र, 'पड़ाव' का अद्या, 'बैसाखी' का सुवृत्त, 'पुष्पहार' का सुबेदार, 'खोटे सिक्के' का अनाम मजदूर, 'लिफ्ट' का साइकिलवाला, 'बैसाखी' का अब्बा, 'स्वयंवर' का गोपाल, 'फरिश्ते' का मटरुवा आदि विकलांग चरित्र अपनी विकलांगता के बाद भी आम व्यक्ति के जैसी जिन्दगी जीते हैं । ये सभी पैर से विकलांग चरित्र हैं ।

'परकटा परिन्दा' - गिरिराजशरण अग्रवाल -

गिरिराज शरण जी द्वारा लिखित कहानी 'परकटा परिन्दा' में बालक की घुटनभरी स्थिति का चित्रण किया हैं । एक बस दुर्घटना में विकलांग हुए बच्चे की कथा को इस कहानी में व्यक्त किया हैं । विकलांगता के कारण उसके चूर हुए सपनों को लेखक ने अभिव्यक्त किया हैं । जिन्दगी के प्रति नाउम्मिद बालक की स्थिति, उसकी असह्य वेदना उसका प्रकृति प्रेम आदि का चित्रण प्रस्तुत कहानी में किया हैं ।

'परकटा परिन्दा' का विभु :

विभु नामक छोटे बालक की एक बस दुर्घटना में बायी टांग कट जाती हैं । वह प्रकृति प्रेमी हैं । उसी दुर्घटना में उसे अपनी माँ को खो देना पड़ता हैं । वह स्वयं को जब अस्पताल में पाता हैं । अपनी माँ की अनुपस्थिति देखकर वह मानसिक और शारीरिक स्तर पर स्वयं को अपंग महसूस करता हैं । वह अपनी बहन से कहता है, ''दीदी, यहां कितनी घुटन लग रहीं हैं । देखों न उन बच्चों को वे कितने उल्लास से दौड़ते हुए, स्कूल जा रहे हैं। दीदी, मैं चल नहीं सकता न दौड़ भी नहीं सकता किन्तु दूसरों को चलते हुए देखकर पैरों का अहसास तो कर ही सकता हूँ । दीदी, तुम मुझे उस भीड़ भरे बाजार में जा रखो जहाँ लोगों को मैं उनके पैरों से चलता हुआ देख सकूं ।''[५३] वह मन ही मन निश्चय करता हैं खूब पढ़कर डॉक्टर बनकर गाँव के किसी अस्पताल में मरीजों की सेवा करेगा। इस प्रकार बस एक्सीडेंट के कारण इस विकलांग बच्चे के शरीर में सिर्फ सोचने की शक्ती रह जाती हैं। कुछ करने की शक्ति समाप्त हो जाती हैं। वह स्वयं को अकेला महसूस करता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी का विभु बस दुर्घटना से विकलांग बालक हैं । वह घुटन और अकेलेपन के अहसास से अस्वस्थ हैं । वह प्रकृति से असीम प्रेम करने वाला हैं । विकलांगता के बाद जिंदगी से टूट जाता हैं ।

'लढ़ाई' - मोहन राकेश :

'लढ़ाई' कहानी के माध्यम से एक विकलांग व्यक्ति के जीवन संघर्ष की करूण कथा को व्यक्त किया हैं । उसका व्यक्तिगत संघर्ष सामाजिक संघर्ष का रुप धारण करता हैं । ऐसी अवस्था में उसकी व्याकुलता अधिक स्पष्ट और असंतोष अधिक मुखरित हो जाता हैं । वह अपने आत्मबल पर इस स्थिति को स्विकारता हैं । क्रांती के अग्रदूतों में से एक होना चाहता हैं । सामाजिक, राजकिय और आर्थिक समस्याओं का सामना करते हुए ऐसे कई विकलांग व्यक्ति अपनी मंजिल हासिल करते हैं । ऐसे व्यक्ति के संघर्ष को देखकर मिश्र जी का यह कथन याद आता हैं, ''आम व्यक्ति की अपेक्षा विकलांग व्यक्ति को अपने जीवन में ज्यादा संघर्ष करना पड़ता हैं । उसे ऐसी आदत पड़ जाती हैं कि संघर्ष ही उसका जीवन बन जाता हैं ।''[५४]

'लढ़ाई' का अनाम चरित्र :

'लढ़ाई' एक अपाहिज व्यक्ति की कहानी हैं । लेखक ने उसे 'वह' संबोधित किया हैं। बायें पैर से अपाहिज व्यक्ति अपनी आस्था और विश्वास पीछे छोड़कर स्टेशन की ओर जाता हैं । वह अपने चारो ओर मंडराती हुई कड़वी अनुभूतियों से दूर पहुँच जाना चाहता हैं। अटके हुए हृदय को स्थिर कराना चाहता हैं । वह अपने मानसिक क्रोध से परे भागना चाहता हैं । उसे ऐसा लगता हैं कि जिन्दगी उसका मजाक उड़ा रही हैं । उसके बायें पैर के टखने की हड्डी जो दो सप्ताह पूर्व टूट चुकी थी और चलते समय बूरी तरह से दर्द करती हैं । फिर भी पैर घसीटता हुआ वह चलता रहता हैं । उसके लिए एक स्थान पर बैठना तक असह्य होता हैं । वह कहता हैं, ''बैठ जाने का मतलब हार जाना, मान लेना और परिस्थितियों के सामने आत्मसमर्पण कर देना।''[५५] उसे अनेक बार बेकारी का सामना करना पडता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

इस कहानी का अनाम चरित्र पैर से विकलांग है । वह जीवन में कई बार संघर्ष का सामना कर चुका हैं । उसे बैठना, हारना या रुकना मंजूर नहीं अनेक समस्याओं में से गुजरकर मंजिल तक पहुँचने में सफल होता है । क्रांतिकारी बनकर देशसेवा करने की चाहत लिए हुए हैं ।

'फरिश्ते' - सूर्यबाला -

हिंदी साहित्य जगत की लेखिका सूर्यबाला जी द्वारा लिखित कहानी 'फरिश्ते' में समाज में होनेवाला अन्याय-अत्याचार का चित्रण किया हैं । अमीरों द्वारा गरीबों पर होनेवाले अन्याय-अत्याचार और गुलामी का चित्रण लेखिका ने इस कहानी में व्यक्त किया हैं । इतना ही नहीं तो मनुष्य को आई हुयी विकलांगता के कारण उसकी उपेक्षा और गरीबी का चित्रण किया हैं । ''सूर्यबाला ने अपनी कहानी फरिश्ते के माध्यम से हमारे समाज की सभ्यता, खोखलेपन पर करारा व्यंग्य किया हैं ।''[५६] सामाजिक विषमता को व्यक्त करनेवाली यह कहानी हैं ।

'फरिश्ते' का मटरुवा :

मटरुवा एक गरीब परिवार का छोटा बालक हैं, उसके पिताजी खून के झुठे इल्जाम में जेल की सजा भुगत रहे हैं । माँ पेट के लिए एक धनी परिवार में काम करती हैं । मटरुवा भी उसी परिवार के कुन्नू बाबू को खिलवाने का काम करता हैं, जबकि उसकी उम्र हँसने खेलने की हैं । परन्तु गरीबी के कारण मटरुवा को हँसना, खेलना, पढ़ाई, बचपना कुछ भी नसीब नहीं । एक दिन कुन्नु बाबु के साथ खेलते-खेलते उसके कहने पर जामून के पेड़ पर चढ़कर पके हुए जामूनों का तोड़कर कुन्नू को देता हैं। परन्तु जामून तोड़ते समय कुन्नू उस डाली को निचे से हिलाता हैं । अकस्मिक हिलाने से मटरुवा धप्प से निचे गिरता हैं और बेहोश हो जाता हैं । इस दुर्घटना में उसकी एक आँख और एक पैर भी विकलांग हो जाता हैं । मटरुवा किसी प्रकार का इल्जाम कुन्नू पर नहीं लगाता । क्योंकि वह नौकर था । वह अपनी माँ का धीरज बँधाता हुआ कहता हैं, ''एक आँख से भी उतना ही देख सकते हैं जितना दूसरी से... और पैर के लिए डॉक्टर लोगों ने कहा ही हैं कि हड्डी जुड़ जायेंगी और

एक पैर से भचक भचककर आराम से जिन्दगी बसर कर सकता हूँ ।''[५७] एक बालक को परिस्थितीवश विकलांगता भुगतनी पड़ती हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी का मटरुवा शारीरिक रुप से विकलांग चरित्र हैं । माँ की खुशी के लिए नाचकर, गाकर कुन्नू बाबू को खिलाता हैं । वह गरीबी से परेशान परन्तु परिस्थिती से मजबूर हैं ।

'पड़ाव' - नफीस आफरीदी :

प्रस्तुत कहानी में कहानीकार ने एक मुस्लिम परिवार की आर्थिक तथा पारिवारिक स्थिति का चित्रण किया हैं । उसी प्रकार विकलांग व्यक्तियों की मानसिक और शारीरिक पीड़ा को भी व्यक्त किया हैं । एक विकलांग व्यक्ति स्वयं की विकलांगता के बावजूद भी दूसरों को धीरज देने का कार्य करता हैं । विकलांगता की वजह से बिखरे हुए परिवार का चित्रण इस कहानी में किया हैं । अन्याय, अत्याचार को सहकर अपनी जिंदगी गुजारने का प्रयास इस कहानी में दिखाई देता हैं । इस कहानी के संदर्भ में डॉ.जितेन्द्र कुमार सिंह जी ने कहा हैं, ''कहानीकार ने खाला के माध्यम से समाज को एक सीख दी हैं कि कुछ लोग ऐसे हैं जो अन्याय के खिलाफ अपनों को भी छोड़ देते हैं ।''[५७]

'पड़ाव' का अद्या :

अद्या प्रस्तुत कहानी का विकलांग चरित्र हैं । वह दोनों पैरों से अपाहिज हैं । एक दुर्घटना में अपाहिज हो जाता हैं । भीतर ही भीतर कुछ उथल पुथल सी महसूस करता हैं । कार दुर्घटना के कारण उसकी शारीरिक हानी होती हैं । वह कहानी के रावसाहब और उनके परिवार को बचाने के लिए अपनी टांगें गंवा बैठता हैं । विकलांगता के बावजुद भी स्वाभिमानी व्यक्तिव के रुप में पांच सौ रुपये लेने से इनकार करता हैं । एक्सीडेण्ट के बाद समाचार पत्रों में अद्या के साहस की बड़ी जोरों पर चर्चा होती हैं । बैसाखियों के सहारे चलनेवाला अद्या अपनी पुत्री के प्रेम में रो पड़ता हैं । अस्पताल में आने के बाद उनको स्वयं का ही घर अपरिचित सा लगता हैं । वह विकलांगता के बाद परिवार तथा समाज में भी सहानुभूति के पात्र मात्र रहता हैं । ''अद्या बेटे थे और अपंग होकर उनकी सहानुभूति के पात्र

पहले से अधिक बन गए थे ।''[५९] इस प्रकार विकलांगता के कारण उनके स्वभाव में भी परिवर्तन आता हैं । वह बहुत चिढ़कर स्वयं को अत्यंत हारा हुआ समझता हैं।

चारित्रिक विशेषताएँ :

अद्या दुर्घटना के कारण शरीर से विकलांग हो जाता हैं । वह साहसी और उदारवादी हैं । स्वाभिमानी और निडर हैं । समाज और परिवार में मात्र दया का पात्र है।

'बैसाखी' - डॉ.श्री.प्रसाद :

प्रस्तुत कहानी के द्वारा लेखक ने एक विकलांग बालक की व्यथा और मेहनत को व्यक्त किया हैं । अपंगत्व की पीड़ा को सहते हुए अपनी मंजिल तक पहुँचनेवाला यह बालक आज के युग के अनेक बालकों के लिए प्रेरक है । उसका समझदार व्यक्तित्व उसे सामाजिक प्रेम और आदर के पात्र बनाता हैं । अनेक समस्याओं का सामना करनेवाला यह बालक हमेशा प्रसन्न रहता हैं । शारीरिक पीड़ा को भूलकर समाज में कुछ कर दिखाने की उम्मीद लिये हैं ।

'बैसाखी' का सुवृत्त :

स्कूल में पढनेवाला सुवृत्त शारीरिक रुप से विकलांग बालक हैं । वह दो फर्लांग की दूरी बैसाखी के सहारे पार कर स्कूल में जाता हैं । एक रेल दुर्घटना में उसका पैर कट जाता हैं । इसलिए बैसाखी के सहारे ही जिंदगी भर चलता रहता हैं । पढ़ाई और गणित विषय में अत्यंत तेज बुध्दिवाला यह बालक मेहनती और समझदार भी हैं । लेखक के शब्दों में ''सुवृत्त तेज तो था ही । पैर कट जाने पर उसका ध्यान दूसरी तरफ गया । उसने अपने को पढ़ाई के लिए समर्पित कर दिया । वह न केवल स्कूल में प्रसिध्द हुआ, बल्कि प्रदेश के मेधावी लड़कों में भी उसका नाम आ गया । आदमी मेहनत से क्या नहीं कर सकता ।''[६०] उसका सहपाठी जब उसे 'लंगड' कहता है तब उसके दिल पर काफी गहरा घाव होता है । उसकी तेज बुध्दि, नम्र भाव, समझदारी आदि से प्रसन्न होकर विशेषकर उसकी पढ़ाई पर खुश होकर वार्षिकोत्सव में स्कूल के अध्यक्ष और प्रधानाचार्य पांच सौ रुपयों का पुरस्कार देकर उसका सम्मान करते हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

'सुवृत्त' इस कहानी का शारीरिक दृष्टि से विकलांग चरित्र हैं । वह मेहनती और समझदार बालक हैं । गणित विषय में प्रवीण हैं । वह समाज और परिवार में भी प्रेम और आदर का पात्र हैं । अपंगत्व की पीड़ा के बावजूद भी प्रसन्न हैं।

'खोटे सिक्के' - मन्नू भन्डारी :

मन्नूजी द्वारा लिखित कहानी 'खोटे सिक्के' में मध्य वर्गीय मानव की आर्थिक स्थिति का चित्रण किया हैं । देश में व्याप्त विषमता और सामाजिक वर्ग व्यवस्था को लेखिका ने इस कहानी में व्यक्त किया हैं । कामगार वर्ग की वास्तविकता के दर्शन इस कहानी के द्वारा होते हैं । उसी प्रकार समाज में विकलांगों का स्थान और उनकी होनेवाली उपेक्षा की ओर भी लेखिकाने संकेत किया हैं । दिन रात मेहनत करनेवाले मजदूर वर्ग की वास्तविकता का चित्रण इस कहानी में मिलता हैं ।

'खोटे सिक्के' का मजदूर :

प्रस्तुत कहानी का मजदूर शारीरिक रुप से विकलांग हैं । उसकी दोनों टांगे कट गई हैं । इसी अवस्था में अपने परिवार का निर्वाह और जिम्मेवारी निभाना उसके लिए अत्यावश्यक हो जाता हैं । टकसाल पर काम करते समय एक दिन एक मजदूर की दोनों टांगे कट जाती हैं । इसलिए परिवार का गुजारा करने के लिए उसकी पत्नी हाथ जोड़कर टकसाल के उच्च अधिकारी खन्ना साहब से याचना करती हुयी कहती हैं, ''उसे कोई छोटा मोटा काम दे दीजिए सरकार, नहीं तो हम भूखों मर जाएँगे । बैठे-बैठे वह खोटे सिक्के चुनने का काम कर देगा ।''[६१] परन्तु वह अधिकारी नहीं मानता । वह उसकी उपेक्षा कर कहता है, ''टांगे कट गई तो हमने पांच सौ रुपये मुआवजे के दे दिए और हम कर भी क्या सकते हैं ? यो इन लोगों को यहां बिठाना शुरु कर दे तो टकसाल अपंगों का अड्डा ही बन जाए । आए दिन ही तो यहां ऐसी दुर्घटनाएँ होती रहती है।''[६२] इस प्रकार लोग विकलांगों को उपेक्षा की दृष्टि से देखते हैं । समाज विकलांगों के प्रति दयाभाव और सहानुभूति नाम मात्र के लिए भी नहीं रखता ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

इस कहानी का मजदूर टकसाल की मशीनपर काम करते समय शरीर से विकलांग हो जाता हैं । वह विकलांग होकर भी परिवार का निर्वाह करने के लिए टकसाल में काम करने की चाहत रखता हैं ।

'लिफ्ट' - महीप सिंह :

प्रस्तुत कहानी में आम आदमी की पीड़ा को व्यक्त किया हैं । आम आदमी की पीड़ा आम आदमी ही जान सकता हैं । इसके दर्शन इस कहानी में होते हैं । किसी बीमार व्यक्ति को कोई सकलांग सहारा नहीं देता परन्तु विकलांग व्यक्ति सहारा देता हैं। तब उस बीमार व्यक्ति की आधी बीमारी उसकी सहानुभूति से भाग जाती हैं । परंतु कोई सामंतशाही सकलांग इस प्रकार नजरांदाज करता है तो उससे बुरी बात और क्या हो सकती हैं । अत: लेखक ने मानवीय संबंधों में आयी दरार को प्रस्तुत किया हैं ।

'लिफ्ट' का साइकिलवाला :

प्रस्तुत कहानी में शारीरिक रुप से विकलांग चरित्र का चित्रण आया हैं । लेखक ने उसे किसी विशेष नाम से संबोधित नही किया । वह व्यक्ति एक पैर से अपाहिज हैं । कहानी में उसे अनेक स्थान पर साइकिलवाला संबोधित किया हैं। लेखक के शब्दों में ''पुरानी सी, गन्दी सी साइकिल के पास एक गंदा सा आदमी खड़ा था । गंदे कपड़े, गंदा चेहरा और एक पैर लंगड़ा । दाहिनी बगल के नीचे उसने बैसाखी दबा रखी थी ।'' [६३] यह विकलांग व्यक्ति कथावाचक को सहारा देना चाहता हैं । बकई धनवान व्यक्ति ने अपनी कार से गुजरते हुए भी सहारा नहीं देता परन्तु यह विकलांग साईकिलवाला अपनी बगल में बैसाखी दबाकर उसे आग्रहपूर्वक साईकिल पर बिठाकर एक पैर से साईकिल चलाकर अस्पताल तक पहुँचाता हैं । साइकिलवाले का एक पैर कटा हुआ हैं। अत: स्वयं विकलांग होकर भी दूसरों का सहारा बन जाता हैं । अर्थात मानवीय संबंधों की गरीमामयी घटना को लेखक ने व्यक्त किया हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी में एक पैर से अपाहिज साइकिलवाले का चरित्र हैं । अपनी विकलांगता के बावजूद भी दूसरों का सहारा बन जाता हैं । उसका यह कार्य सकलांग व्यक्तियों से भी श्रेष्ठ हैं । शरीर से कमजोर परंन्तु इन्सानियत से जिंदा व्यक्ति हैं ।

'बैसाखी' आनन्द कुरेशी :

इस कहानी में आम व्यक्ति की पारिवारिक समस्या को व्यक्त किया हैं । नयी पीढ़ी की औपचारिकता और कृत्रिमता को भी इस कहानी मे स्पष्ट किया हैं । वृध्द व्यक्ति की मानसिक स्थिति, वृध्दत्व में भी कष्ट करने की आवश्यकता, विकलांगता की समस्या आदि पर प्रकाश डाला हैं । अपने ही परिवार में अपने ही पुत्र से सहानुभूति और अपनत्व का अभाव इस कहानी का मूल उद्देश्य हैं । माँ-बाप अपने बच्चों के लिए सबकुछ बेच देते हैं । ताकि बड़ा अधिकारी बन सके ।

'बैसाखी' का अब्बा :

प्रस्तुत कहानी का अब्बा शरीर से विकलांग हैं । उसकी एक टांग जंग में लढ़ते समय टूट गई थी । वह बैसाखी के सहारे चलता हैं । उसे अपने बच्चे की जिंदगी संवारने के लिए ऐसी अवस्था में काम करना पडता हैं । इतना ही नहीं तो वह दमे का मरीज हैं । जब वह काम से अपने घर लौटता है तो उसे घर में सब कुछ बदला हुआ नजर आता हैं । वह बेटे की पढाई के लिए घर की छोटी-छोटी वस्तुएं तक बेचता हैं । ताकि बेटा पढ़कर एक दिन बाबू बने । परन्तु उसका बेटा एक दिन अपने दोस्तों को दावत देता हैं । वह अपने पिताजी को हिदायत देता है, ''और देखना, खुदा के वास्ते बैठक में मत आना । अम्मी यह मिठाई लो, करीने से थाल में सजाकर रख दो ।''[६४] इस बात से अब्बाजी आहत होकर बैसाखी के सहारे डगमगाते हुए कदमों से दूसरी तरफ चले जाते हैं । इस प्रकार वर्तमान युवा पिढ़ी अपने माँ-बाप के प्रति उत्तरदायित्व निभाने में नाकाम है । विकलांगता की वजह से उसका बेटा तक उसकी उपेक्षा करता हैं।

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी का अब्बाजी पैर से विकलांग चरित्र हैं । बच्चे की पढ़ाई के लिए सब कुछ बेचता हैं । वह खुद के बेटे के द्वारा उपेक्षित हैं । बेटे के दुर्व्यवहार से चिंतित हैं । वह दमें का मरीज होते हुए भी मेहनत करता हैं ।

'स्वयंवर' - मालती जोशी :

हिंदी साहित्य जगत की सुविख्यात लेखिका मालती जोशी की कहानी 'स्वयंवर' में अपाहिज मनुष्य की पीड़ा को व्यक्त किया है । अचानक हुई दुर्घटना के कारण मनुष्य जब अपाहिज हो जाता हैं तो उसकी मानसिक और शारीरिक त्रासदी का चित्रण इस कहानी में किया हैं । मानव की स्वार्थान्धता की ओर लेखिका ने इस कहानी के माध्यम से संकेत किया हैं । विकलांग व्यक्ति के अन्तर्मन की टूटन को इस कहानी में अभिव्यक्त किया हैं । दुर्घटना की वजह से पड़े शरीर के घाव तो भर जाते हैं परन्तु मन के घाव भरने के लिए बरसों लग जाते हैं । मानव की शारीरिक और मानसिक त्रासदी का चित्रण इस कहानी में व्यक्त किया हैं ।

'स्वयंवर' का गोपाल :

प्रस्तुत कहानी का गोपाल रेल दुर्घटना में शरीर से विकलांग हो जाता हैं, इस दुर्घटना में पूरे छः घंटे मलबे के नीचे दबा रहता है । उसका दाया जबड़ा और माथा भी एक तरफ बुरी तरह से झुलस जाता हैं । उसके चेहरे की जिंदगीभर की हंसी लुप्त हो जाती है । जैसे किसी पट्टियों से जकड़ा हुआ एक मानव शरीर हैं । उसके चेहरे की प्लास्टिक सर्जरी भी करवानी पड़ती हैं । इस अनचाही दुर्घटना के कारण आयी हुयी विकलांगता से वह मानसिक रुप से भी टूट जाता है । लेखिका के शब्दों में, ''कौन कहेगा कि इनका दायां पांव घुटने से नीचे संज्ञा शून्य हैं । शारीरिक और मानसिक रुप से कितना झेला हैं उन्होंने फिर भी हमेशा हंसते हुए रहते हैं ।''[६५] कहा जा सकता हैं कि विकलांगता अभिशाप नहीं हैं । वह स्वयं विकलांग होकर भी दूसरों को आर्थिक और भावनिक रुप से सहारा देता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

इस कहानी का गोपाल शरीर से विकलांग चरित्र हैं । विकलांगता के कारण मन से टूटा हुआ हैं । शरीर और मन पर अनेक घाव झेलकर भी हमेशा हंसमुख नजर आता हैं ।

४.३.१.३.३ चेहरा :

चेहरा मानव शरीर का अत्यंत महत्वपूर्ण भाग हैं । चेहरा मनुष्य के व्यक्तित्व का आईना हैं । कोई इन्सान गूंगा रहा तो भी चलेगा ताकि कम से कम वह चेहरे की भाव भंगिमा से अपने भावों को व्यक्त करता हैं । सुन्दर चेहरे की चाहत हर किसी को होती हैं। फिर वह पुरुष हो अथवा स्त्री हो । सब सुंदर चेहरे की चाहत रखते हैं । इतना ही नहीं तो स्त्रियाँ अपना चेहरा सुन्दर करने के लिए न जाने क्या-क्या उपाय करती हैं । आजकल पुरुष तक अपने चेहरे का सौन्दर्य बनाए रखने के लिए विभिन्न प्रकार के उपाय करते हैं । पुरुष सुन्दर चेहरेवाली स्त्री के प्रति आकर्षित होते हैं । तो सुन्दर पुरुषों को देखकर आकर्षित होनेवाली स्त्रियाँ भी आज कम नहीं हैं । पत्नी के रुप में सुन्दर चेहरेवाली पत्नी चाहनेवाला पुरूष काली तथा कुरूप युवतियों को नापसंद करते हैं । परन्तु समाज में कुछ कुरुप अथवा सांवले रंगवाली स्त्रियाँ भी देखने को मिलती हैं। यह स्त्रियाँ मन-ही-मन कुण्ठित हो जाती हैं । अपनी खामियों को स्वयं जानती हैं ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में ऐसी कुरुप चेहरेवाली स्त्रियों का चित्रण अनेक साहित्यकारों ने किया हैं । कुरुप चेहरेवाली तथा आकस्मिक दुर्घटना के कारण विकलांग चरित्रों का चित्रण कुछ कहानियों में आया है । 'एक रोटी जली हुई' की शोभा दुर्घटना के कारण कुरुप चेहरेवाली विकलांग स्त्री हैं । जिसका चरित्र यहां स्पष्ट किया हैं ।

'एक रोटी जली हुई' - महेंद्र दवेसर 'दीपक' :

इस कहानी में टूटे हुए पारिवारिक सम्बन्धों को कहानीकार ने उजागर किया हैं । विकलांग सन्तान की वजह से पति पत्नी के बीखरे हुए संबंधों का चित्रण इस कहानी में किया हैं । वर्तमान युग के नौकरी पेशा करनेवाले माता-पिता और उनके बच्चों की मानसिक अस्वस्थता का चित्रण इस कहानी में अत्यंत संवेदनशील होकर किया हैं । सन्तान की विकलांगता के कारण टूटे हुए पति पत्नी के सम्बन्धों को उजागर कर समाज के सामने एक

नया विषय रखने का प्रयास किया हैं। विकलांगता के कारण पति के विवाहबाह्य सम्बन्धों को लेखक ने यहाँ उजागर किया हैं।

'एक रोटी जली हुई' की शोभा :

प्रस्तुत कहानी की शोभा शारीरिक रुप से विकलांग हैं । अचानक हुई दुर्घटना में शोभा का चेहरा जल जाता हैं । अर्थात सुन्दर दिखनेवाली शोभा कुरुप दिखने लगती हैं। शोभा के ऑफिस में अचानक लगी आग के कारण उसका चेहरा और एक आँख भी विकलांग हो जाती हैं । शोभा का कुरुप चेहरा देखकर उसका पति विवाहबाहय सम्बन्ध स्थापित करता हैं । घर के सभी पैसे लेकर भाग जाता हैं । अत: शोभा को धोखा देता है । वह शारीरिक रुप से जली थी परन्तु अपने पति के विवाह बाह्य सम्बन्धों से मानसिक स्तर पर पूरी तरह से उसका दहन होता हैं । वह अपना चेहरा छुपाती रहती हैं। वह कभी बाहर नहीं निकलती इस घटना का उसके मस्तिष्क पर भी गहरा आघात होता हैं । वह पति की याद में रात-बेरात रोती सुबकती रहती हैं । वह अपने बच्चों को बिलखकर कहती हैं, ''किसी तरह से कहीं से अपने डैडी को ढूँढकर लाओ ।''[६६] आर्थिक रुप से परिवार को मदद करने के लिए कम्पनी में काम करनेवाली स्त्री को परिवार की ओर से खासकर पति की ओर से क्या मिलता हैं । ऐसा लगता है कि वह किसी की पत्नी नहीं वह एक खाद्य पदार्थ हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

शोभा शारीरिक रुप से विकलांग चरित्र हैं । वह पति के विवाह बाह्य सम्बन्धों से मानसिक स्तर पर टूट जाती हैं । वह परिवार के लिए जी-तोड़ मेहनत करनेवाली स्त्री हैं । वह पति से जुड़ी रहना चाहती हैं ।

४.३.१.३.४ ऐंठन :

अंगों का ऐंठापन यह शारीरिक विकलांगता का एक प्रकार हैं । यह एक प्रकार से शरीर की असामान्य दिखनेवाली ऐंठन हैं । शारीरिक ऐंठन को 'स्पाटिक' भी कहा जाता हैं । यह विकलांगता कभी-कभी दुर्घटना के कारण तो कभी-कभी शरीर की बेतरतीब गतियों से भी आती हैं । इस विकलांगता के कारण शरीर का कोई भी भाग विकृत दिखाई देता हैं ।

यह विकलांगता कुछ लोगों के लिए बहुत कठिन होती हैं । इस प्रकार की विकलांगता के कारण मनुष्य की शारीरिक क्षति होती हैं । मनुष्य को बोलने- चलने में तथा कोई छोटा-मोठा काम करते समय गंभीर समस्या का सामना करना पडता हैं । उसे अनेक बार अपने चेहरे के भावों को नियंत्रित करना भी कठिन हो जाता हैं । एक स्थान पर कहा गया हैं कि, ''स्पास्टिक समुदाय किसी के ऊपर भी जीवन भर के लिए भार नहीं बनना चाहता, लेकिन अपने संदर्भ में वे ठीक समय पर विशेषज्ञों की मदद की अपेक्षा करते हैं ।''[६७] इस विकलांगता के कारण शरीर का कोई भी भाग ऐंठ जाता हैं ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में इस प्रकार की विकलांगता बहुत कम मात्रा में पाने को मिलती हैं । इस प्रकार की विकलांगता की ओर साहित्यकारों का उतना ध्यान नहीं गया जितना जाना चाहिए था । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में ऐसी विकलांगता नाम मात्र के लिए देखने को मिलती हैं । जैसे - 'गुलकी बन्नो' की गुलकी ।

'गुलकी बन्नो' - धर्मवीर भारती :

इस कहानी में लेखक ने पति द्वारा उपेक्षित स्त्री की करुण गाथा को व्यक्त किया हैं। इतना ही नहीं तो समाज द्वारा भी उपेक्षित स्त्री अंत में छोटे-छोटे बच्चों द्वारा भी सतायी जाती हैं । मानवीय संवेदना को व्यक्त करनेवाली यह कहानी हैं । अत्यंत करुणामयी प्रसंगों के सहारे भारती जी ने इस कहानी को हृदयस्पर्शी बनाया हैं । मनुष्य जीवन की व्यक्तिगत जीवन की गहराइयों तक प्रवेश कर उसकी अंतरिक पीड़ा को स्पष्ट करने का उनका यह प्रयत्न अत्यंत सराहनिय हैं । इस कहानी के संदर्भ में कहा गया हैं कि, '' 'गुल की बन्नो' गल्प में सत्यबोध का साक्षात्कार करनेवाली परिपक्व रचना हैं । यह कहानी मूल्यों के लिए संघर्ष की भूमी से उठी हैं । वह इस गलित, मूल्यहीन समाज में व्यक्ति के संघर्ष पराजय, दैन्य और स्वीकार का संघर्ष करती हैं।''[६८]

'गुलकी बन्नो' की गुलकी :

प्रस्तुत कहानी की गुलकी शरीर से विकलांग हैं । उसका शरीर ऐंठा हुआ हैं । मरा हुआ बच्चा पैदा होने के कारण उसका पति उसे सीढ़ियों से ढकेल देता हैं । जिन्दगी भर के लिए वह अपाहिज बनी रहती हैं । उसका कूबड़ निकलता हैं । उसके शरीर की ऐंठन

जिंदगीभर कम नहीं होती । वह एक डण्डे से अपनी हिफाजत करती है । उसे अपनी कुबडी पीठ के कारण उठते-बैठते समय बहुत दर्द होता हैं । इसके संदर्भ में यह वक्तव्य, ''गुलकी बन्नो' मानवीय संवेदना को गहरा अर्थ देती हैं ।''[६९] वह पति के क्रूर व्यवहार से ससूराल छोड़कर आती हैं । तब सारा समाज उसे पागल समझता हैं । उसकी विकलांगता इस वक्तव्य से भी प्रस्तुत होती है, ''२५ साल की गुलकी के चेहरे पर झुर्रियाँ गिरने लगी थी और कमर के पास दोहरी गयी थी। जैसी अस्सी वर्ष की बूढ़ी हो ।''[७०]

चारित्रिक विशेषताएँ :

इस कहानी की गुलकी कूबड़ के ऐंठन से विकलांग चरित्र हैं । वह समाज और परिवार द्वारा उपेक्षित हैं । आत्मनिर्भर और निडर चरित्र हैं ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में कुछ ऐसे चरित्र हैं जिन्हे दुर्घटनावश विकलांगता भुगतनी पड़ती हैं । ऐसी विकलांगता के कारण अधिकांश चरित्र मानसिक स्तर पर भी टूटे हुए नजर आते हैं, साहित्यकारों ने ऐसे चरित्रों के प्रति कुछ स्थानों पर सहानुभूतिपूर्ण और संवेदनशील होकर उनके दर्द को व्यक्त किया हैं । परन्तु कुछ स्थानों पर किसी विशेष नाम से संबोधित न करते हुए अपाहिज या गूंगा ऐसा संबोधित किया हैं।

४.३.१.४ वृध्दत्वजन्य विकलांगता :

वृध्दावस्था आने के साथ ही कई लोग विकलांग हो जाते हैं वृध्दत्व की विभिन्न प्रकार की बिमारिया इस विकलांगता के कारण होती हैं । वृध्दावस्था के साथ ही विभिन्न प्रकार की समस्या सामने खड़ी हो जाती हैं । वृध्दावस्था के कारण व्यक्ति समाज और परिवार की जिम्मेवारी से अलग सा हो जाता हैं । वृध्दों को पहले जैसी इज्जत और आदरभाव समाजवालों की ओर से अथवा परिवारवालों की ओर से भी नहीं मिल पाता । उसकी आवश्यकता सिर्फ दो रोटियों तक ही सिमित रह जाती हैं । वृध्द लोगों को अपनी आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक व शारीरिक अशक्तता को लेकर अपने ही लोगों के द्वारा दिए गए अपमान और तिरस्कार का ही सामना नहीं करना पड़ता बल्कि उनके मन में ऐसे सवाल तक आते हैं कि परमात्मा अब तो उन्हें जल्दी ही इस धरती से उठा ले । इस प्रकार

वृध्द लोग अपनी वृध्दता की पीड़ा और त्रासदी के कारण मानसिक स्तर पर भी टूट जाते हैं। वे अनेक समस्याओं को सहकर अपना जीवन व्यतीत करते हैं ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी साहित्य में वृध्दत्व के कारण आई हुयी विकलांगता से विकलांग चरित्रों का प्रचूर मात्रा में सृजन किया हैं । वृध्दत्वजन्य विकलांगता को अनेक साहित्यकारों ने अपनी कहानियों में उजागर किया हैं । वृध्दावस्था की स्थिति प्रत्येक मनुष्य के जीवन में आ जाती है । इसलिए ऐसे चरित्रों के माध्यम से उनके व्यक्तित्व से समाज को परिचित करना साहित्यकारों का उद्देश्य हैं। 'उसका आकाश' का आशिष, 'अनेकान्त' के पापाजी, 'माटी सुबरन बरसाय' के काका, 'पगलाया हुआ' की बड़ी अम्मा आदि अनेक चरित्र वृध्दत्व की विकलांगता से त्रस्त नजर आते हैं।

'उसका आकाश' - राजी सेठ

हिंदी साहित्य जगत की लेखिका राजी सेठ द्वारा लिखित कहानी 'उसका आकाश' में वृद्ध पीढ़ी की आहट और उदास मानसिकता, उनका अकेलापन, शारीरिक जर्जरता की पीड़ा, आत्मनिर्वासन की पीड़ा तथा उनकी उपेक्षित जिंदगी को केंद्र में रखकर यह कहानी लिखी हैं । यह एक पारिवारिक कहानी हैं । बूढ़े हो जाने पर अपने ही बच्चे माँ-बाप के साथ कैसा व्यवहार करते हैं, इस पीड़ा को लेखिका ने इस कहानी में व्यक्त किया हैं । डॉ.सौ.प्रतिभा धारासूरकर ने इस कहानी के संदर्भ में कहा है कि, ''प्रस्तुत कहानी में एक मरीज का चित्रण हैं, जिसके जिस्म का आधा हिस्सा काम से गया हैं । लकवे से ग्रस्त होने पर उसका सोचना, अकेलापन, काम न कर पाने की स्थिति दूसरों की मदद लेने की मजबूरी आदि का चित्रण हैं ।''[७१]

'उसका आकाश' का आशीष

प्रस्तुत कहानी में आशीष नामक वृध्द व्यक्ति का चित्रण हैं । उसे लकवा मार गया हैं। उसका एक हाथ और एक पाँव अत्यंत संवेदनशून्य हैं । न हिलता हैं न डूलता हैं । वह एक कमरे में पड़ा रहता हैं । वह जानता है उसे जितना आकाश दिखता हैं, उतना ही नहीं हैं । एक छोटे से कमरे में उसका दम घुटता हैं । उसका पोता एक बार उसे जल्दी-जल्दी दूध पिलाता हैं । तब सारा दूध गले तक गिर जाता हैं । आशीष को चिपचिपाहट महसूस

होती हैं । वह सोचता है कि, ''ऐसी मौत के किनारे क्या ठहरना इससे भीषण मौते वह अपने भीतर रोज जीता हैं... साथ लिए फिरता है ।''[७२] अत: वह जिंदा होते हुए भी मृत के समान महसूस करता हैं । इस चरित्र के सन्दर्भ में कहा हैं, ''उसका आकाश में पक्षाघात का रोगी जीवन के प्रति अपनी अदम्य जिजीविषा और जीवन पर छा जा रही मृत्यु की छाया से त्रस्त हैं ।''[७३]

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी का आशीष पक्षाघात से विकलांग चरित्र हैं । वह अकेलेपन के एहसास से उदास हैं । वह अपने परिवार से स्नेह तथा आत्मीयता की अपेक्षा करता हैं। वह जिंदा होते हुए भी स्वयं को मृत के समान समझता हैं ।

'माटी सुबरन बरसाय' - कमलेश्वर :

अपनी कामयाबी में नाकाम होने के कारण मनुष्य जब भीतर ही भीतर टूट जाता हैं । तब उसके सपने चकनाचूर हो जाते हैं । अपने जीवन के अनेक जटिल प्रश्न उसके सामने खडे हो जाते हैं । मनुष्य के टूटे हुए सपनों का चित्रण लेखक ने इस कहानी में व्यक्त किया हैं । जिन्दगी के प्रत्येक क्षेत्र में अनास्था, अविश्वास, मूल्यहीनता और कृत्रिमता के दर्शन होते हैं । मनुष्य इन सभी बातों के सामने असह्य और मजबूर हो जाता हैं । ईमानदार व्यक्ति ऐसी विराट और क्रूर परिस्थिति के साथ नहीं लड़ सकता इस बात की ओर इस कहानी में संकेत किया हैं । परिस्थितिवश हताश और निराश मानव की पीड़ा को प्रस्तुत कहानी के द्वारा अभिव्यक्त किया हैं ।

'माटी सुबरन बरसाय' के काका :

प्रस्तुत कहानी के काका शारीरिक दृष्टि से विकलांग हैं । पक्षाघात के कारण उनको यह विकलांगता भूगतनी पड़ती हैं । एक पैर पूरी तरह से अकड़कर रह जाता हैं। उनका शारीरिक स्वास्थ्य बूरी तरह से गिर जाता हैं । गले में कफ घड़घड़ाता हैं । उनका लकवाग्रस्त पैर सूखी लक़डी की तरह अकड़कर ठंडा पड़ता हैं । इस कहानी का लाखन अपने लकवाग्रस्त काका की दवा का इन्तजाम करने के लिए रुपये नहीं जुटा पाता काका की खाँसी भी जोर पकड़ती हैं । दिन-ब-दिन उनका स्वास्थ्य गिरता जाता हैं। खाँसी पल भर भी आराम

नहीं लेने देती । उनको बुखार तो ऐसा चढ़ता हैं कि उतरने या कम होने का नाम ही नहीं लेता । लाखन कुछ रुपये जुटाकर उनका इलाज कराता हैं। लेकिन कुछ फायदा नहीं होता । इस बिमारी की वजह से उनका देहान्त हो जाता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी के काका पक्षाघात से विकलांग हैं । वृध्दत्व की अनेक बीमारियों के साथ जूझता हुआ यह चरित्र हैं । आर्थिक स्थिति कमजोर होने से समय पर उसका इलाज नहीं हो जाता ।

'अनेकान्त' - राजेश जैन :

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने वर्तमान मानव की स्वार्थी और मतलबी प्रवृत्ति को व्यक्त किया हैं । आज का व्यक्ति इतना स्वार्थान्धता में डूब गया है, कि अपने माँ-बाप की जानलेवा बीमारी के लिए भी आर्थिक व्यवस्था नहीं जुटा पाता । अत्याधुनिक चिकित्सा उपलब्ध होने के बाद भी वह परम्परागत या घरेलु इलाज कराता हैं । ताकि अपना आर्थिक नुकसान न हो जाए । अत: रुपयों के आगे वह अपने मर रहे माँ बाप की किमत तक जान नहीं पाता । परिवार की आर्थिक स्थिति सामान्य होते हुए भी स्वार्थी प्रवृत्ति के कारण आज का मानव स्वंय के खून के रिश्ते को भी नहीं निभा पाता । वृध्दावस्था में आयी हुयी विकलांगता की पीड़ा को लेखक ने अत्यंत संवेदनशील होकर अभिव्यक्त किया हैं ।

'अनेकान्त' के पापाजी :

प्रस्तुत कहानी का दीपक के पिताजी अंगाघात के कारण विकलांग हुए हैं । वह अपने पिताजी के ऑपरेशन के लिए रुपयों का प्रबंध नहीं कर पाता । इस बीमारी की वजह से उनकी आवाज भी बंद हो जाती हैं । अत: वे न बोल पाते हैं और न चल पाते हैं । बिस्तर पर ही उनकी सुश्रूषा करनी पड़ती हैं । वृध्दावस्था के कारण उनका शरीर भी निस्तेज और अक्षम बनता हैं । किड़नी चेंज और एंजोप्लेस्टी कराने की सलाह डॉक्टर देता हैं । इतना ही नहीं तो डॉक्टर कहता हैं, ''जीवन काल कुछ साल और बढ़ जाएगा, लेकिन यह अपेक्षा न करें कि स्थायी तौर पर उनका स्वास्थ्य पहले की तरह चंगा चुस्त दुरुस्त हो पाएगा ।''[७४]

परन्तु दीपक खर्चे के बारे में सोचता हैं । इस बात को वह व्यवहारिक बनकर सोचता हैं । अत: पिताजी की चिकित्सा के लिए वह खर्च नहीं करता ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी के पापाजी लकवे से ग्रस्त विकलांग हैं । उनका शरीर भी वृध्दत्व के कारण जर्जर हो चुका हैं । विकलांगता के साथ ही किड़नी और एंजोप्लास्टी की समस्या से ग्रस्त हैं । यह पूरी तरह से दूसरों पर निर्भर चरित्र हैं ।

'पगलाया हुआ' - किशोर :

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने निन्यानबे बरस की वृध्द महिला की व्यथा को व्यक्त किया हैं । जो पैरालिसिस ग्रस्त हैं । उसकी बीमारी के बारे में सोचकर उसकी बहु उसकी वसीयत पर दस्तखत लेना चाहती हैं । वर्तमान मानव की स्वार्थान्धता और संवेदनहीनता को लेखक ने यहाँ व्यक्त किया हैं । वृध्दत्व की समस्या को लेखक ने इस कहानी में चित्रित किया हैं । दादी को छोड़कर जाते समय पोते की उदासिनता को भी लेखक ने इस कहानी में भावपूर्ण शब्दों में अभिव्यक्त किया हैं । अत: पारिवारिक लगाव और टूटते मानवमूल्यों का चित्रण इस कहानी में किया हैं ।

'पगलाया हुआ' की बड़ी अम्मा -

प्रस्तुत कहानी की बड़ी अम्मा अंगाघात की बीमारी से विकलांग हैं । निन्यानबें बरस की उस वृध्दा को घरवाले अस्पताल में ले जाना उचित नहीं समझते । बड़ी अम्मा पक्षाघात से तंग आकर पीड़ा से कराहती हुई कहती हैं, ''पूर्व जन्म में मैंने ढेर-सा पाप किया था, सो-सो उसी का फल भोग रहीं हैं ।''[७५] अम्मा स्वयं के बेटे से भी बढ़कर आदित्य का लालन-पालन करती हैं । इसलिए वह उसके प्रति काफी लगाव रखता हैं । विकलांगों की सेवा को तप और त्याग से भी बढ़कर माननेवालों की भी आज समाज में कमी नहीं हैं । परन्तु कभी-कभी परिवारवाले ही उनकी उपेक्षा करते हैं । ''विकलांगता को जन्म देनेवाले रोग के होने पर तत्काल उपचार व शल्य चिकित्सा करके विकलांगता को रोकना ।''[७६] इस वक्तव्य से मिश्रजी ने विकलांगता से बचने के लिए यह राय देकर लोगों को सचेत किया हैं।

चारित्रिक विशेषताएँ -

बड़ी अम्मा पक्षाघात से विकलांग वृध्द महिला चरित्र हैं। वह परिवार के प्रति स्नेह जताती हैं । वह वसीयत की मालिक हैं ।

४.३.२ मानसिक विकलांग चरित्र :

मानसिक विकलांगता अथवा विक्षिप्तता, पागलपन या उन्माद की अवस्था एक प्रकार की रोगग्रस्तता हैं । यह विक्षिप्तता इतनी स्पष्ट हैं कि वह पहचाने बिना नहीं रहतीं । इसमें व्यक्ति की अवस्था इतनी असामान्य होती है कि उसे अलग करके किसी संस्था में रखने की आवश्यकता होती हैं । प्राय: उसे स्वयं की विकार युक्तता का बोध नहीं होता । उसका विश्वास संभ्रमपूर्ण होता हैं । उद्देश्य अति विकृत होता हैं । मनोविश्लेषणवादियों के मतानुसार उनमें अहम, पराहम, काम तथा बाहय वास्तविकता के बीच से असंगत व्यवहार एवं विचार करने लगता हैं । उसे सामाजिक व्यवहार अस्वीकार्य हो जाता हैं । बोध एवं गति दोनों के क्षेत्र में उग्र लक्षण प्रकट होते हैं । उसकी कार्यकुशलता घटने लगती हैं । मुखाकृति, बोलने, बैठने, खड़े होने, चलने सभी में असामान्यता आने लगती हैं । वह वास्तविक परिस्थितियों से हटने लगता हैं । वह बहुत अशांत रहने लगता हैं । उसे लगता हैं कि पागल होता जा रहा हैं । धीरे-धीरे उसका विचार प्रवाह असंगत और अति असामान्य हो जाता हैं । विचारों की कमी के कारण मूर्खतापूर्ण व्यवहार करने लगता हैं । नये-नये शब्द गढ़ता हैं । झूठ-मूठ की हंसी हंसता हैं । एक बार तो वह शिशुओं की तरह बोलने चलने लगता हैं । स्वयं कपडे भी नहीं पहन सकता और न मलमूत्र त्यागने पर नियंत्रण रख सकता हैं । वास्तविक वातावरण से हटकर अपने आप में सिमट जाता हैं । ऐसी स्थिति किसी प्रिय व्यक्ति या पदार्थ अथवा पद के खो जाने या किसी की प्राप्ति में असफलता पाने के कारण कुछ लोगों को भुख न लगना या खाने में जहर मिलाने का भ्रम हुआ करता हैं । इतना ही नहीं तो शासनाधिकारियों, व्यावसायधिकारियों, सहयोगियों, मित्रों, परिवार आदि के ओर से अत्याचार के भ्रम होते हैं । व्यक्ति अपने को विशेष प्रतिभाशाली, महान धर्मप्रवर्तक, महान नेता आदि समझने की भूल करता हैं । मनोविक्षिप्तवाला विकार व्यक्ति के जीवन में आंशिक

असामर्थ्य उत्पन्न करता हैं । विक्षिप्त व्यक्ति का चेतन अवचेतन आंतरिक संघर्ष के कारण अपनी योग्यता के अनुरुप सफलता नहीं पा सकता।

मानसिक विकलांगता का सम्बन्ध मस्तिष्क से होता हैं । भय, संवेदनात्मक तनाव अंतर्द्वंद्व तथा विफलता के समय इस प्रकार की विकलांगता उत्पन्न होती हैं । यह विकलांगता प्रकट होते ही मनुष्य के व्यवहार में असंतुलन दिखाई देता हैं । यह विकलांगता उत्पन्न होने के कारण मनोरोग होता हैं । यदि पुन:स्वस्थ होकर सामान्य व्यक्ति सा और संतुलित व्यवहार कर सकता हैं । मानसिक विकलांगता तथा मनोविकृतियाँ जटिल और गम्भीर प्रकार की समस्या हैं। इस में व्यक्ति की मानसिक और शारीरिक क्रियाओं में मेल नहीं होता । उनका व्यवहार निरर्थक और विश्वास असंगत होता हैं । ऐसे रोगियों के लिए विक्षिप्त अथवा पागल भी कहा जाता हैं ।

स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथासाहित्य में ऐसे अनेक चरित्र पाये जाते है, जिनमें दमन, कुण्ठा या अन्य किसी कारणवश मानसिक संतुलन बिगड़ जाता हैं । ''पात्रों की मानसिकता का विश्लेषण भी इसी मनोविज्ञान के द्वारा सम्भव हो सकता हैं । व्यक्ति के अनैतिक मानसिक विकारों का पता मनोविज्ञान से ही होने लगा । मनोविज्ञान ने मनुष्य के असामान्य व्यवहार के पीछे कतिपय महत्वपूर्ण मानसिक विकारों को पहचाना हैं । ये मनोविकार ही व्यक्ति के आचरण को नियंत्रित करते हैं ।''[७७] स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानीकारों ने अपना ध्यान मानसिक दृष्टि से विकलांग चरित्रों पर भी केन्द्रित किया हैं। ऐसे अनेक चरित्र हिंदी कहानी साहित्य में पाये जाते हैं । 'एक रोटी जली हुई' की जैन्नी, 'वो औरत' का गोविन्द, 'जिंदगी और जोंक' की पगली, 'पागल प्रेयसी' की शुभ्रा, 'नंदा काका मुझे क्षमा करना' का नंदा, 'बँधे पाँव का सफर' का कृष्णा की माँ, 'तपिश के मारे' का कृष्ण गोपाल गुप्त, 'छोटू', 'सरहद के पार' का रेहान, 'इब्ने मरियम' का ताहिर, 'पत्थर गली' की फरिदा, 'बबली' का खालिद आदि चरित्र मानसिक रुप से विकलांग हैं ।

'एक रोटी जली हुई' - महेंद्र दवेसर दीपक :

प्रस्तुत कहानी में विकलांग सन्तान की वजह से टूटे हुए मानवीय संबंधों का चित्रण किया है । आधुनिक युग में नौकरी पेशा परिवार में बच्चों की होनेवाली बुरी अवस्था का

चित्रण किया हैं । विकलांगता के कारण परिवार के सदस्यों की मानसिक अस्वस्थता इस कहानी में देखने को मिलती हैं । सन्तान की विकलांगता के कारण पुरुषों के विवाहबाहय संबंधों का चित्रण इस कहानी में किया हैं । लेखक ने वर्तमान मानव की मूल्यहीनता को अभिव्यक्त किया हैं ।

'एक रोटी जली हुई' की जैन्नी :

प्रस्तुत कहानी की जैन्नी मानसिक रूप से विकलांग चरित्र हैं । वह दिखने में अपनी माँ जैसी सुन्दर सुनहरे बाल, बड़ी-बड़ी आँखें, तीखे नयन-नक्शवाली हैं । वह जन्म के सालभर बाद एक भयानक बीमारी का शिकार हो जाती हैं । उस बीमारी में उसकी जान तो बच जाती हैं लेकिन दिमाग नहीं बच पाता । उसके मस्तिष्क पर उस बीमारी का गहरा अघात होता हैं । उसके लिए चौबीसों घंटे एक परिचायक की आवश्यकता रहती हैं । अपनी विकलांग बच्ची के साथ पिता सौतेला जैसा व्यवहार करता हैं। वह घर छोड़कर भाग जाता हैं। गोविन्दराम मिरी का यह वक्तव्य - ''हमारे समाज में विकलांगता को एक कलंक की तरह देखा जाता हैं । इसलिए ज्यादातर लोग अपनी विकलांगता को छिपाने की कोशिश करते हैं । विकलांगों के साथ होनेवाले सौतेले व्यवहार के लिए हमारी यहीं सोच सब से ज्यादा जिम्मेदार हैं ।''[७८] विकलांग बच्चों के लिए विकलांगता के कारण अगर माता-पिता का प्यार नहीं मिल पाये तो वे मानसिक रुप से और अधिक विक्षिप्त होने में देर नहीं लगेगी ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

जैनी मानसिक विकलांग बच्ची हैं । वह भयानक बीमारी की शिकार हो गई हैं । वह सुन्दर परन्तु विक्षिप्त चरित्र हैं । वह शारीरिक और मानसिक रुप से विकलांग हैं ।

'वो औरत' - ललित मोहन बहुगुणा :

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने मनुष्य की विक्षिप्त अवस्था का चित्रण किया हैं । किसी व्यक्ति की विक्षिप्तता को देखकर समाज की तर्कपूर्ण शक्ति का भी चित्रण इस कहानी में हैं। देहात में रहनेवाले एक आम व्यक्ति की देश सेवा की आकांक्षा और उसमें आयी विक्षिप्तता को वहां अभिव्यक्त किया हैं । आम व्यक्ति की पीड़ा और मानसिक विकलांगता को प्रस्तुत करनेवाली यह कहानी हैं ।

'वो औरत' का गोविन्द :

इस कहानी का गोविन्द मानसिक दृष्टि से विकलांग चरित्र हैं । उसकी विक्षिप्तता पूर्व स्थिति सामान्य थी । विक्षिप्तता पूर्व अवस्था में वह आजाद हिंद फौज में एक सैनिक था आजाद हिंद फौज में काम करते समय एक बार बर्मा की लड़ाई में नागासकी पर बमबारी होती हैं । इस बमबारी में बहुत से सैनिकों के साथ गोविंद भी लापता हो जाता हैं । एक बार वह ढाका से अपने गाँव एक पत्र भेजता हैं । फिर आजादी के दस साल बाद भारत आता हैं। जब वह गाँव आता हैं, तब उसकी विक्षिप्त अवस्था को देखकर लोग अपने-अपने तर्क लगाते हैं । लेखक के शब्दों में, ''गोविंद आजादी के दस वर्ष बाद भारत आया था, तब तक वह ढाका में रहा । जब वह गाँव आया तो आधा विक्षिप्त सा था और बाकी जिंदगी वह विक्षिप्त ही रहा ।''[७९] इस प्रकार केवल लापता होने की वजह से यह विक्षिप्तता उसके गले लग जाती हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

गोविंद मानसिक दृष्टि से विक्षिप्त चरित्र हैं । देशप्रेम के कारण आजाद हिंद फौज में सैनिक के रुप में कार्य करता हैं । उसके मन में देश सेवा की तीव्र इच्छा हैं । वह विक्षिप्त परन्तु सजग और बुध्दिमान चरित्र हैं ।

'जिन्दगी और जोंक' - अमरकान्त :

यह कहानी नई कहानी के दौर की श्रेष्ठतम कहानी हैं। मुनष्य की यथार्थ स्थिति का चित्रण इस कहानी में किया हैं । समाजद्वारा घृणित व्यक्ति जिन्दगी को छोड़ना नहीं चाहता हैं। समाज द्वारा की गई विकलांगों की उपेक्षा को अमरकान्त जी ने इस कहानी में अभिव्यक्त किया हैं । विभिन्न प्रकार के कष्ट सहकर जीनेवाले मानव की संवेदना इस कहानी का मूल हैं । निम्नवर्गीय व्यक्ति और सामाजिक विसंगती का सुंदर चित्रण इस कहानी में देखने को मिलता हैं । समाज किसी विकलांग व्यक्ति या आम व्यक्ति का शोषण करना नहीं चूकता । निम्नवर्गीय व्यक्ति की पीड़ा को लेखक ने इस कहानी में अभिव्यक्त किया हैं ।

'जिन्दगी और जोंक' की पगली :

प्रस्तुत कहानी में मानसिक रुप से विकलांग स्त्री का चित्रण हैं । मानसिक दृष्टि से विकलांग होने के कारण उसे अपने कपडों का भी ध्यान नहीं रहता । वह हमेशा निवस्त्र रहती हैं। उसकी विक्षिप्तता का कोई स्पष्ट कारण लेखक ने नहीं बताया । परन्तु समाज के कुछ गुण्डों ने की हुई उपेक्षा का चित्रण इस कहानी में हैं । इस कहानी का रजुआ उस पगली का खयाल रखता हैं वह उसे एक दोने में कुछ-न-कुछ खाने के लिए देता हैं । वह उसको चाहता हैं । विकलांग स्त्री को लेखक ने विशेष नाम से संबोंधित न कर 'पगली' संबोंधित किया हैं । विक्षिप्त अवस्था के कारण वह स्त्री हमेशा इधर-उधर भटकती रहती हैं । वह अपनी विक्षिप्त अवस्था की जिन्दगी बिताने के लिए विवश हैं । डॉ.मिश्र जी ने एक स्थान पर कहा है, ''आम मनुष्य की भाँति विकलांग भी प्यार मुहब्बत आदि में पीछे नहीं रहें।''[८०] इस प्रकार वह स्त्री पगली हैं परन्तु रजुआ को चाहती है । अत: मनुष्य विकलांग हो अथवा सकलांग भाव-भावनाओं से ओत-प्रोत होता है और संवेदनशील भी होता है ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

इस कहानी में पगली मानसिक रुप से विकलांग चरित्र हैं । आज यहां तो कल वहां ऐसी उसकी जिंदगी हैं । देखभाल करनेवाला उसका अपना कोई नहीं । वह समाज द्वारा उपेक्षित हैं । परन्तु जिने की जिजीविषा लिए हुए हैं ।

'पागल प्रेयसी' - रमा सिंह :

इस कहानी में मानसिक दृष्टि से टूटी हुई विकलांग नवयुवती की पीड़ा को व्यक्त किया हैं । टूटे हुए विवाह के कारण उसके मस्तिष्क पर काफी गहरा आघात होता हैं, जिसे वह सह नहीं पाती । मानसिक रुपसे टूटकर किसी शादी शुदा व्यक्ति के प्रति आकर्षित हो जाती हैं । समाज की अविचारी दृष्टि को लेखक ने इस कहानी में व्यक्त किया हैं । अस्वस्थ या टूटी हुई स्त्री को मानसिक विकलांगता से बाहर निकालने की कोशिश भी कभी-कभी असफल होती हैं । ऐसे विकलांग व्यक्ति को समाज पूर्ण रूप से नहीं अपनाता ।

'पागल प्रेयसी' की शुभ्रा :

प्रस्तुत कहानी की शुभ्रा असामान्य मस्तिष्क की नवयुवती हैं । वह टूटे हुए रिश्ते के कारण मानसिक रुप से विकलांग हो जाती हैं । घर में भी वह किसी से डरती नहीं। वह शादीशुदा सूचित बाबू को दिल से चाहती हैं । वह खिड़की से सूचित बाबू को देखती हैं । जब सूचित बाबू खिड़की पर मोठी चादर टाँग देते हैं तब वह बोतल, किताब, कापी, पेंसिल कोई चीज खिड़की पर गुस्से से फेंकती हैं । तब सूचित बाबू भी समझते हैं कि वह पूरी तरह से पागल हैं । डॉ. एम. वेंकटेश्वर जी का यह कथन, ''मानसिक विकलांगता के कारण व्यक्ति जो असन्तुलित व्यवहार करता हैं उसकी स्वयं उस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं होती, मानसिक अक्षमता के कारण न उसमें कोई कुण्ठा होती हैं न ही हीन भावना ।''[८१] शुभ्रा सुचित बाबू के कमरे में जाकर दोनों हाथ उनके गले में डालती हैं । वह हमेशा उनके शरीर सम्पर्क के सान्निध्य की प्यासी रहती हैं । यशवंत सिन्हा ने एक स्थान पर कहा हैं, ''मानसिक मंदता, मस्तिष्कीय पक्षाघात, बहु विकलांगता जीवनभर चलने वाली स्थितियाँ हैं । जिनका उपचार या इलाज नहीं किया जा सकता हैं ।''[८२] परन्तु मैं कहना चाहूंगी आजकल किसी भी बीमारी का इलाज किया जा सकता है । पूरी तरह से ना सही परन्तु नियंत्रित रुप में तो आवश्य हो सकता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

शुभ्रा मानसिक दृष्टि से विकलांग नवयुवती हैं । वह समाज द्वारा ठुकराई गई हैं। विकलांग होते हुए भी एक परिपूर्ण चरित्र हैं । वह शारीरिक और भावनिक प्रेम की प्यासी हैं। गाना सीखने की चाहत है । वह अत्यंत स्नेही और साहसी चरित्र हैं ।

'नंदा काका मुझे क्षमा करना' - विकास मिश्र :

प्रस्तुत कहानी में लेखक ने मानसिक दृष्टि से अविकसित पाँच साल के बच्चे की वृध्दत्व तक की जीवन यात्रा को व्यक्त किया है । विकलांग होते हुए भी मेहनती और ईमानदार व्यक्ति का चित्रण इस कहानी में पाने को मिलता है । विकलांग व्यक्ति की कचोटती हुई भावनाओं को अभिव्यक्त किया हैं । अपने माँ-बाप का सहारा न मिलने के कारण उसकी उमड़ आई भावना इस कहानी में पाई जाती हैं । विकलांग व्यक्ति आत्मनिर्भर

होकर स्वाभिमानपूर्ण अपना जीवन बीताकर आम व्यक्ति के जैसा दूसरों को मदद और दान करता हैं । पाँच साल की अवस्था में ही उसके माँ बाप का सहारा टूट जाता हैं ।

'नंदा काका मुझे क्षमा करना' का नंदा :

प्रस्तुत कहानी में पाँच साल के मानसिक रुप से अविकसित बच्चे का चरित्र हैं । सिर्फ पाँच साल की अवस्था में नंदा को उसके पिताजी उसे एक बाबा के पास छोड़ देते हैं । उसके पिताजी के शब्दों में - ''इस पागल को यहीं शरण दे दिजिए । घर में रहा तो मैं इसकी जान ले लूँगा । दिनभर शरारत करता हैं । आपके यहां रहेगा तो गाय भैंस का सानी भूसा करेगा, सुधर जायेगा ।''[८३] पाँच साल की अवस्था से उसकी वृध्दत्व तक की जिन्दगी गाय-भैसों के साथ ही व्यतीत करता हैं । मानसिक रुप से विकलांग होने के कारण उसके साथ कोई ब्याह नहीं करता । वह पूरे गाँव की गाय-भैसों को चराता था । गाँव के लोग पीपल के पेड़ से नंदा का साल में दो बार ब्याह कराते । इस घटना से वह बहुत दु:खी हो जाता था । वह अकेलेपन की पीड़ा से व्याकुल हो जाता था । उसे अविवाहित जीवन की बात कचोटती थी । वृध्दत्व में वह बीमारी से त्रस्त होकर कराहता हैं।

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी का नंदा मानसिक दृष्टि से विकलांग चरित्र हैं । वह विकलांग परन्तु आत्मनिर्भर हैं । उसका व्यवहार आम व्यक्ति के जैसा ही हैं । वह गाय-भैसों का चरवाहा हैं। माता-पिता के प्रेम से दूर हैं । वह शारीरिक अस्वस्थता में भी मेहनत करने की चाह रखता हैं ।

'बँधे पाँव का सफर' - प्रतिमा वर्मा :

प्रतिमा वर्मा जी द्वारा लिखित कहानी 'बँधे पाँव का सफर' में एक स्त्री की मानसिक अवस्था का चित्रण किया हैं । मानव के बेगानेपन का व्यवहार इस कहानी में व्यक्त हुआ हैं। मनुष्य की छटपटाहट और असफलता की समस्या इस कहानी का मूल हैं । मानसिक दृष्टि से विक्षिप्त स्त्री के साथ किया गया अमानवीय व्यवहार कहानी में लेखिका ने उजागर किया हैं ।

'बँधे पाँव का सफर' का अनाम चरित्र :

इस कहानी में मानसिक दृष्टि से विक्षिप्त स्त्री और उसकी वेदना व्यक्त की गई हैं । लेखिकाने उसे किसी विशेष नाम से संबोंधित नहीं किया । वह अपनी विक्षिप्तता के कारण छोटी बच्ची को बरामदे में सुलाती हैं । बच्ची को गालियाँ देती हैं । एक बार तो गिलास फेंककर मारने से उस बच्ची का खून बहने लगता हैं । वह बेटी और बेटे में भेद करती हैं । खुद की बेटी के साथ भी सौतेली माँ जैसा व्यवहार करती हैं । वह अपनी बच्ची को ताने कसती हैं । कभी-कभी तो गुस्से मे आकर जोर-जोर से चीखकर बेहोश हो जाती हैं । उसे स्वयं का होश तक नहीं रहता । मीरा निजमें ने एक स्थान पर कहा हैं, ''जन्म से पहले, जन्म के समय, अथवा जन्म के बाद मस्तिष्क की कोशिका क्षतिग्रस्त होने के कारण मानसिक विकलांगता आती है ।''[८४] विक्षिप्तावस्था में व्यक्ति को अपने बच्चों तक का ख्याल नहीं आता । वह व्यक्ति हमेशा अपना सन्तुलन खो देता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

इस कहानी का अनाम स्त्री चरित्र मानसिक रुप से विकलांग है । वह एक गैर जिम्मेवार माँ हैं । स्त्री होकर भी बेटी के प्रति दुर्व्यवहार और बेटे के प्रति स्नेहमयी व्यवहार करनेवाला स्त्री चरित्र हैं ।

'तपिश के मारे' - महिप सिंह :

इस कहानी में एक जहीन बालक की मानसिक विक्षिप्तता का चित्रण किया हैं । समाज द्वारा विकलांगों की हुई उपेक्षा को लेखक ने कहानी में व्यक्त किया हैं। सम्पती के लिए भाई के टूटे हुए रिश्ते का अत्यंत संवेदनशील चित्रण इस कहानी में देखने को मिलता हैं । इसलिए इस समस्या से कोई मनोरुग्न होकर मानसिक विकलांगता की त्रासदी का शिकार होता हैं । पारिवारिक बीखराव के कारण मस्तिष्क पर हुआ आघात जो व्यक्ति सह नहीं पाता तब उसके सामने पागल होने के बिना दूसरा कोई चारा नहीं रहता । पारिवारिक टूटते संबंध और समाज द्वारा की गई उपेक्षा और पीड़ा लेखक ने इस कहानी में व्यक्त की हैं, डॉ.हनुमंत शेवाळे जी का यह वक्तव्य अत्यंत सही प्रतीत होता है, ''तपिश के मारे' कहानी में भाई-भाई के रिश्तों में स्वार्थ दिखाई देता हैं । गोपाल के बड़े भाई ने पिताजी की

मृत्यु के बाद परिवार की सारी सम्पत्ति अकेले ने हड़प ली और छोटे भाई गोपाल को घर से बाहर निकाल दिया ।''[८५] इस प्रकार स्वयं का घर छोड़कर जब किसी को दूसरों का सहारा लेना पड़ता हैं तब उसकी मानसिक अस्वस्थता की पीडा इस कहानी का मूल हैं।

'तपिश के मारे' कहानी का कृष्ण गोपाल गुप्त :

कृष्ण गोपाल गुप्त मानसिक दृष्टि से विकलांग चरित्र हैं । दुर्बल हड्डियों वाला, गंदा पायजामा पहनेवाला कृष्ण गोपाल की यह अवस्था उसके बड़े भाई के कारण होती हैं । इस होशियार और दबंग व्यक्तित्व के युवक को उसका भाई घर से बाहर निकाल देता हैं और स्वयं सारी सम्पत्ति का स्वामी बन जाता हैं । इस हादसे को कृष्ण गोपाल नहीं सह पाता । वह कुछ ही दिनों में पागल हो जाता है । पागल जैसी हरकते करता हैं, ''वह सोफे पर बैठा हुआ पागलों जैसी ही हरकते कर रहा था । वह दोनों हाथों की अंजलि बनाकर बार-बार अपने मुह को रगड़ रहा था, जैसे पानी में मुंह धो रहा हो।''[८६] अत: पारिवारिक स्थिति उसे विकलांग बनाती हैं । वह कहीं का नहीं रह पाता । वह मानसिक रुप से टूट जाता हैं । ''मनोवैज्ञानिक एड्लर ने मनुष्य के व्यक्तित्व के निर्माण में पारिवारिक, आर्थिक, शैक्षिक परिस्थितियों के साथ-साथ शारीरिक संरचना को भी विशेष महत्व दिया हैं ।''[८७] इस प्रकार कृष्ण गोपाल गुप्त का पारिवारिक और सामाजिक जीवन असंतुलित रहता हैं । जीवन की जटिलता और आकांक्षा की पूर्ति न होने के कारण वह विक्षिप्त हो जाता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

इस कहानी का कृष्ण गोपाल गुप्त मानसिक विकलांगता का शिकार हैं । उसका विकलांगता पूर्व जीवन मनमौजी रहा हैं । पारिवारिक और आर्थिक अभाव के कारण उसे विकलांगता भुगतनी पड़ती हैं । टूटे हुए परिवार के कारण उसे दूरस्थ व्यक्ति का सहारा लेना पड़ता हैं ।

'हारा हुआ' - शैलेश मटियानी :

शैलेश मटियानी जी द्वारा रचित कहानी 'हारा हुआ' एक सक्षम पहलवान की कहानी हैं । कहानी का प्रमुख चरित्र भारत-पाक विभाजन के समय हिन्दुस्तान आते वक्त कुछ दरिंदों ने अपनी बेटी के साथ किए हुए दुष्कर्म के आघात से विक्षिप्तता की अवस्था तक पहुँच

जाता हैं । ''उनके सामने ही उन दरिदों ने उनकी ८-९ वर्ष की बेटी कंवली की अस्मत लूट लेते हैं इस घटना के कारण गंडामल मानसिक रुप से विक्षिप्त हो जाता है ।''[८८]

'हारा हुआ' का गंडामल :

इस कहानी का चरित्र गंडामल शारीरिक दृष्टि से सक्षम हैं परन्तु दुर्घटना की वजह से वह मानसिक रुप से विक्षिप्त हो जाता हैं । उसकी नजरों के सामने कुछ गुण्डे उसकी छोटी बेटी की अस्मत लूटते हैं । ऐसी अवस्था में वह गुण्डों के छूरों के डर से एक ओर खड़ा रहता हैं । इस घटना से परेशान गंडामल स्वयं के पाँव का जूता निकालकर स्वयं के मुँह पर मारता हैं । वह महसूस करता हैं कि, ''इन्सान हमेशा अपने ही हाथों पराजित होता है । अपनी ही आत्मग्लानि और अपनी ही आत्मवंचना के हाथों।''[८९] गण्डामल खुद के हाथों से पराजित होने की वजह से मानसिक रूप से विक्षिप्त हो जाता हैं । इस चरित्र के सन्दर्भ में डॉ.जितेन्द्र कुमार सिंह जी ने कहा है, ''यह मानसिक विक्षिप्तता ही दुखहरण मोची और उसकी बेटी कैलासी के प्रति गंडामल को उग्र करती है ।''[९०]

चारित्रिक विशेषताएँ -

प्रस्तुत कहानी का गंडामल मानसिक रुप से विक्षिप्त चरित्र हैं । वह बेटी के साथ हुए दुराचार की घटना से विक्षिप्त हो जाता हैं । यह मानसिक स्तर पर टुटा हुआ और खुद के हाथों से खुद हारा हुआ हैं ।

'छोटू' - सत्यराज :

सत्यराज जी द्वारा लिखित कहानी 'छोटू' में मानसिक दृष्टि से विकलांग व्यक्ति का चित्रण हैं । विकलांगता की वजह से परिवार में निर्माण होनेवाली अनेक समस्याओं को कहानीकार ने व्यक्त किया हैं । पागलपन के दौरे में अपने छोटे भाई को मौत के घाट उतार देता हैं । अत: मानसिक विकलांगता का अत्यंत उग्र रुप इस कहानी में प्रस्तुत किया हैं । उसकी विक्षिप्तता का भय परिवार के सभी सदस्यों के मन पर छाया रहता हैं। ''यह कहानी मानसिक विकलांग छोटू की हैं जो बहुत उपद्रव करता हैं । माँ-बाप के लाड़ के कारण उसकी यह विकलांगता और उग्रत्तर होती हैं और अंत में उसकी मृत्यू हो जाती है ।''[९१]

'छोटू' का छोटू -

इस कहानी का छोटू मानसिक विकलांगता का शिकार हैं । उसकी वह विकलांगता जन्म जात हैं । उसकी इस बीमारी के लिए अनेक चिकित्सकों को दिखाया जाता हैं । परन्तु कुछ फायदा नहीं होता । उसका पागलपन बढ़ता ही जाता हैं । उसका पागलपन अत्यंत उग्र रुप धारण करता हैं । एक दिन वह अपने बड़े भाई के दाहिने हाथ की पहली उँगली की पहली पोर ही खाना खिलाते समय तोड़कर चबाने लगता हैं । उसके पागलपन के उग्र रुप के कारण परिवार के सभी सदस्यों पर हमेशा डर छाया रहता हैं । एक दिन छोटू की विक्षिप्तता का असर उसके बड़े भाई पर भी पड़ता हैं । उसका बड़ा भाई जब अपने पुत्र को अस्पताल में ले जाता है, जिसका सन्दर्भ यहां प्रस्तुत हैं । ''मैं बहुत भयभीत हुँ, डॉक्टर मैं उसे जीने नहीं दूँगा, डॉक्टर, साब । मैं उसे जहर देकर मार डालूँगा ।''[९२] एक दिन छोटू पागलपन के दौरे में चूहे मरने की दवा खाता हैं । उसका बड़ा भाई जान बुझकर डॉक्टर को बुलाने नहीं जाता और छोटू का देहान्त होता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

छोटू मानसिक दृष्टि से विकलांग चरित्र हैं । उसकी विकलांगता बहुत उग्र रुप की हैं। वह पूर्णत: दूसरों पर निर्भर हैं ।

'इब्ने मरियम' - नासिरा शर्मा :

नासिरा शर्मा की कहानी 'इब्ने मरियम' भोपाल की गैस दुर्घटना ग्रस्त लोगों की कहानी हैं । दुर्घटना के कारण विस्थापित हुए ताहिर के परिवार को केंद्र में रखकर लिखी गई कहानी हैं । जिंदगी में पूरी तरह खुश ताहिर एक छोटी सी दुकान के सहारे अपने परिवार का भरण-पोषण करता हैं । परन्तु यह दुर्घटना आधे शहर को नष्ट करती हैं । इस दुर्घटना से वह अच्छी तरह ठिक भी नहीं हो पाता कि सुगरा का ससुर सुगरा को अपने घर ले जाने की बात करता हैं । इस कहानी के संदर्भ में डॉ.सोनल नंदनूरवाले ने कहा है, ''लेखिकाने गैस दुर्घटना के कारण निर्माण समस्याओं से जुझते मानव का यथार्थ चित्रण प्रस्तुत किया हैं।''[९३]

'इब्ने मरियम' का ताहिर :

भोपाल में रहनेवाला और छोटी-सी दुकान के सहारे अपने परिवार का गुजारा करनेवाला ताहिर मानसिक रुप से विक्षिप्त चरित्र हैं । उसकी यह विक्षिप्तता दुर्घटना की वजह से हैं । गैस दुर्घटना में उसका परिवार विस्थापित हो जाता हैं । ताहिर की देखभाल के लिए ससुराल से उसकी बेटी सुगरा को बुलाया जाता हैं । परन्तु ताहिर पूरी तरह इस बिमारी से संभल भी नहीं पाया कि सुगरा का ससुर उसे ले जाने की बात करता हैं। ताहिर पागल होकर रास्ते पर घुमता रहता हैं। ''ताहिर का दिमाग खराब होता है और वह अपनी बेटी को पहचान ने से तक इनकार करता है ।''[९४] इस प्रकार ताहिर गैस दुर्घटना और अपनी बेटी को ले जाने की बात से पूरी तरह टूट जाता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ -:

ताहिर मानसिक दृष्टि से विकलांग चरित्र हैं । वह दो बेटियों का पिता हैं । वह विकलांगता के बाद अपनी बेटियों को पहचानने से इनकार करता हैं ।

'सरहद के उस पार' - नासिरा शर्मा :

नासिरा जी की कहानी 'सरहद के उस पार' सांप्रदायिकता पर आधारित हैं । हिंदू-मुस्लिम फसाद के बीच की स्थितियों के बीच एक ऐसे युवक की कहानी हैं जो सुरैया नामक युवती से प्रेम करता हैं । परन्तु वह प्रेम में असफल होता हैं । मनुष्य के मन में भरी हुई राष्ट्रभावना को लेखक ने इस कहानी में व्यक्त किया हैं । अत: राष्ट्रप्रेम तथा देशप्रेम इस कहानी का मूल हैं । बेकारी की समस्या को लेखक ने इस कहानी में चित्रित किया हैं । फसाद के विषाक्त वातावरण का चित्रण इस कहानी में देखने को मिलता हैं ।

'सरहद के उस पार' का रेहान :

प्रस्तुत कहानी का रेहान मानसिक विकलांग चरित्र हैं । परन्तु वह बुध्दिमान हैं । उसके इस विकलांगता की वजह डॉ. सोनल नंदनूरवाले ने प्रस्तुत की हैं । ''रेहान पागल होकर, भेद बुध्दि को विकसित करनेवाली हर चीज को गाली देता हैं । बेकारी, प्रेम में नाकामी और बेवफाई रेहान को पागल-सा कर देती है ।''[९५] रेहान एम.ए. उत्तीर्ण युवक हैं परन्तु बेकारी और प्रेम में असफलता के कारण वह विक्षिप्त हो जाता हैं । वह सुरैया से प्रेम

करता हैं । एक दिन सुरैया की मंगनी किसी दूसरे के साथ हो जाती हैं । वह पागलपन के दौरे में छत पर जाकर बैठता हैं । हिंदूओं को गालियां देता हैं । ''मारे कातिलों को, मेरे कातिलों को । सब नामर्द अंदर बैठे हैं । कोई नहीं बाहर निकलता हैं। यह मेरा वतन हैं । देखता हूँ कौन मुझे जिने से रोकता हैं । हिम्मत हैं तो आओ । निकलो एक-एक का सिर फोड़ दूँगा ।''[९६] उसे नौकरी न होने का भी दर्द है । मुस्लिमों के प्रति हिंदुओं का शक का नजरिया और उससे उत्पन्न वेदना, इस धरती से प्यार सबकुछ उसके मन में ठूँसकर भरा हुआ हैं । पागल होने पर भी वह रामखिलावन की लड़की को मुस्लिम युवकों से बचाता हैं । परन्तु वे बदमाश उसकी हत्या करते हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

इस कहानी का रेहान मानसिक विकलांग चरित्र हैं । वह प्रेम में असफल व्यक्ति हैं । उसके मन में राष्ट्र और धर्म के प्रति प्रेमभाव हैं । वह उच्चशिक्षित परन्तु बेकार युवक हैं ।

'पत्थर गली' - नासिरा शर्मा :

'पत्थर गली' नामक कहानी के आधार पर ही लेखिका ने कहानी संग्रह को शीर्षक दिया है । कहानी की मुख्य पात्र फरीदा मुस्लिम सामंती परिवेश में पली हुई युवती हैं । वह हर प्रकार से योग्य होने पर भी इच्छित शिक्षा प्राप्त नहीं कर पाती । उसका बड़ा भाई सामंती मानसिकता से ग्रस्त हैं और माँ रुढ़िग्रस्त नारी हैं । दोनों मिलकर फरिदा के जीवन को उजाड़ देते हैं । इसलिए फरिदा अपने ही परिवार में अपनों से ही शोषण का शिकार बनती हैं । एक शोषित नारी की करुण कहानी का यथार्थ चित्रण लेखिका ने प्रस्तुत कहानी के माध्यम से किया हैं । नारी की संवेदना को कुशलता पूर्वक चित्रित किया हैं । ''अपने बच्चों के विरुध्द पनप रही चेतना का संकेत इस कहानी में मिलता हैं।''[९७] इस प्रकार से कहानी में स्त्री की वेदना अभिव्यक्त हुई हैं।

'पत्थर गली' की फरिदा :

इस कहानी की प्रमुख चरित्र फरिदा हैं । वह अपनी मनपसंद पढ़ाई नहीं कर पाती है। समाज से कम परन्तु अपने परिवारवालों से ही ज्यादा शोषित हैं । वह सबके आगे कुण्ठित और लाचार बनती हैं । वह अपनी परिस्थितियों के खिलाफ पारिवारिक शोषण के

विरुध्द विद्रोह करती हैं । पर कोई नतीजा नहीं निकलता । सारा घर उस पर अपनी इज्जत का भार डालता हैं । परन्तु वह अंदर से कब की मर चुकी थी । पर परिवार की मर्यादा बचाने के लिए जीती हैं । वह सबका दु:ख-दर्द बाँट लेती हैं । समस्याएँ हल करती हैं । ''अंत में उसका भाई उसे पागल ठहराकर पागलखाने में भरती कराता हैं । जहाँ उसे घर के पागलखाने से अधिक खुला वातावरण मिलता है ।''[९८] अत: परिवारवालों का एक स्त्री के प्रति किया गया घृणास्पद व्यवहार इस कहानी में पाने को मिलता हैं । इन्सान को कभी-कभी जान बुझकर पागल करार दिया जाता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

फरिदा प्रस्तुत कहानी की प्रमुख चरित्र है । वह भाई द्वारा पागल करार दी जाती है । वह विद्रोही परन्तु परिवार तथा समाज द्वारा शोषित स्त्री हैं । वह कुण्ठित और बेबस स्त्री चरित्र हैं ।

'बावली' - नासिरा शर्मा :

'पत्थर गली' कहानी संग्रह की 'बावली' कहानी में सलमा को पानी से भरी बादली के रुप में चित्रित किया हैं । इन्सान का अभावग्रस्त और उपेक्षित जीवन इस कहानी में देखने को मिलता हैं । किसी का प्रेम और अपनापन मिलने पर व्यक्ति के जीवन में होनेवाले परिवर्तनों को इस कहानी का विषय बनाया हैं । परन्तु संतति के अभाव के कारण जब पति-पत्नी के रिश्तों में दरार आती हैं तब इन्सान की मानसिक अस्वस्थता को व्यक्त करनेवाली यह कहानी हैं । संतति सुख के लिए शायद ही कोइ स्त्री अपने जीवनसाथी को दूसरे विवाह के लिए राजी करती हो । इस बात की यह कहानी उदाहरण है ।

'बावली' का खालिद :

खालिद 'बावली' कहानी का प्रमुख चरित्र हैं । वह अपनी पत्नी सलमा के साथ खुश हैं। परन्तु शादी के सात साल बाद भी संतान प्राप्ति न होने के कारण सलमा खालिद को दूसरी शादी के लिए तैयार करती हैं । परन्तु वह अपनी पत्नी को बहुत चाहता हैं । पत्नी का विरह वह सह नहीं पाता । अत: वह मानसिक दृष्टि से विक्षिप्त हो जाता हैं । डॉ.विजय राऊत जी ने एक स्थान पर कहा हैं, ''बावली कहानी में खालिद मानसिक रुग्नता का प्रतीक

हैं । वह माँ और पत्नी इन दोनों के बीच द्वंद्वग्रस्त हो जाता है ।''[९९] वह पत्नी को तो काफी चाहता हैं । परन्तु माँ के सामने दब्बु बन जाता हैं । अंत में वह सुहेला से शादी करता हैं । अत: स्वयं निर्णय नहीं ले पाता । वह औरतों के हाथ की कठपुतली के रुप में इस कहानी में चित्रित हुआ हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

इस कहानी का खालिद मानसिक रुग्न चरित्र हैं । वह स्त्रियों के हाथ की कठपुतली के रुप में इस कहानी में चित्रित हुआ हैं । वह माँ का इकलौता बेटा हैं । अपने जीवन का निर्णय लेने में अक्षम हैं ।

'बाल भगवान' - स्वदेश दिपक :

'बाल भगवान' नामक कहानी में कहानीकार ने एक विक्षिप्त चरित्र को व्यक्त किया हैं । उसकी शारीरिक पारिवारिक और सामाजिक समस्याओं का चित्रण प्रस्तुत कहानी में मिलता हैं । अंधविश्वास और लालच की आड़ में जनता को धोखा देनेवाले लोगों की मानसिक अवस्था का चित्रण इस कहानी में मुख्य रुप से पाया जाता हैं । स्वयं के विक्षिप्त बच्चे का इस्तेमाल कर लोगों का भविष्य बतानेवाले और उसके माध्यम से पैसें कमानेवाले इन्सान को अपने बच्चे का बलि देते हुए भी किसी प्रकार की हिचकिचाहट नहीं होती । अत: मनुष्य की लालची प्रवृत्ति और अंधविश्वास को इस कहानी में चित्रित किया हैं ।

'बाल भगवान' का सिध्दड :

सिध्दड एक मानसिक रुप से विक्षिप्त चरित्र हैं । वह विक्षिप्तावस्था में अपने पेट की भूख मिटाने के लिए मकौड़े मारकर खाता हैं । उसे मकौड़े खाते देखकर कहानी का रत्ने चौधरी पराठा खिलाना चाहता हैं परन्तु वह उसे लड्डू मांगता है । लेखक के शब्दों में ''सिर जितना बड़ा है दिमाग उतना ही छोटा हैं। वह जन्म से ही ऐसा हैं । आयु बढ़ी शरीर बढ़ा लेकिन दिमाग एक छोटे से तले की तरह हमेशा से बन्द हैं । वह पागल नहीं, सीधा भी नहीं, इदर की भाषा में सिद्धड़ हैं ।''[१००] वास्तवत: यह सिध्दड बाल भगवान के नाम से प्रसिध्द होता हैं । उसके परिवारवाले आर्थिक कमाई के लिए उसका प्रयोग करते हैं । उसके मुँह से कुछ बोल निकलवाकर सच होने की वजह से दर्शनार्थी की भीड़ उसकी तरफ लगती

हैं । परन्तु अन्धविश्वास और लालच के कारण इस बच्चे की बलि जाती हैं । इस चरित्र के सन्दर्भ में मानधना जी ने कहा हैं, ''बाल भगवान जैसा चरित्र हिंदी जगत में बड़ी मुश्किल से मिलता हैं । अन्धश्रध्दा का ऐसा भण्डा फोड़ एक विक्षिप्त सिध्दड चरित्र द्वारा लेखक ने हमें सोच की नयी दिशा दी हैं । चरित्र की बुध्दि का विकास न हो तो उसे भगवान कैसे मानते हैं।''[१०१] यह पूरी तरह से विक्षिप्त है न तो वह भगवान हैं और न ही वह किसी का भविष्य जानता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

सिध्दड मानसिक रुप से विक्षिप्त चरित्र है ।वह शरीर से विकसित परन्तु दिमाग से अविकसित चरित्र हैं । वह समाज की अन्धश्रध्दा के कारण भगवान के रुप में पूजा गया हैं । यह परिवार द्वारा उपेक्षित चरित्र हैं ।

'नीली घाटी में खुलती आंख' – नरेश पंडित :

इस कहानी में लेखक ने इन्सान की शारीरिक परिपूर्णता परन्तु दिमागी कमजोरी का चित्रण किया हैं । पाठक तो विश्वास ही नहीं कर पाता कि मानसिक विकलांग व्यक्ति इतना अच्छा कार्य कर सकता हैं । पगलाए हुए कुत्ते को मारकर अनेक लोगों को उसके काटने से बचाना इतना आसान नहीं हैं । इतना ही नही तो लड़कियों की बिक्रि करनेवाले एजंटों को भी वह अत्यंत बुरी तरह से मारकर समाज में एक नया आदर्श स्थापित करता हैं । विकलांग भी अपने सामाजिक दायित्व से मुंह नहीं मोड़ते सकलांगों से अच्छा कार्य कर दिखाते हैं ।

'नीली घाटी में खुलती आंख' का जियालाल :

इस कहानी का जियालाल विक्षिप्त हैं । इसके मौलिक कार्य को देखकर इस पर कोई विश्वास नहीं करेगा कि वह विक्षिप्त हैं । सातमासा जियालाल आठ दस साल की अवस्था तक तो सामान्य बालकों सा ही रहता हैं । परन्तु ''चौदहवें साल मे जियालाल का शरीर अजीब तेजी से बढ़ना शुरु हुआ । उसे गजब की भुख लगने लगी । घर की रोटियां इसके पेट को पूरी नहीं पड़ती और जो कुछ भी इसके सामने पड़ता उसे वह हाजम कर जाता । बाहर चरती गाय भैसों के थनों से दुध और पेड़ों की उँची टहनियों पर लटके मधु मख्खियों के छतों से शहद चटकर जाता था ।''[१०२] वह एक पट्ठे से पागल कुत्ते की खोपड़ी पर ऐसा

वार करता हैं कि कुत्ता वहीं पर ढेर हो जाता हैं । उसकी कुत्तेमार आदत से माँ भी परेशान होती हैं । वह सोचती हैं कि ऐसे कुत्तेमार को कौन अपनी लड़की देगा । डॉ. मानधना का यह कथन, ''जियालाल को जब पता चला कि लहौरी लड़कियों को एजेन्टो के जरिए शहर मे बेचता है, तो उसने उसे भी कुत्ते जैसा ही मारा ।''[१०३] इस प्रकार विक्षिप्त व्यक्ति भी समाज की विभिन्न समस्याओं से गुजरता हुआ भी काबील-ए-तारिफ काम करता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

जियालाल मानसिक दृष्टि से विक्षिप्त चरित्र हैं । विक्षिप्तता के बावजूद भी समाज की सेवा करनेवाला चरित्र हैं । वह समाज की विभिन्न समस्याओं से ज्ञात हैं ।

'बाबा भूतनाथ' आभा दयाल :

कहानीकार ने इस कहानी में मानसिक दृष्टि से विक्षिप्त व्यक्ति को केन्द्र में रखा हैं । उसकी अनेक समस्याओं को उजागर किया हैं । मानसिक संतुलन खो जाने के बाद मनुष्य की हरकतों पर लेखक ने पाठकों का ध्यान खींचा हैं । विक्षिप्तता के दौरे में इन्सान खुद सें डरकर भागता रहता हैं । इसलिए डॉ.मानधना जी का यह कथन यहां प्रतित होता है, ''अत्याधिक डर से उसे ऐसा अहसास हुआ कि उसकी सारी क्रियाएँ रुक गयी । उसे जान लेनी पीड़ा हो रही हैं । वह मीलों बेतहाशा विक्षिप्त सा भागता रहा।''[१०४]

'बाबा भूतनाथ' का बाबा भूतनाथ :

प्रस्तुत कहानी एक अत्यंत कुरुप और विक्षिप्त चरित्र की कहानी हैं । ''एक अमानवीय चेहरा छोटा बालों भरा माथा और घनी मोटी भौंडों में झांकती किसी जंगली जानवर जैसी दहशत भरी छोटी-छोटी आँखें, एक ओर लटकता हुआ गोश्त के लोथड़े सा निचला होंठ...चेहरे पर पड़े सफेद धब्बे और अधिक सफेद हो गए हैं ।''[१०५] जब कोई उसे पहली बार देखता हैं तो भय और वितृष्णा का मिला जुला भाव उसके चेहरे पर दिखता हैं । लोग उसे देखकर डर जाते हैं । उसे भयावह सपने आते है । उसे प्रतिदिन लगता हैं कि असंख्य प्रेत उसका पीछा कर रहे हैं । भयानक, क्रूर, दैत्याकार, पिशाच, काले नर कंकाल, तेज नाखूनोंवाले, टेड़े-मेढ़े कुरुप पंजे उसी ओर फैलाये उसका पीछा कर रहें हैं । डर के मारे वह भागता रहता हैं । उसकी आँख में असहय जलन होती रहती हैं । उसे कुछ दिखाई

नहीं देता । उसी के शब्दों में, ''वो मेरा पीछा लगातार करते आ रहे है । मेरे फेफड़े अब कट जायेंगे... अब दौड़ा नहीं जाता... मेरी पिंडलियों की मांस पेशियाँ तनकर फट जायेंगी, मेरी आँखें उबली पड़ रही हैं।''[१०६] मानसिक संतुलन खो जाने के बाद यह भूतनाथ कई प्रकार की हरकते करता रहता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

भूतनाथ मानसिक रुप से विक्षिप्त चरित्र हैं । वह अजीब-सी हरकते करता हैं । वह हमेशा सहमा-सहमा सा रहनेवाला चरित्र हैं ।

'मायकल लोबो' - गोविन्द मिश्र :

गोविन्द मिश्र जी ने अपनी लेखनी से लिखी हुई कहानी 'मायकल लोबो' तमाम विसंगतियों के बीच मनुष्य की क्षमताओं और विभिन्न प्रकार की समस्याओं को रेखांकित करती है । चरित्रों की दृष्टि से भी यह कहानी सबसे अलग हैं । व्यसनाधिनता से अपना सर्वस्व खो देनेवाला व्यक्ति अगर व्यसनमुक्त होता है तो उसका समुचा जीवन परिवर्तित हो जाता है । इसका यह कहानी अच्छा उदाहरण हैं । मानव पर होनेवाले अत्याचारों का अहसास दिलानेवाली यह कहानी हैं ।

'मायकल लोबो' का लोबो :

लोबो इस कहानी में विक्षिप्त चरित्र के रूप में चित्रित हैं । यह चरित्र हिंदी कहानी के चरित्रों की भीड़ में सबसे अलग चरित्र हैं । पैंट कमीज कोट में कोई बांस का एक पतला टुकड़ा गलति से डाला गया हो और उसमें जान हो ऐसा यह लोबो । ''रंग धूर काला सिगरेट पी-पी कर और भी काला, काले के उपर पीलेपन की गोट, दाँत अंधेरे में चमकती हुई कोई सफेद लहर सी नहीं बल्कि ढहती हुई इमारत की जहां तहां से उखड़ती इटे । हाथ पैर लुंज-पुंजा दाहिने हाथ की दो उंगलियां सिगरेट को बराबर थामें।''[१०७] वह शराब छोड़ने का निश्चय करता हैं । पर शराब छोड़ने के बाद उसे ऐसा लगता हैं कि कभी कान कभी हाथ की उँगलियाँ तो कभी पूरे शरीर में खून की जगह हवा भरी हुई है ।वकालत वह उतनी ही करता है जितने से उसका घर चल सके । शेष समय वह दूसरों के दुःख दर्द में शामिल हो जाता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

लोबो मानसिक रुप से विक्षिप्त चरित्र हैं । वह दूसरों के दु:ख-दर्द में शामिल होता हैं। वह व्यसनाधीन परन्तु अपने जीवन में परिवर्तन लानेवाला हैं । वह निर्वाह के लिए वकालत करता हैं । वह समाज में उपेक्षित चरित्र है ।

'टेपचू' - उदय प्रकाश :

उदय प्रकाश जी द्वारा लिखित कहानी 'टेपचू' एक विक्षित मानसिकता का चित्रण करनेवाली है । पिता की मृत्यु के बाद जो अपनी माँ के सहारे जीवन बीताता है । असाधारण कहानी के माध्यम से लेखक ने असाधारण चरित्र को प्रस्तुत किया है । विक्षिप्त चरित्र की वजह से माँ और डॉक्टर नहीं तो समाज के कई लोग अस्वस्थ रहते हैं । किसी भी असंभव बात को संभव करके दिखानेवाले विक्षिप्त मानसिकता को अत्यंत सूक्ष्मता से लेखक ने इस कहानी में व्यक्त किया है । उसकी हरकतें और भावों को भी उजागर किया है ।

'टेपचू' का टेपचू -

'टेपचू' कहानी का टेपचू दो साल का विक्षिप्त बालक हैं । भूतहा बगीचे को देखकर सभी लोग डरते हैं । किन्तु टेपचू वहाँ से कच्ची अमिया तोड़कर लाना चाहता है। लोग उसे भूत समझते हैं । एक दिन उसकी माँ उसे जलती हुई लकड़ी से पीटती हैं तो वह घर से भाग जाता है । भूख लगने पर वह पुरनिहा तालाब में उलझकर डूबने लगता हैं । तब भैंस वार परमेसुरा उसे 'मछली' समझकर बचाता हैं । पहले तो वह डर जाता हैं कि मछली के बदले यह क्या हैं । टेपचू मरी हुई अवस्था में पड़ता हैं । नाक कान से पानी बहने लगता हैं। निपट नंगा रहता हैं । उसकी पेशाब निकलती है । ''वह इतना घिनौना था कि फिरोजा की जवानी पर गोबर की तरह लिथड़ा हुआ लगता था । पतले-पतले सूखे हुए झुर्रीदार हाथ-पैर, कद्दू की तरह फूला हुआ पेट, फोड़ो से भरा हुआ शरीर । ... लोगों को उससे घिन होती है ।''[१०८] इस प्रकार यह विक्षिप्त टेपचू को अपने नंगे बदन का खयाल तक नहीं रहता । वह हमेशा सहमा-सहमा सा रहता हैं।

चारित्रिक विशेषताएँ :

टेपचू मानसिक दृष्टि से विक्षिप्त चरित्र हैं । हमेशा डरा हुआ सा रहता हैं । वास्तव में वह निडर चरित्र हैं । दिखने में वह विक्षिप्त और भयावह दिखता हैं ।

'खण्डित स्वर' - से.रा.यात्री :

इस कहानी में लेखक ने मानव संबंधों में आयी हुयी संवेदनहीनता को व्यक्त किया हैं । वृध्द और असामान्य लोगों की अनेक समस्याओं को व्यक्त किया है । वर्तमान लोगों की अपने बुजुर्गों के प्रति आस्थाहीनता को लेखक ने इस कहानी में चित्रित किया हैं । अपने बुजुर्गों की मौत के बाद भी वर्तमान पीढ़ी में किसी प्रकार का विशेष परिवर्तन नजर नहीं आता हैं । एक परिवार की वृध्द स्त्री की मौत के पश्चात किसी प्रकार का विशेष परिवर्तन नहीं देखा गया । तब डॉ.शिवरतन मानधना जी का यह कथन यहां सही प्रतित होता है, ''उसके चले जाने से घर में कोई विशेष फर्क नहीं पड़ा।''[१०९]

'खंडित स्वर' की बूढी औरत :

इस कहानी की बूढ़ी औरत विक्षिप्त और अत्यंत कुरुप दिखती हैं । चेहरे पर झुर्रियों का जाल, आँखें चेहरे के लटके मांस में डूबी सी हैं । छड़ी के सहारे चलती हैं । वह बहुत नीचे झुककर चलती हैं । उसकी पीठ पर गढरी जैसी उभरी हैं । बोलते समय उसकी आवाज काँपती हैं । अत: कर्कश और कुरुप दिखनेवाली वृध्दा एक दिन निमोनिया बीमारी की शिकार हो जाती हैं । और उसका देहान्त होता हैं । लेखक का यह कथन, ''दर असल उसका मर जाना ऐसा ही था, जैसे कोई तालाब के स्थिर जल में पत्थर फेंके एक डब्ब की आवाज हो ।''[११०] इस प्रकार यही अनाम वृध्द स्त्री असाधारण तथा विक्षिप्त नजर आती हैं । न तो वह किसी प्रकार का संवाद करती हैं, और न ही सामान्य लोगों सा व्यवहार करती हैं।

चारित्रिक विशेषताएँ :

प्रस्तुत कहानी की अनाम वृध्द स्त्री कुरुप, कर्कश और विक्षिप्त चरित्र हैं । वह असामान्य और अबोल हैं । परिवार द्वारा उपेक्षित चरित्र हैं ।

'हिरालाल का भूत' उदय प्रकाश :

इस काहनी में लेखक ने सामाजिक अव्यवस्था की कटू अलोचना की हैं । असामान्य के प्रति करुणा व्यक्त की हैं । साथ ही अनाथ बच्चों की अनेक समस्याओं को भी उजागर किया हैं । विकलांगों के प्रति समाज का दायित्व इस कहानी का मूल उद्देश्य हैं । पटवारी जैसे लोगों को पाठकों के सामने प्रस्तुत करके उन पर कठोर प्रहार किया हैं । आम व्यक्ति की अथाह पीड़ा और डरावनी यंत्रणा को व्यक्त किया हैं । आम व्यक्ति की वेदना और सामन्तीय लोगों की क्रूरता को इस कहानी में व्यक्त किया हैं ।

'हिरालाल का भूत' - का हिरालाल :

प्रस्तुत कहानी का हिरालाल मानसिक दृष्टि से विकलांग हैं । जब हिरालाल पैदा हुआ था तब उसके मुंह में बत्तीस दात थे । वह रात बड़ी रहस्यपूर्ण और डरावनी थी । इस बच्चे को कहानी की बेला की माँ उठाना चाहती हैं । परन्तु डर के मारे नही उठाती। उसे देखकर ही पसीना छूट जाता हैं । युवावस्था में शादी के बाद उसकी पत्नी उसे एक दिन विचित्र ढंग से रोता हुआ देखती हैं । ''उसका पूरा शरीर सिकुड़ता फिर फैलता और हिचकियों के साथ उसकी घुटी हुई रुलाई बाहर फूट पड़ती । यह एक ऐसा करुण और दर्दनाक रोना था, जिसमें चेहरा ही नहीं, हिरालाल का समूचा शरीर उसके फेफड़े और आत्मा तक शामिल थी।''[१११] वह अपनी पत्नी के नाजायज सम्बन्धों को जानकर भी खामोश बैठता हैं । वह इस विवशता से अंदर ही अंदर टूट जाता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

हिरालाल मानसिक रुप से विक्षिप्त चरित्र हैं । वह अनाथ और समाजद्वारा उपेक्षित चरित्र हैं । वह पत्नी के अनैतिक सम्बन्धों को सहनेवाला चरित्र हैं । वह खुद का दु:ख दर्द सहकर साहस से जीनेवाला हैं ।

'खातिर' - रामकुमार सिंह :

प्रस्तुत कहानी के माध्यम से लेखक ने एक युवक के अन्तर्द्वंद्व को बड़े मार्मिक ढंग से व्यक्त किया है । बेटी की शादी के लिए माँ-बाप की चिंन्ता इस कहानी का मूल उद्देश्य हैं । किसी अजनबी की खातिर भुगते हुए यथार्थ का चित्रण इस कहानी में पाया जाता हैं ।

युवक की मानसिकता और परिवारवालों का दायित्व समाज के सामने रखने का प्रयास इस में किया हैं । इस कहानी के द्वारा मनुष्य के व्यक्तित्व के दो पहलुओं पर प्रकाश डाला हैं ।

'खातिर' का युवक :

इस कहानी का अनाम युवक मानसिक रुप से विक्षिप्त है । वह अपने लिए लड़की देखने जाता हैं । भूखी फटीं आँखोंवाली एक औरत नुमा लड़की उसे दिखाई जाती हैं। उसे देखते ही युवक के मन में घृणा का स्त्रोत फटता हैं । वह मन-ही-मन सोचता हैं कि इससे तो आजकल के हिजड़े अच्छे है । शादी के पहले एक दुजे को समझ लेने के बहाने वह उसके शरीर को छूता हैं । वह उसके साथ शादी करने का वादा भी करता हैं । उसी समय पत्नी बनाने के चक्कर में उसे कसता हैं । कुछ ही क्षणों में उसे क्षत विक्षत कर उसके साथ ज्याददी करता है । वह उसके पिताजी से कहता है, ''वह उसके साथ कल ही शादी करेगा । अपने झूठ बोलने पर भी उसे ताजूब हुआ।''[११२] अत: मानसिक संतुलन खो देने के कारण वह इस प्रकार का अनुचित व्यवहार करता हैं। मानसिक विक्षिप्तता की वजह से अनेक बार वह अपना संतुलन खो देता हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

इस कहानी का युवक मानसिक दृष्टि से विक्षिप्त चरित्र हैं । वह अपने भीतर हमेशा अन्तर्द्वंद्व लिए रहता हैं । यह कामवासना का उद्रेक करनेवाला चरित्र हैं ।

४.३.२.१ हीनता ग्रन्थि :

व्यक्ति कभी-कभी स्वयं को सर्व श्रेष्ठ घोषित करने का प्रयास करता हैं । परन्तु कभी-कभी किसी कमी के कारण हीनता का अनुभव करता हैं । व्यक्ति में कभी-कभी सामाजिक और वैयक्तिक आदर्शों का सामंजस्य सम्भव नहीं हो पाता । इसी विषमता के कारण व्यक्ति में हीनता ग्रन्थि का विकास होता हैं । एडलर के मतानुसार, ''सामान्यत: सभी मनोग्रंथियों का मुख्य कारण हीनता व श्रेष्ठता की ग्रन्थियाँ है ।''[११३] इस प्रकार के चरित्रों को हमेशा हीनता भाव त्रस्त किए रहता हैं । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कथा साहित्य में इन ग्रन्थियों से ग्रस्त चरित्र दृष्टिगत होते हैं। ये चरित्र अहंग्रस्त और कुण्ठाग्रस्त भी होते हैं । अहं की

उपस्थिति के कारण इनमें श्रेष्ठता भी पायी जाती हैं । हीनता से ग्रस्त चरित्र अन्तर्मुखी होते हैं तो श्रेष्ठता से ग्रस्त चरित्र बहिर्मुखी दिखाई देते हैं ।

'चीलगाड़ी' शिवानी :

शिवानी जी द्वारा लिखित कहानी 'चीलगाड़ी' में विधवा स्त्री की करुण व्यथा को व्यक्त किया हैं । यक्षमा की बीमारी के कारण विवाह के सात माह बाद ही वैधव्य भुगतनेवाली स्त्री की कथा इस कहानी का मूल हैं । पति निधन से दु:खी और सामाजिक तथा पारिवारिक कठिनाइयों से गुजरकर हवाई जहाज में इयर होस्टेज पर कार्यरत स्त्री का दृढ़ निश्चय इस कहानी के केन्द्र में हैं । अत: आज की अनेक स्त्रियों के लिए यह स्त्री चरित्र बहुत प्रेरक हैं । सौतेली माँ से तंग आकर मेहनत और लगन से अपनी मंजिल हासिल करनेवाली स्त्री को यहां व्यक्त किया हैं ।

'चीलगाडी' - का अनाम चरित्र :

इस कहानी में एक अनाम स्त्री चरित्र का चित्रण हैं, उसका चेहरा अत्यंत कुरुप हैं। कोई अपरिचित व्यक्ति उसे देखकर भय से स्तब्ध रह जाता हो । बालों से भरा हुआ संकुचित ललाट और अंदर को धंसी हुई क्रूर आँखों को देखकर कोई भी डर जाता हैं । उसके विकराल गजदन्त और एक मुंडा हुआ सिर । हरिद्वार से लौटते समय वह अपना सिस मुंडाकर लौटती हैं । वैधव्य से उसका चेहरा और भी भयानक लगता हैं। इस प्रकार कुरुपता के कारण हीनता भाव से ग्रस्त यह स्त्री बहुत ही विकृत लगती हैं । ऐसी विकलांगता के बावजूद भी उसकी जीवटता तील भर भी कम नहीं होती ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

इस कहानी की अनाम स्त्री कुरुपता से कुण्ठित हैं । हीन भाव से ग्रस्त हैं । वह वैधव्य की स्थिति में गुजारा करती हैं । विकलांगता के बावजूद भी जीने की जीवटता अत्यंत दृढ़ हैं ।

'और और वृत्त' - महिप सिंह

मनोवैज्ञानिक ढंग से लिखि हुई यह कहानी हीनता ग्रन्थि का असर प्रस्तुत करती है। जब कभी किसी सुंदर वस्तु के सम्पर्क से मनुष्य का वक्त बहुत जल्दी कट जाता हैं। तब

मनुष्य को वह सुंदर वस्तु हमेशा अपने पास रखने का मोह निर्माण होता हैं । बिल्कुल इसके उल्टा किसी कुरुप वस्तु की समिपता बुरी लगती हैं और मनुष्य के मन में घृणा निर्माण होती हैं । अत: सौन्दर्य और कुरुपता का एक मंजर लेखक ने इस कहानी में चित्रित किया हैं । उसका असर किसी दुसरे व्यक्ति पर आवश्य पड़ता हैं ।

'और और वृत्त' - की अनाम स्त्री :

इस कहानी में एक अनाम स्त्री चरित्र हैं । वह शारीरिक रुप से कुरुप हैं । लेखक के शब्दों में यह अधेड़ आयु की हड्डियों का ढाँचा मात्र थी । रंग उसका बहुत काला तो नहीं था, पर ऐसा मटमैला था, जिसके सामने गहरा काला रंग अच्छा लगता हैं। आँखों पर पुराने फ्रेम का एक चश्मा और उसके पिछे छिपी आँखों से झांकती हुई एक बड़ी डरावनी सी कठोरता । आँखों की वह कठोरता सारे चेहरे पर बिखरी हुई थी। होंठ भिंचे हुए थे ।''[११४] इस चरित्र के संदर्भ में डॉ.मधुमती जैन ने कहा है, ''ऐसी कुरुपता के साथ और एक कुरुपता जुड़ी हुई थी उस के साथ साल-डेढ़ साल का बच्चा था जो प्यारी और सलोनी सुरत का एक गहरा मजाक था ।''[११५] कुरुप स्त्री की हीनता ग्रन्थि को प्रस्तुत करनेवाली यह कहानी हैं।

चारित्रिक विशेषताएँ :

अनाम स्त्री चरित्र कुरूपता के कारण हीनता ग्रन्थि से ग्रस्त हैं । वह समाज की घृणा और उपेक्षा सहती हैं । कुरुपता के बावजूद भी अपने आप में सुखी और संतुष्ट जान पड़ती हैं।

'हस्ती मिटती नहीं हमारी' - सुषमा मुनींद्र :

प्रस्तुत कहानी मे लेखक ने बाहय सुंदरता की अपेक्षा अन्तर्मन की सुंदरता की ओर संकेत किया हैं । कुरुपता को बाजू में रखकर अपने अस्तित्व और अधिकार के लिए झगड़नेवाली स्त्री को इस कहानी के द्वारा चित्रित किया हैं । अपने अधिकारों के लिए कानूनी रुप से जागृत स्त्री चरित्र आज की अनेक स्त्रियों के लिए प्रेरक हैं । जो स्त्रियाँ आज अपने अधिकार और हक्क से वंचित हैं । पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक समस्याओं का सामना कर अपनी विशेष पहचान तथा अलग हस्ती निर्माण करनेवाली कुरुप स्त्री को कहानीकार ने इस कहानी में प्रमुख स्थान दिया हैं । उसके द्वारा प्रेम की अभिव्यक्ति की हैं ।

'हस्ती मिटती नहीं हमारी' की अंबी :

इस कहानी की अंबी दिखने में अत्यंत कुरुप हैं । वह स्वयं की खामियों को जानती हैं । वह अपने चेहरों को टैल्कम पाउडर, भाल पर सुनहरी बिंदी और आँखों में अंजन लगाकर सुन्दर करने की चेष्टा करती है। वह शादी के प्रारंभिक दिनों में पति द्वारा भी बहिष्कृत की जाती है । वह एक बच्चे की माँ हैं । उसके चेहरे पर चेचक के दाग और पृथुल अधर जौ के रंगतवाली त्वचा भी उसकी कुरुपता दुरुस्त या कम नहीं कर पाती । वह अपनी कुरुपता के कारण हीनता भाव से त्रस्त हैं । वह कहती है, ''काली, बतावा आदमी मेहरिया के भाग-कुभाग से काहे जियत मरत हैं ? आदमी के भाग कछु नहीं होय ?''[११६] वह वैधव्य के बाद भी प्रतिकुल परिस्थितियों में साहसी और मजबूत बनी रहती हैं । वह हमेशा अपनी स्थिति को लेकर अस्वस्थ रहती हैं ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

अंबी दिखने में कुरुप होने के कारण हीनता ग्रन्थि से ग्रस्त चरित्र हैं । वह किसी भी मुसिबत का साहस से डटकर सामना करती हैं । वह अपने अधिकार और अस्तित्व के प्रति सजग हैं । परिवार और समाज का डटकर विरोध करनेवाली स्त्री हैं ।

४.३.२.२ काम अतृप्त चरित्र :

काम अतृप्त चरित्रों को काम विकृत चरित्रों की श्रेणी में रखा जाता हैं । ऐसे चरित्रों की तृष्टि नहीं होने की स्थिति में भी व्यक्ति के आचरण में विकृति नहीं होती क्योंकि वह काम तृप्ति के लिए विषमलिंगी व्यक्ति को ही साधन बनाता हैं । केवल उसके सम्बन्ध समाज से नहीं होते । वह अवैध रुप में काम तृप्ति का प्रयास करता हैं । फ्रायड का मत है कि, ''काम-प्रवृत्ति ही समस्त चेष्टांओ का उद्‌गम केन्द्र हैं । सभ्यता, संस्कृति और साहित्य का विकास तक काम प्रवृत्ति के अवरोध, रुपान्तरण (ट्रान्सफारमेन्शन) मार्गान्तरीकरण (रिग्रेशन) या उदात्तिकरण (सबलीमेशन) का परिणाम हैं ।''[११७] काम अतृप्तता से त्रस्त अनेक चरित्र अपना मानसिक संतुलन खो देते हैं । ऐसे अनेक चरित्र स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य में प्रस्तुत हुए हैं । इसलिए इनको सामान्य चरित्रों की कोटि में रखते हुए असामान्य चरित्र तथा मानसिक दृष्टि से विकलांग चरित्रों की कोटि में रखा जाता हैं ।

'पूर्ति' की तारा, 'अर्थ' की कुमुद आदि चरित्रों की काम अतृप्त अवस्था लेखकों ने उजागर की हैं । जिसका विवेचन यहाँ किया हैं ।

'पुर्ति' उषा प्रियंवदा -

'पूर्ति' कहानी के माध्यम से लेखिकाने शारीरिक विकालांगता से त्रस्त युवती की यौन अतृप्ति की तलाश व्यक्त की हैं । डॉ.विजया वारद जी का यह कथन यहाँ प्रस्तुत हैं, ''मम्मी के साथ जी रही तारा कुरुपता के कारण ही अविवाहित हैं ।''[११८] अकेलेपन के अहसास से अत्यंत दु:खी होकर विवाह की कमी को महसूस करती हैं । परन्तु किसी पुरुष के सम्पर्क में आकर जीवन की ओर देखने का उसका ढंग बदल जाता हैं । पलक झपकते उसकी पूरी दुनिया बदल जाती हैं । अकेलेपन की त्रासदी से तंग आई स्त्री को किसी पुरुष साथी से जीवन में आए हुए परिवर्तन को इस कहानी में लेखिका ने अभिव्यक्त किया हैं ।

'पूर्ति' की तारा :

तारा शारीरिक दृष्टि से विकलांग है । वह अपनी विकलांगता से अविवाहित रहकर अध्यापन का कार्य करती हैं । वह एक प्राध्यापिका हैं । उसके भीतर सभी स्वभाविक इच्छाएँ हैं । उसका अन्तर्मन उसे कहता है, मैं स्वतंत्र हूँ मेरे पास धन हैं...सुखी हूँ । पर वह जानती हैं कि यह सबकुछ होने के बावजूद भी उसके जीवन में एक बहुत बड़ा अभाव हैं । एक हुक सी हैं । जिसे वह बलपूर्वक अन्तराल में दबाये रखती हैं । जो कसक असावधान क्षणों में हृदय में सालने लगती है, जो कि आँधी पानी की रातों में उसकी आँखों में आँसू ला देती हैं । अपने अन्तर्मन की भावनाओं को व्यक्त करती हुई तारा कहती हैं कि, ''किसी को सब कुछ, किसी को कुछ नहीं । मुझे तो कुछ भी न मिला, न रूप, न सुख, न लाड़ न दुलार।''[११९] जबसे तारा को नलिन का साथ मिलता हैं, तो अचानक उसका जीवन की ओर देखने का नजरिया बदल जाता हैं । नलिन के स्पर्श और प्यार के कारण पलक झपकते ही तारा की दुनिया बदल जाती है । काम सुख के बाद वह खुद को अकेली नहीं समझती डॉ.विजया वारद जी ने इस चरित्र के संदर्भ में कहा हैं, ''स्त्री भले ही कितनी भी स्वावलंबी, आत्मनिर्भर तथा स्वतन्त्र हो परन्तु स्वाभाविक इच्छा की पूर्ति से वह अछूती नहीं रह सकती ।

अपनी इच्छाओं की पूर्ति कर लेना कामकाजी अविवाहित स्त्री को सहज सम्भव हैं, भले ही वह कुरुप हो।''[१२०]

चारित्रिक विशेषताएँ :

तारा विकलांगता के कारण अविवाहित चरित्र हैं । इसलिए काम अतृप्त हैं। आत्मनिर्भर परन्तु स्वभावगत इच्छाओं की कामना रखती हैं । वह दूसरों के प्रति स्नेहभाव रखती हैं । अविवाहित होने के कारण अकेलेपन का अहसास हैं ।

'अर्थ' दीप्ति खण्डेलवाल :

इस कहानी में लेखिका ने स्त्री मन की वेदना और अव्यक्त पीड़ा को व्यक्त किया हैं। स्त्री की अव्यक्त भावना और इच्छाशक्ति को केन्द्र में रखकर लिखी गई यह कहानी पाठक के मनपटल पर एक अलग छाप छोड़ती हैं । युवावस्था की भयावह बीमारी का शिकार बनने के कारण जिन्दगी में टूट जाती हैं । उसकी उदासीभरी जीवन कहानी और मन की टूटन लेखिका ने इस कहानी के माध्यम से व्यक्त की हैं । बीमारी की वजह से आयी हुयी शारीरिक खामियों को इस कहानी का मूल विषय बनाकर मानवी संबंधों को व्यक्त करने में लेखिका पूरी तरह से सफल हुई हैं ।

'अर्थ' की कुमुद :

इस कहानी की तीस वर्षीय कोमल कुमुद शीतला के प्रकोप से अपना सौंदर्य गंवा बैठती हैं । अर्थात् वह अत्यंत कुरुप दिखाई देती हैं । वह बीरु नामक युवक को चाहती हैं । परन्तु बीरु उसको देखने तक नहीं जाता । कुमुद के विकलांगता के भय से उसको पूरी तरह से भूल जाता हैं । वह ज्वर और पीड़ा की अचेत अवस्था में भी वीरेन्द्र का स्मरण करती हैं। परन्तु कुरुपता और सौन्दर्य हीनता की वजह से बीरु उसको धोखा देता हैं । कुमुद की मामी का यह वक्तव्य यहाँ प्रस्तुत हैं, ''देखा बिटियाँ, बीरु एक दिन देखने नहीं आया । अरे, मरा सोचता होगा, शीतला निकली हैं, कहीं कुमुद की आंख, नाक न बिगड जावें और तु उसके ध्यान में मरी जाती हैं ।''[१२१] प्यार में धोका मिलने के कारण कुमुद को एक अधेड़ के साथ अनचाहे ब्याह करना पड़ता हैं । जो आधी उम्र तक साथ नहीं निभा पाता । वह सुहागरात के दिन कुमुद को दुशाले से ढंकता हैं । अत: उसके शरीर को छूता तक नहीं इसलिए कुमुद

भी अतृप्त कामना से उदास भरी जिंदगी जी हैं । उसे हिरे का हार पहनाता हैं । लेकिन कुमुद सोचती हैं इस की जगह बीरू का एक कोमल आलींगन होता तो वह खुश होती ।

चारित्रिक विशेषताएँ :

कुमुद दिखने में कुरुप हैं । वह जन्मत: अनाथ हैं । शीतला की बीमारी में भी प्रेमी को चाहनेवाली स्त्री हैं । इतना ही नहीं तो समयानुसार स्वयं को ढालनेवाली स्त्री हैं। विकलांगता के कारण कुमुद काम अतृप्त चरित्र के रुप में चित्रित हैं ।

४.४ निष्कर्ष :

इस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी साहित्य में विकलांगों के विभिन्न भेद देखने को मिलते हैं । स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में विभिन्न प्रकार के विकलांग स्त्री, पुरुष बालक और वृध्द व्यक्तियों के चरित्रों का सृजन हिंदी साहित्यकारों ने किया हैं । प्रमुख रुप से शारीरिक और मानसिक बीमारी से विकलांग चरित्रों का चित्रण कहानीकारों ने किया हैं । उनकी विकलांगता की वजह को भी स्पष्ट किया है । साहित्यकारों ने जन्मजात, रोगजन्य, दुर्घटनाजन्य और वृध्दत्वजन्य विकलांगता को स्पष्ट किया हैं । शारीरिक विकलांगता के कारण विकलांग चरित्र मानसिक स्तर पर टूट जाते हैं । अंधत्व, गूंगापन, पोलियो, पक्षाघात, कुष्ठरोग, खसरा जैसी बीमारी के कारण हाथ, पैर, चेहरा आदि में विकृति निर्माण होती हैं । उनके मन में हीनता का भाव जन्म लेता हैं। कुण्ठा और आत्मपीड़ा की वजह से विकलांगों के मन के भाव भी पूरी तरह से बदलते हुए दिखाई देते हैं । दुर्घटनाजन्य विकलांगता के कारण हाथ, पैर, चेहरा जैसे महत्वपूर्ण भागों को गंवाना पड़ता हैं । जन्मजात विकलांगता और आकस्मिक आनेवाली विकलांगता के कारण व्यक्ति के मन में होनेवाला सूक्ष्म परिवर्तन भी स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानियों में विकलांग चरित्रों के रूप में व्यक्त हुआ है । बीमारी का शिकार बने विकलांगों को अपनी सम्पूर्ण जिन्दगी बिस्तर पर ही बीतानी पड़ती हैं । मानसिक रुप से विकलांग चरित्रों के सूक्ष्म मनोभावों को कुछ कहानीकारों ने अपनी कहानियों में व्यक्त किया हैं । उनकी मनोदशा का चित्रण मनोवैज्ञानिक धरातल पर किया हैं । अनेक विकलांग चरित्र विकलांगता पर मात करके अपनी मंजिल हासिल करने में कामयाब होते हुए नजर आते हैं तो कुछ विकलांग व्यसनाधिन होते हैं ।

संदर्भ सूची :

१) न्यू इंटरनॅशनल डिक्शनरी ऑफ इंग्लिश लँग्वेज - वेब्स्टर, पृ. ४६१

२) हिंदी उपन्यास में चरित्र-चित्रण का विकास - डॉ.रणवीर रांग्रा, पृ. २४

३) दि साइकलॉजी ऑफ करैक्टर - डॉ. रोबक, पृ. ५६८

४) विकलांग बालक : एक अध्ययन - डॉ. स्नेह आनंद, दो शब्द से

५) एबनार्मल साइकलोजी एण्ड माडर्न लाइफ, थर्ड एडी फाल्टी बायोलॉजीकल, डेव्हलपमेंट - जे.सी. कोलमन, पृ. १२७

६) साठोत्तरी हिंदी कहानी और महिला लेखिकाएँ - डॉ. वि. वारद, पृ. ९९

७) एक कोई दूसरा - उषा प्रियंवदा, पृ. १७१

८) विकलांग जीवन की कहानियाँ - सम्पा. गिरिराज शरण, पृ. १४६

९) वही, पृ. १५१

१०) वही, पृ. ५९

११) तिरिछ - उदय प्रकाश, पृ. ६९

१२) विकलांगता : समस्या और समाधान - गीता अग्रवाल, पृ. ३९

१३) कहानी कुंज - सम्पा. डॉ. उमाकान्त शास्त्री, पृ. १८४

१४) कथा साहित्य में विकलांग विमर्श - सम्पा. विनयकुमार पाठक, पृ. १२८

१५) विकलांगता समस्याएँ व समाधान - विनोदकुमार मिश्र, पृ. २३

१६) वही, पृ. ३१

१७) चार दिन की - शिवानी, पृ. ३५

१८) ममता कालिया के कथा साहित्य में नारी चेतना - डॉ. सानप श्याम, पृ. १२१

१९) कथा साहित्य में विकलांग विमर्श - डॉ. विनयकुमार पाठक, पृ. १०१

२०) फ्यूजीयामा - भगवानदास तिवारी, पृ. १९

२१) वही, पृ. २२

२२) विकलांगता : समस्या एवं समाधान - गीता अग्रवाल, पृ. ३३

२३) हंस - संपा. राजेंद्र यादव, फरवरी २०१०, पृ. ३३

२४) आठवें दशक के हिंदी उपन्यास का मनोवैज्ञानिक अध्ययन - डॉ. एम. वेंकटेश्वर, पृ. ५५-५६

२५) विकलांगता समस्याएँ व समाधान - विनोदकुमार मिश्र,पृ. २०

२६) विकलांगता समस्या और समाधान - गीता अग्रवाल, पृ. २८

२७) सौ श्रेष्ठ कहानियाँ - सम्पा. डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, पृ. २६३

२८) विकलांग जीवन की कहानियाँ - सम्पा. गिरिराज शरण,पृ. १२

२९) सलीब पर - दीप्ति खंडेलवाल, पृ. ६७

३०) वही, पृ. ६८

३१) कथाकार राजी सेठ - डॉ. मिरगणे अनुराधा, पृ. ९३

३२) यात्रामुक्त - राजी सेठ, पृ. ११२

३३) मेरी प्रिय कहानियाँ - कमलेश्वर, पृ. ६

३४) साहित्य अमृत - त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, अक्तूबर २०११, पृ. १४

३५) विकलांगता समस्याएँ व समाधान - विनोद कुमार मिश्र, पृ. २६-२७

३६) मेरी प्रिय कहानियाँ - कमलेश्वर, पृ. २२

३७) विकलांग विभूतीयों की जीवनगाथाएँ - विनोद कुमार मिश्र, पृ. ११

३८) साहित्य आभा - डॉ. वी.के. सिंह, जून २०१०, पृ. २२

३९) सूरज उगने तक - चन्द्रकांता, पृ. ८०

४०) वही, पृ. ७४

४१) चार दिन की - शिवानी, पृ. ५८

४२) वही, पृ. ६१

४३) विकलांगता समस्याएँ व समाधान - विनोद कुमार मिश्र, पृ. २१

४४) वही, पृ. २१

४५) कथा साहित्य में विकलांग विमर्श - डॉ. विनय कुमार पाठक, पृ. १०६

४६) विकलांग जीवन की कहानियाँ - सम्पा. गिरिराज शरण,पृ. १३४

४७) कथा साहित्य में विकलांग विमर्श - डॉ. विनय कुमार पाठक, पृ. १०४

४८) विकलांग जीवन की कहानियाँ - सम्पा. गिरिराज शरण,पृ. ७५

४९) कथा साहित्य में विकलांग विमर्श - डॉ. विनय कुमार पाठक, पृ. १०४

५०) चाँद और टूटे हुए लोग - धर्मवीर भारती, पृ. ३६

५१) कथा साहित्य में विकलांग विमर्श - डॉ. विनय कुमार पाठक, पृ. २८४

५२) साहित्य अमृत - सम्पा. त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, नवम्बर, २०१०, पृ. १२

५३) विकलांग जीवन की कहानियाँ - सम्पा. गिरिराज शरण,पृ. २५

५४) विकलांग विभूतीयों की जीवनगाथाएँ - विनोद कुमार मिश्र, पृ. ४२१

५५) एक घटना - मोहन राकेश, पृ. ८४

५६) सूर्यबाला के कथासाहित्य का अनुशीलन - डॉ. वसंत कुमार माळी, पृ. ९७

५७) विकलांग जीवन की कहानियाँ - सम्पा. गिरिराज शरण,पृ. १६९

५८) कथा साहित्य में विकलांग विमर्श - डॉ. विनय कुमार पाठक, पृ. १०३

५९) विकलांग जीवन की कहानियाँ - सम्पा. गिरिराज शरण,पृ. ४८

६०) सौ श्रेष्ठ कहानियाँ - सम्पा. डॉ. रोहिताश्व अस्थाना, पृ. २१८

६१) मेरी प्रिय कहानियाँ - मन्नू भंडारी, पृ. ३४

६२) वही, पृ. ३५

६३) ५१ कहानियाँ - महीप सिंह, पृ. ६९

६४) सलाखें - आनन्द कुरेशी, पृ. १२०

६५) मालती जोशी की कहानियाँ - मालती जोशी, पृ. ५८

६६) साहित्य अमृत - सम्पा. त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, दिसम्बर २०११, पृ. ५१

६७) विकलांगता समस्या और समाधान - गीता अग्रवाल, पृ. ५१

६८) कथान्तर - सम्पा. डॉ. परमानन्द श्रीवास्तव/ डॉ. श्रीमती गिरीश रस्तोगी, पृ. १७६-१७७

६९) कथा साहित्य में विकलांग विमर्श - डॉ. विनयकुमार पाठक, पृ. १२६

७०) धर्मवीर भारती के गद्य साहित्य में आधुनिक दृष्टि - डॉ. किशोर चौधरी, पृ. १९३

७१) आठवें दशक की हिंदी कहानी - डॉ. प्रतिभा धारासूरकर, पृ. १३५

७२) अंधे मोड से आगे - राजी सेठ, पृ. ३७

७३) राजी सेठ का रचना संसार - डॉ. स्नेहजा सोनाळे, पृ. १६६

७४) साहित्य अमृत - सम्पा. विद्यानिवास मिश्र, जुलाई, २००४, पृ. २१

७५) नेपाल की हिंदी कहानियाँ - सम्पा. डॉ. कामत कमलेश,पृ. ४३

७६) विकलांगता : समस्याएँ व समाधान - डॉ. विनोद कुमार मिश्र,पृ. १९

७७) आठवें दशक के हिंदी उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन - डॉ. एम. वेंकटेश्वर, पृ. ६५

७८) निशक्त चेतना - ३ - डॉ. विनयकुमार पाठक, पृ. ७२

७९) साहित्य अमृत - सम्पा. अलोकनाथ चतुर्वेदी, दिसंबर २००८, पृ. ५१

८०) विकलांग विभूतियों की जीवनगाथाएँ - विनोदकुमार मिश्र, पृ. ४२७

८१) आठवें दशक के हिंदी उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन - डॉ. एम. वेंकटेश्वर, पृ. ४९

८२) निशक्त चेतना - ३ - डॉ. विनय कुमार पाठक, पृ. १०३

८३) साहित्य अमृत - सम्पा. विद्यानिवास मिश्र, जुलाई, २००४, पृ. २०

८४) निशक्त चेतना - ३ - डॉ. विनय कुमार पाठक, पृ. १४७

८५) महीपसिंह की कहानी कला और समकालीन जीवन - डॉ हनुमंत शेवाळे, पृ. ५५

८६) डॉ. महीपसिंह की कहानियों में मानवीय सम्बन्ध - डॉ. मधुमती जैन, पृ. १३०

८७) आठवें दशक के हिंदी उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन - डॉ. एम. वेंकटेश्वर, पृ. ४९

८८) कथा साहित्य में विकलांग विमर्श - सम्पा. विनय कुमार पाठक, पृ. १०६

८९) विकलांग जीवन की कहानियाँ - सम्पा. गिरिराज शरण, पृ. १३१

९०) कथा साहित्य में विकलांग विमर्श - सम्पा. विनयकुमार पाठक, पृ. १०६

९१) वही, पृ. १०६-१०७

९२) विकलांग जीवन की कहानियाँ - सम्पा. गिरिराज शरण, पृ. १४०

९३) नासिरा शर्मा की कहानियाँ और नारी विमर्श - डॉ. सोनल नंदनूरवाले, पृ. १८९

९४) वही, पृ. १८८

९५) वही, पृ. १६२

९६) पत्थर गली - नासिरा शर्मा, पृ. ३१

९७) नासिरा शर्मा की कहानियाँ और नारी विमर्श - डॉ. सोनल नंदनूरवाले, पृ. १७०

९८) नासिरा शर्मा : व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व - डॉ विजय राऊत, पृ. ८५

९९) वही, पृ. ९८

१००) बाल भगवान - स्वदेश दीपक, हंस, जून १९८७, पृ. ५७

१०१) नवम दशक की कहानियों के पात्र - डॉ. शिवरतन मानधना, पृ. ५७

१०२) नीली घाटी में खुलती आँख - नरेश पंडित, हंस, अक्तूबर १९८९, पृ. ५५

१०३) नवम दशक की कहानियों के पात्र - डॉ. शिवरतन मानधना, पृ. १८६

१०४) वही, पृ. १५६

१०५) बाबा भूतनाथ - आभा दयाल, सारिका, १ मई, १९८५, पृ. ५८

१०६) वही, पृ. १५६

१०७) मायकल लोबो - गोविन्द मिश्र, सारिका, १ दिसम्बर, १९८५, पृ. ८

१०८) टेपचू - उदयप्रकाश, सारिका, १ अगस्त १९८१, पृ. २८

१०९) नवम दशक की कहानियों के पात्र - डॉ. शिवरतन मानधना, पृ. १४५

११०) खंडित स्वर - से.रा. यात्री, सारिका, १ नवम्बर १९८१, पृ. ३१

१११) तिरिछ और अन्य कहानियाँ - उदय प्रकाश, पृ. १३०

११२) नवम दशक की कहानियों के पात्र - डॉ. शिवरतन मानधना, पृ. १९८

११३) आठवें दशक के हिंदी उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन - डॉ. एम. वेंकटेश्वर, पृ. ४७

११४) ५१ कहानियाँ - महीप सिंह, पृ. ८१

११५) महीपसिंह की कहानियों में मानवीय संबंध - डॉ. मधुमती जैन, पृ. १८०

११६) साहित्य अमृत - सम्पा. त्रिलोकीनाथ चतुर्वेदी, मार्च २००८, पृ. ५१

११७) हिंदी उपन्यासों के असामान्य चरित्र - डॉ. सुजाता, पृ. १४४

११८) साठोत्तरी हिंदी कहानी और महिला लेखिकाएँ - डॉ. विजया वारद, पृ. ४१

११९) जिंदगी और गुलाब के फूल - उषा प्रियंवदा, पृ. ६५

१२०) साठोत्तरी हिंदी कहानी और महिला लेखिकाएँ - डॉ. विजया वारद, पृ. ४२

१२१) नारी मन - दीप्ति खंडेलवाल, पृ. ०५